चीन को देना होगा मुंहतोड़ जवाब
तिब्बत और ताइवान को मानें अलग राष्ट्र

अपरिहार्य है 'एक देश-एक चुनाव'
सरपट दौड़ेगी देश के विकास की नाव

सितम्बर-2023 | वर्ष : 14 | अंक : 09

₹25/-

वयं राष्ट्रे जाग्रयाम पुरोहिताः
इदं राष्ट्राय इदं न मम
लोक भारती

लोक सम्मान

चंद्रमा पर कदम, सूरज पर निगाह
विश्व बना भारत की मेधाशक्ति का गवाह

सबको शिक्षा उत्तम शिक्षा

स्कूल चलो अभियान में 1.92 करोड़ से अधिक छात्र-छात्राओं का नामांकन

ऑपरेशन कायाकल्प के तहत 1.40 लाख से अधिक

प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अवस्थापना सुविधाओं का विकास

आजमगढ़, अलीगढ़ एवं सहारनपुर में राज्य विश्वविद्यालय की स्थापना

लखनऊ में उत्तर प्रदेश स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेंसिक साइंस का निर्माण

280 नवीन राजकीय इंटर कॉलेज एवं हाईस्कूल का संचालन
60 नवीन इंटर कॉलेजों की स्वीकृति

41 नए इंटर कॉलेज, 215 राजकीय हाईस्कूल एवं
77 बालिका छात्रावासों के भवन निर्मित

असेवित क्षेत्रों में 39 नवीन हाईस्कूल एवं 14 नवीन इंटर कॉलेजों का निर्माण

स्टार्टअप नीति के तहत 15 इन्क्यूबेशन सेंटर की स्थापना

22 निजी विश्वविद्यालयों की स्थापना हेतु आशय पत्र निर्गत

119 राजकीय महाविद्यालयों में ई-लर्निंग पार्क का विकास

78 नए राजकीय महाविद्यालयों का निर्माण गतिमान

87 राजकीय महाविद्यालयों में स्मार्ट क्लासेस की व्यवस्था

प्रयागराज में राजेंद्र प्रसाद विधि विश्वविद्यालय का निर्माण गतिमान

मेरठ में मेजर ध्यानचंद खेल विश्वविद्यालय का निर्माण गतिमान

कुशीनगर में महात्मा बुद्ध कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
की स्थापना का निर्णय

विंध्याचल, देवीपाटन एवं मुरादाबाद मंडल में
राज्य विश्वविद्यालय की स्थापना का निर्णय

सबको शिक्षा का अधिकार - डबल इंजन की सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

RNI No. UPHIN/2007/22341

समग्र विकास को समर्पित

लोक सम्मान

लोक भारती की मासिक पत्रिका

वर्ष : 17 अंक : 09 सितम्बर, 2023, मूल्य ₹25/-

संरक्षक

मा. दत्तात्रेय होसबाले, डॉ. कृष्ण गोपाल जी, मा. मधुभाई कुलकर्णी, डॉ. दिनेश कुमार, मा. ब्रजेन्द्र पाल सिंह, मा. अनिल जी

परामर्श मण्डल

रामशरण, प्रो. अम्बिका प्रसाद तिवारी, विश्वनाथ खेमका, डॉ. विजय कर्ण, गोपाल उपाध्याय, डॉ. विशेष गुप्ता, अजय प्रकाश

सम्पादक

शशि प्रकाश राय

प्रबन्ध सम्पादक

धर्मेन्द्र सिंह

कार्यकारी सम्पादक

श्रीकृष्ण चौधरी

समाचार एवं विज्ञापन समन्वयक

निधिता राय

सम्पादक-मण्डल

डॉ. ओम प्रकाश सिंह, डॉ. सुरेशपति त्रिपाठी, डॉ. नवलता, डॉ. सुरचना त्रिवेदी

ग्राफिक्स डिजाइन : कुमार सर्वेश

संपादकीय कार्यालय

लोक भारती 1, चौपड़ अस्पताल परिसर नवल किशोर रोड, हजरतगंज, लखनऊ - 226001

मो० : 9415018456

: www.loksamman.in

: loksamman@yahoo.co.in

मुद्रक एवं प्रकाशक प्रेमशंकर शुक्ल द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, राजेन्द्र नगर, लखनऊ, उ.प्र.-226004 से मुद्रित एवं लोक भारती, 1 - चौपड़ अस्पताल परिसर नवल किशोर रोड, हजरतगंज, लखनऊ-226001 से प्रकाशित।

नोट : किसी भी विवाद के निस्तारण का न्यायक्षेत्र लखनऊ होगा।

सभी पद अवैतनिक हैं।

06

चंद्रमा पर कदम, सूरज पर निगाह
विश्व बना भारत की मेधाशक्ति का गवाह

04

यूरिया युक्त हरे चारे ने ली गायों की जान
कहीं हमारा खाना ही हमें खा न जाए

12

पंच तत्व का महत्व
इनके संतुलन में निहित सुखी जीवन का रहस्य

22

लोक भारती का मार्गदर्शन, सरकार का सहयोग 'मां तमसा गौशाला' गौ संरक्षण का अनुपम प्रयोग

18

जलवायु परिवर्तन से खतरे में वैश्विक खाद्य सुरक्षा
मोटे अनाज से होगी प्राण और पोषण की रक्षा

36

चीन को देना होगा मुंहतोड़ जवाब
तिब्बत और ताइवान को मानें अलग राष्ट्र

शशि प्रकाश राय

यूरिया युक्त हरे चारे ने ली गायों की जान

कहीं हमारा खाना ही हमें खा न जाए

लखनऊ के मोहनलालगंज के कमालपुर विचलिका गोआश्रय स्थल पर 13 गोवंशों की मौत का मामला सामने आया। कारणों की जांच के लिए गौवंशो के पोस्टमॉर्टम की बिसरा रिपोर्ट रायबरेली भेजी गई। जिसमें पाया गया कि गोवंशों की मौत का कारण रासायनिक पदार्थ नाइट्रेट और नाइट्राइट विष है जिसके कारण पशुओं की मौत हुई है। ये विषाक्त पदार्थ चारे के खेत में यूरिया के अधिक प्रयोग से चरी में एकत्र हो जाते हैं

पिछले दिनों उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के मोहनलालगंज के कमालपुर विचलिका गोआश्रय स्थल पर १३ गोवंशों की मौत का मामला सामने आया। कारणों की जांच के लिए गौवंशो के पोस्टमार्टम की बिसरा रिपोर्ट रायबरेली भेजी गई। जिसमें पाया गया कि गोवंशों की मौत का कारण रासायनिक पदार्थ नाइट्रेट और नाइट्राइट विष है जिसके कारण पशुओं की मौत हुई है। यह भी पता चला कि ये विषाक्त पदार्थ चारे के खेत में यूरिया के अधिक प्रयोग से चरी में एकत्र हो जाते हैं। यह चारा खाने से गायों को सांस लेने में दिक्कत होने लगती है और फिर उनकी असामयिक मृत्यु का खतरा उत्पन्न हो जाता है। इस घटना ने एक बार फिर हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर आकृष्ट किया है कि रासायनिक खाद-कीटनाशक का प्रयोग प्रकृति एवं प्राणिजगत के अस्तित्व के लिए कितना विनाशकारी हो रहा है। जिन रासायनिक उर्वरकों के दुष्प्रभाव को गाय नहीं झेल पा रही है, मानव शरीर की उसके आगे बिसात ही क्या है! विचारणीय है कि ऐसे रसायनों से युक्त चारे को खाने वाले दुधारू जानवरों से प्राप्त दूध मानव स्वास्थ्य के लिए कितना प्राणघातक होगा।

विकास के नाम पर कई ऐसे चलन प्रचलन में हैं जिनका पर्यावरण पर अत्यंत घातक प्रभाव पड़ रहा है। रासायनिक खेती इनमें प्रमुख है। अधिक उत्पादन पाने और लाभ कमाने की मृग-मरीचिका के कारण हमारे खेतों में दशकों से जारी रासायनिक उवरकों-कीटनाशकों के अत्यधिक या कहें कि अंधाधुंध प्रयोग से दिन-प्रतिदिन प्राकृतिक परिवेश में रसायनों की मात्रा बढ़ रही है। खेती में कई ऐसे घातक कीटनाशक प्रयोग किए जा रहे हैं जो विष से कम नहीं हैं। यही कारण है कि हमारे खाद्य पदार्थ जहरीले होते जा रहे हैं। हमारे शरीर में खाने के साथ ही बड़ी मात्रा में कीटनाशक दवाइयों का अंश जहर के रूप में जा रहा है। ये जहरीले रसायन हमारे शरीर में जाकर कोशिकाओं में धीरे-धीरे जमा होते रहते हैं और फिर कैंसर, शुगर और हाइपरटेंशन जैसी खतरनाक बीमारियों को जन्म देते हैं।

यह रासायनिक जहर फल और सब्जियों में सबसे अधिक पाया जाता है। दुधारू पशु भी इसके दुष्प्रभाव के शिकार हो चुके हैं। उनके चारे में भी जहरीले रसायनों के प्रयोग से इनसे प्राप्त होने वाला दूध भी अब सुरक्षित नहीं है। २०१७-१८ में देश भर की २७ प्रयोगशालाओं में सब्जी, फल, मसाले, चावल गेहूं, दालें, दूध, मांस, मछली आदि के २३६६० नमूनों की

जांच की गई। इसमें लगभग २५ प्रतिशत नमूनों में खतरनाक रसायनों के अंश पाए गए।

स्थिति में बदलाव के लिये आवष्यक है कि किसानों को रासायनिक खेती के विनाशकारी दुष्प्रभावों के बारे में युद्धस्तर पर जागरूक किया जाए। किसानों के हाथों से ही हमारे खेतों में रासायनिक जहर डाला जाता है जो अंततः हमारे शरीर में भी पहुंचता है और उसे बीमार बनाता है, लेकिन वे नीति-नियंता और वैज्ञानिक भी अपनी जिम्मेदारी और जवाबदेही से नहीं बच सकते जिन्होंने किसानों के मन में यह बात बिठा दी कि यदि खेती को लाभकारी बनाना है तो रासायनिक खाद-उर्वरक का प्रयोग करना ही होगा। दूसरी तरफ ऐसे अनेक किसान वर्तमान में हमारे बीच प्रेरक के रूप में उपस्थित हैं जिन्होंने रासायनिक खेती को त्याग कर गाय आधारित प्राकृतिक खेती को अपनाया और इसके माध्यम से न केवल अपनी आर्थिक स्थिति बेहतर की बल्कि उपभोक्ताओं को स्वास्थ्यवर्धक दूध, फल, सब्जी और खाद्यान्न उपलब्ध करा रहे हैं।

अब यह बात साबित हो चुकी है कि रासायनिक कृषि के परिणाम से न केवल उपज जहरीली हुई है, बल्कि आसपास का जल, वायु और जमीन भी प्रदूषण के शिकार हो चुके हैं। परंतु देश में किसानों का एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसा भी तैयार हो चुका है जो अपनी मिट्टी और उपभोक्ता के सेहत की चिंता भी करता है और प्राकृतिक कृषि के द्वारा अपने खेत से मिलने वाली उपज विषमुक्त हो, इसके लिए संकल्पित है। प्राकृतिक कृषि में फसल के पोषण और कीटनियंत्रण के लिए किसी प्रकार का कोई रसायन प्रयोग नहीं किया जाता। इस विधि में देशी गाय के गोबर, गोमूत्र आदि का ही प्रयोग किया जाता है और इनसे निर्मित जीवामृत जैसे द्रव्यों के प्रयोग से खेत की मिट्टी में करोड़ों सूक्ष्म जीवाणु कार्य करने लगते हैं और इससे तैयार फसल रोगमुक्त

तो होती ही है, स्वास्थ्यवर्धक भी होती है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक कृषक देशी बीजों का प्रयोग करते हैं। इन बीजों से प्राप्त उपज में प्रकृति

कोरोना ने हमें समझा दिया है कि प्रकृति का साहचर्य ही स्वस्थ जीवन प्रदान कर सकता है। प्रयोगशालाओं में तैयार बीज, खाद और कीटनाशकों द्वारा उपजाए गए खाद्य पदार्थों का उपयोग यदि हमने जारी रखा, तो वे हमारे शरीर को भी चलती-फिरती प्रयोगशाला बना देंगे। यह वर्तमान में होता नजर भी आ रहा है। यदि कोरोना और ऐसी अन्य बीमारियों से बचाव का सर्वोत्तम उपाय इम्युनिटी बढ़ाना ही है, तो रासायनिक खेती से तैयार खाद्यान्न तो इसमें सहायक नहीं बन सकते

द्वारा निर्धारित अनुपात में पोषक तत्व मौजूद होते हैं जो हमारे शरीर को रोगमुक्त, पुष्ट और बलवान बनाते हैं।

कोरोना ने हमें समझा दिया है कि प्रकृति का साहचर्य ही स्वस्थ जीवन प्रदान कर सकता है। प्रयोगशालाओं में तैयार बीज, खाद और कीटनाशकों द्वारा उपजाए गए खाद्य पदार्थों का उपयोग यदि हमने जारी रखा, तो वे हमारे शरीर को भी चलती-फिरती प्रयोगशाला बना देंगे। यह वर्तमान में होता नजर भी आ रहा है। यदि कोरोना और ऐसी अन्य बीमारियों से बचाव का सर्वोत्तम उपाय इम्युनिटी बढ़ाना ही है, तो रासायनिक खेती से तैयार खाद्यान्न तो इसमें सहायक नहीं बन सकते। अतः समय आ गया कि अपने आसपास मौजूद किसी प्राकृतिक कृषक को खोजें और उसे अपना फैमिली फार्मर बनाएं। ऐसा करने पर आपको संभवतः फैमिली डॉक्टर की जरूरत नहीं पड़ेगी। प्राकृतिक खेती के द्वारा उपजाए खाद्य पदार्थो से ही स्वस्थ और सबल भारत का निर्माण संभव है। यह बात हमें खुद समझने के साथ-साथ अधिकाधिक लोगों को समझानी होगी। सरकार भी इस दिशा में प्रयासरत है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देष में किसानों को प्राकृतिक कृषि अपनाने हेतु प्रोत्साहित करने के साथ ही रासायनिक खाद-उर्वरक का उपयोग घटाने का प्रयास भी किया जा रहा है। इस क्रम में उत्तर प्रदेश सरकार ने भी इस वर्ष रासायनिक उर्वरक की खपत में लगभग ४ प्रतिशत की कमी लाने का लक्ष्य रखा है। लेकिन नित बढ़ते जा रहे इस संकट से बचाव के लिए केवल सरकारी ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्तर पर असरकार अभियान चलाने और उसे निरंतर गति देने की आवश्यकता है। तभी हमारी आने वाली पीढ़ियां वर्तमान में प्रचलित बीमारियों से बचाव के साथ ही किसी महामारी का सामना करने के लिए तैयार रह सकेंगी।■

चंद्रमा पर कदम, सूरज पर निगाह
विश्व बना भारत की मेधाशक्ति का गवाह

धर्मेन्द्र सिंह
प्रबंध सम्पादक

एक पखवाड़े के भीतर पहले चंद्रयान-३ की चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर मानव इतिहास की पहली सफल लैंडिग और उसके बाद आदित्य एल-१ के सफल प्रक्षेपण ने विश्व भर में भारत को गौरवान्वित किया है। इस सफलता ने देश के आम नागरिक से लेकर उच्चतम पदों पर आसीन भारतीयों तक, गर्व की अनुभूति कराई है। यहां तक कि विदेशों में बसे भारतीय तक यह बताते हुए आनंदित हैं कि भारतीय होने की जानकारी मिलने के उपरांत राह चलते लोग उन्हें रोक-रोक कर मातृभूमि की इस सफलता की बधाइयां दे रहे हैं। चंद्रमा पर 'शिव शक्ति प्वाइंट' आज देश के लिए जाना-पहचाना नाम बन गया है। लेकिन इस प्रेरक और सकारात्मक वातावरण में देश और विदेश में एक ऐसा वर्ग भी है जिसे भारतीय मेधा शक्ति की यह सफलता पच नहीं रही। ऐसे में उनके द्वारा इस या उस बहाने से इस उपलब्धि को कमतर दिखाने के स्वांग रचे जा रहे हैं। भारत में मौजूद इस तबके ने चंद्रयान-३ की सफलता के उपरांत अपना एजेंडा यह कह कर फैलाना शुरू किया कि यह उपलब्धि सनातन आस्था एवं मंदिर जाने की प्रवृत्ति के बजाए शिक्षा, वैज्ञानिकता और प्रगतिशीलता के जरिए अर्जित की गई है। कुल मिलाकर उन्हें यह सिद्ध करना था कि भारतीय आस्था और सनातन ज्ञान परंपरा प्रतिगामी होती है और ऐसी उपलब्धियों की राह में रुकावट हैं। यह एजेंडा अभी परवान चढ़ पाता, इससे पहले ही इसरो अध्यक्ष एस. सोमनाथ के ऐसे बयान वायरल होने लगे जिन्होंने एजेंडाबाजों का मंशा को ध्वस्त कर दिया।

> “ लेकिनसदियों तक चले गुलामी काल में हमारे अर्जित ज्ञान को छीन और कुचल दिया गया और पीढ़ी दर पीढ़ी हमारे मन-मस्तिश्क में यह बात बिठाने की कोशिश की गई कि आक्रमणकारियों के आने से पहले भारत अज्ञान के अंधेरे में डूबा हुआ था

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष एस सोमनाथ ने कुछ ही दिन पूर्व एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा था कि भारत वैदिक काल से ही एक ज्ञानी समाज था जिसमें संस्कृत की भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि वेदों में गणित, चिकित्सा, तत्व विज्ञान, खगोल विज्ञान आदि विषय शामिल थे जो संस्कृत में लिखे गए थे। उन्होंने कहा कि ऐसी सभी शिक्षाएं देश में कई हजार साल बाद 'पश्चिमी वैज्ञानिकों द्वारा की गई खोजों' के रूप में वापस आईं।सोमनाथ ने महर्षि पाणिनि संस्कृत और वैदिक विश्वविद्यालय के चौथे दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि संस्कृत दुनिया की सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक है जिसमें कविता, तर्क, व्याकरण, दर्शन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, गणित और अन्य संबद्ध विषय शामिल हैं। उन्होंने यह भी बताया कि सूर्य सिद्धांत सबसे पहली किताब है जो मैंने संस्कृत में देखी। यह उस विषय के बारे में है

जिससे मैं परिचित हूं। यह किताब विशेष तौर पर सौर प्रणाली के बारे में है कि कैसे ग्रह सूर्य के चारों और घूमते हैं, इसकी गति की अवधि, घटनाओं से संबंधित समय आदि विवरण भी उल्लिखित हैं। सोमनाथ ने कहा कि यह सारा ज्ञान भारत से चला, अरब पहुंचा, फिर यूरोप गया और हजारों साल बाद महान पश्चिम वैज्ञानिक खोज के रुप में हमारे पास वापस आया। हालांकि, यह सारा ज्ञान यहां संस्कृत भाषा में लिखा गया था। इसरो प्रमुख ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग के क्षेत्र में काम करने वालों को संस्कृत से प्यार है और यह देखने के लिए बहुत सारे शोध चल रहे हैं कि कंप्यूटिंग और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण के लिए इसका उपयोग कैसे किया जा सकता है।

इसरो अध्यक्ष सोमनाथ द्वारा वेदों में साइंस होने की बात कहने मात्र से कथित बुद्धिजीवियों में खलबली मची है। प्रायः तथाकथित वैज्ञानिक मानसिकता वाले प्रगतिशील लोगों का दशकों से तर्क रहा है कि यदि प्राचीन भारत ज्ञान और तकनीक के मामले में विश्वगुरु था तो पिछले एक हजार सालों या आधुनिक युग में भारत के नाम पर कोई आविष्कार या खोज क्यों नही है। ऐसा कहकर वे उसी झूठ को स्थापित करने की कोषिश करते हैं कि भारत संपेरों और जादूगरों का देश था। इस काम के लिए बाहर बैठे उनके आका उन्हें अच्छी खासी रकम भी देते हैं।

यदि गुलामीजनित मानसिकता से मुक्त होकर देखें तो वास्तविकता यह है कि वस्त्र निर्माण, धातुकर्म, पर्यावरण, खानपान, सौंदर्य बोध, साहित्य, भाषा, लोकतंत्र, भूगोल, आयुर्वेद,वास्तुकला से लेकर गणित और अंतरिक्ष की गणनाओं से लेकर दर्शन की विधियों तक प्रवर्तन इसी भारतीय पुण्य धरा पर हुआ।लेकिनसदियों तक चले गुलामी काल में हमारे अर्जित ज्ञान को छीन और कुचल दिया गया और पीढ़ी दर पीढ़ी हमारे मन-मस्तिष्क में यह बात बिठाने की कोशिश की गई कि आक्रमणकारियों के आने से पहले भारत अज्ञान के अंधेरे में छूबा हुआ था।

देश और विदेश में एक ऐसा वर्ग भी है जिसे भारतीय मेधा शक्ति की यह सफलता पच नहीं रही। ऐसे में उनके द्वारा इस या उस बहाने से इस उपलब्धि को कमतर दिखाने के स्वांग रचे जा रहे हैं। भारत में मौजूद इस तबके ने चंद्रयान-3 की सफलता के उपरांत अपना एजेंडा यह कह कर फैलाना शुरू किया कि यह उपलब्धि सनातन आस्था एवं मंदिर जाने की प्रवृत्ति के बजाए शिक्षा, वैज्ञानिकता और प्रगतिशीलता के जरिए अर्जित की गई है। कुल मिलाकर उन्हें यह सिद्ध करना था कि भारतीय आस्था और सनातन ज्ञान परंपरा प्रतिगामी होती है और ऐसी उपलब्धियों की राह में रुकावट हैं। यह एजेंडा अभी परवान चढ़ पाता, इससे पहले ही इसरो अध्यक्ष एस. सोमनाथ के ऐसे बयान वायरल होने लगे जिन्होंने एजेंडाबाजों का मंशा को ध्वस्त कर दिया

वर्तमान में विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में पश्चिमी देश सर्वेसर्वा बने हुए हैं तो इसका बड़ा कारण हमारी गुलामी रही है। आज जब वर्तमान सरकार ने पश्चिम की गुलामी से निकल रही है और भारत फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो रहा है तो उसका परिणाम यह हुआ कि हमने असाध्य और विकराल माने जाने वाले रोग कोरोना का टीका न केवल बना ही लिया बल्कि पूरे विश्व को उपलब्ध कराया रहे। चांद पर पहुंच गए, पानी खोज लिया, यूपीआई बना लिया पर विडंबना यह किकुछ भारतीय अब भी ऐसे हैं जो भारत की उपलब्धियों पर तब तक विश्वास नहीं करते जब तक कि पश्चिम उस पर अपनी मुहर न लगा दे। भारत के वैज्ञानिकों और दार्शनिकों को इतना दबा सता के रखा गया कि उन्हें हर बात पर पश्चिम की अनुमति लेनी पड़ती थी। आज उसके हम कुछ उदाहरण देखते हैं।

१८९६ में महान वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बोस ने एक पेपर रॉयल सोसायटी में प्रकाशित करवाया जो वायरलेस आविष्कार 'मर्क्युरी कोहेनन विद टेलीफोन डिटेक्टर' की तकनीक पर आधारित था लेकिन उसी पेपर के आधार पर मार्कोनी ने रेडियो का पेटेंट करा लिया और बोस को उपनिवेश का सदस्य होने के नाते इसका श्रेय नहीं दिया गया। जब बोस ने इस बात पर आपत्ति की तो उनकी डायरी, पेपर्स दस्तावेज सब गुम करवा दिए गए। रॉयल सोसाइटी के पास भी बोस के आविष्कार की जानकारी थी किन्तु आंतरिक राजनीति के चलते कोई भी भारतीय वैज्ञानिक के पक्ष में खड़ा नहीं हुआ।

इसी तरह सत्येंद्र नाथ बोस ने क्वांटम थ्योरी पर एक पेपर लिखा जिसे भारत में कोई प्रकाशित ही नहीं करना चाहता था। लेकिन भारतीय मेधा के प्रति ईर्ष्या और जलन इतनी थी कि राजनीतिक दबाव डलवा कर बोस को विज्ञान से इतर काम करने को कहा जाने लगा। बोस ने अंत मे वह पेपर आइंस्टाइन को भेज दिया। आइंस्टाइन ने उस पेपर में लिखे सिद्धांतों की तारीफ तो की और बोस-आइंस्टाइन थ्योरी भी गढी, पर सापेक्षता के सिद्धांत में उसका प्रयोग करते समय बोस को उनके श्रेय से वंचित कर दिया।

शिवकर बापूजी तलपड़े का नाम भी इस कड़ी में लिया जा सकता है जिन्होंने भारद्वाज वैमानिकी शास्त्र के सहारे 'मरुत्सखा' नामक विमान १८९५ में बनाया और उड़ाया भी, किन्तु उनकी चर्चा का एक अक्षर हमें किताबों में नही पढ़ाया गया क्योंकि वह असफल थे या उन्हें असफल कर दिया गया था क्योंकि बापूजी एक गुलाम देश के नागरिक थे।

ये उदाहरण यह बताने को पर्याप्त हैं कि भारतीय मेधा को किस तरह अवरुद्ध किया गया। उपनिवेशवादी शक्तियाँ आज भी यही करने का प्रयास कर रही हैं किंतु वर्तमान सरकार की इच्छाशक्ति प्रशंसा के योग्य है जिसने वैज्ञानिकों के मान और सुरक्षा को प्राथमिकता दी वरना नम्बी नारायण का उदाहरण हमारे सामने है।चंद्रयान-३

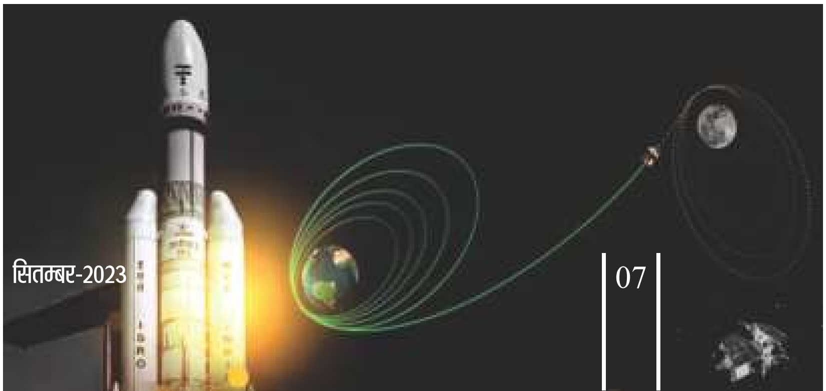

पहले

अब

की सफलता पर नंबी नारायणन ने कहा कि हमने जो हासिल किया है वह अविश्वसनीय है। चंद्रयान-२ की विफलता पर ध्यान दिया गया, सुधारा गया और नतीजा हमारे सामने हैं। यह सुखद संयोग है कि चांद पर विक्रम लैंडर के उतरने के ठीक बाद राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों की घोषणा हुई जिसमें 'रॉकेट्रीः द नांबी इफेक्ट' को सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के रूप में सम्मानित किया गया जो नंबी नारायणन के जीवन पर बनी है।

भारत की राह में अड़ंगा लगाने के लिए कैसी-कैसी साजिशें रची गईं, नंबी नारायणन उसके भुक्तभोगी उदाहरण हैं। उन पर जासूसी का आरोप लगा था। अगर आपने रॉकेट्री फिल्म देखी होगी तो महसूस किया होगा कि कैसे इसरो का साइंटिस्ट जासूसी के झूठे आरोप में फंसता चला जाता है। दरअसल, १९९४ में अक्टूबर के महीने में मालदीव की मरियम राशिदा को तिरुवनंतपुरम से गिरफ्तार किया गया। उस पर आरोप था कि उसने स्वदेशी क्रायोजेनिक इंजन की खुफिया जानकारी पाकिस्तान को बेची थी। अगले महीने क्रायोजेनिक प्रोजेक्ट के डायरेक्टर नंबी नारायण और दो अन्य वैज्ञानिकों को गिरफ्तार कर लिया गया। इन पर इसरो के रॉकेट इंजन की गुप्त जानकारी पाकिस्तान को देने के गंभीर आरोप लगे। आईबी पूछती रही और नारायणन आरोपों से इनकार करते रहे। अगले महीने यानी दिसंबर १९९४ में केस सीबीआई के पास पहुंच गया। अदालत ने पाया कि आईबी और केरल पुलिस के आरोप सही नहीं हैं। सीजेएम कोर्ट में कहा गया कि

> **जब चंद्रयान की सफलता के बाद ब्रिटेन से आवाज उठी कि भारत को दी जा रही वित्तीय सहायता बंद कर दी जानी चाहिए। भारतीयों ने त्वरित जवाब देकर अंग्रेजों का मुंह बंद कर दिया कि 200 सालों में भारत से लगभग 45 ट्रिलियन डॉलर की जो लूट की गई, पहले उसे तो वापस कर दो। पहले एक समय था जब ऐसे अवसरों पर भारतीय खामोश रह जाया करते थे**

मामला फर्जी है और कोई सबूत नहीं मिले हैं। सभी छूट गए लेकिन केरल की नई सरकार बनी तो फिर से जांच के आदेश दे दिए गए। १९९८ में सुप्रीम कोर्ट ने इस आदेश को ही रद्द कर दिया। १९९९ में जब नारायण ने मुआवजे के लिए याचिका लगाई और उनके पक्ष में आदेश आया तो केरल सरकार ने इसे चुनौती दी। हाई कोर्ट के कहने पर २०१२ में १० लाख रुपये देने के आदेश हुए। पुलिसवालों के खिलाफ भी मामला चला।आखिरकार सितंबर २०१८ में इसरो के पूर्व वैज्ञानिक नंबी नारायण पूरी तरह बेदाग निकले। १४ सितंबर को सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि साइंटिस्ट नारायणन को केरल पुलिस ने बेवजह अरेस्ट किया और मानसिक प्रताड़ना दी। साइंटिस्ट को ५० लाख रुपये का मुआवजा देने का भी आदेश आया। नंबी ने इसरो में अपने कार्यकाल के दौरान रॉकेट इंजन को बनाने में अहम भूमिका निभाई थी। वह एयरोस्पेस इंजीनियर थे। आज पूरा देश उनके योगदान को समझता है और उन्हें सम्मान की नजरों से देखता है। २०१९ में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।नंबी नारायणन उस टीम के मुखिया थे जिसने क्रायोजेनिक टेक्नॉलजी विकसित की थी। उसी की मदद से चंद्रयान आसमान को नापने जा रहा था।

समय परिवर्तनशील होता है। यह भारत का समय है। गुलामी काल तो कई दशक पहले समाप्त हो गया, लेकिन गुलामीजनित मानसिकता को समाप्त होने में कुछ और समय लगा है। जैसी गुलामी आते-आते आई थी, ऐसे ही जाते-जाते जा रही है। सूचना के इस युग में ज्ञान से लैस भारत अपनी विरासत को खंगाल रहा है और नित नए अनुसंधान भी कर रहा है। साथ ही मुखरता से अंध-आलोचकों को जवाब दे रहा है। इसी का उदाहरण दिखा जब चंद्रयान की सफलता के बाद ब्रिटेन से आवाज उठी कि भारत को दी जा रही वित्तीय सहायता बंद कर दी जानी चाहिए। भारतीयों ने त्वरित जवाब देकर अंग्रेजों का मुंह बंद कर दिया कि २०० सालों में भारत से लगभग ४५ ट्रिलियन डॉलर की जो लूट की गई, पहले उसे तो वापस कर दो। पहले एक समय था जब ऐसे अवसरों पर भारतीय खामोश रह जाया करते थे। जबकि आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त आदि द्वारा अर्जित ज्ञान को पश्चिमी वैज्ञानिक ओपेनहाइमर से लेकर कार्ल सैगन तक और आइंस्टाइन से लेकर निकोलस टेस्ला तक अपने लिये पथप्रदर्शक मानते रहे। वर्तमान की सबसे अच्छी बात यह भी है कि हमारी वैज्ञानिक उपलब्धियों को हासिल करने में भारत की नारीशक्ति ने बराबर योगदान दिया है। अब भारत और इसरो की दृष्टि गगनयान की ओर है। यह सिलसिला अब रुकने वाला नहीं है।■

विज्ञापन

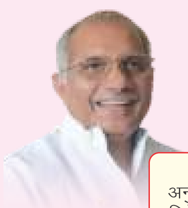

उत्तर प्रदेश पशुधन विकास परिषद संक्षिप्त परिचय

भारत सरकार की ''राष्ट्रीय गाय एवं भैंस प्रजनन परियोजना'' (NPCBB) में प्रदत्त मार्ग–दर्शक बिन्दुओं के अनुपालन में प्रदेश सरकार द्वारा प्रजनन योग्य गाय एवं भैंसों के सुनिश्चित् प्रजनन, संरक्षण एवं संवर्धन हेतु समस्त प्रजनन निवेशों की आपूर्ति एवं प्रजनन सेवाओं के विस्तारित किये जाने के ध्येय से उ0प्र0 पशुधन विकास परिषद् की स्थापना 07 जनवरी, 1999 को राज्य के सोसाइटीज पंजीयन अधिनियम 21, 1860 के तहत पंजीयन संख्या–2342 द्वारा की गयी है।

उ०प्र० पशुधन विकास परिषद एक स्वशासी इकाई है, जो राज्य क्रियान्वयन अभिकरण (स्टेट इम्प्लीमेंटिग एजेन्सी–SIA) के रूप में गाय एवं भैंसों में प्रजनन कार्यक्रमों को सभी सहभागी संस्थाओं यथा पशुपालन विभाग, प्रादेशिक सहकारी दुग्ध उत्पादन संघ (पी०सी०डी०एफ०), भारतीय एग्रो इण्डस्ट्रियल फाउण्डेशन लि0 (बायफ), एनिमल ब्रीडिंग सेण्टर, सलोन (एन०डी०डी०बी०), कृषि विश्वविद्यालयों/पशुचिकित्सा विश्वविद्यालयों, ग्राम्य विकास विभाग, मिल्क प्रोड्यूसर कम्पनियों एवं एन०जी०ओ० व अन्य संस्थानों से समन्वय स्थापित करते हुए कार्य कर रहा है। परिषद् लागत मूल्यों की पुर्नप्राप्ति (कॉस्ट रिकवरी) के आधार पर प्रजनन निवेशों की व्यवस्था कर रहा है, ताकि राज्य के वित्तीय स्रोतों पर इन कार्यक्रमों हेतु निर्भरता समाप्त हो सके तथा प्रादेशिक पशु प्रजनन नीति को एकरूपता से लागू किया जा सके।

- राज्य पशु प्रजनन नीति का क्रियान्वयन करना।
- स्वदेशी पशु प्रजातियों का संरक्षण एवं सम्वर्द्धन किया जाना ।
- पशुपालकों के द्वार पर पशु प्रजनन सुविधायें उपलब्ध कराना।
- समस्त प्रजनन योग्य दुधारू पशुओं (गाय एवं भैंसों) को चरणबद्ध ढंग से निश्चित समयावधि में प्रजनन सुविधाओं से आच्छादित करना।
- सभी संबंधित एजेंसियों के साथ तालमेल विकसित करना और उनकी भागीदारी सुनिश्चित् करना।

यूपीएलडीबी द्वारा कार्यान्वित प्रमुख योजनाएं

राष्ट्रीय गोकुल मिशन (आरजीएम) के अन्तर्गत कार्यान्वित योजनाएं–

- राष्ट्रव्यापी कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम (एनएआईपी)
- मैत्री का प्रशिक्षण एवं स्थापना
- त्वरित नस्ल सुधार कार्यक्रम (एबीआईपी)
- ईटीटी एवं आईवीएफ प्रयोगशाला की स्थापना के माध्यम से भ्रूण उत्पादन।
- नस्ल गुणन फार्म एनडीडीबी (बीएमएफ)
- प्रोजेक्ट गिर वाराणसी

अन्य प्रमुख योजनाएं :

- नेशनल पशुधन मिशन के अन्तर्गत पशुओं हेतु जोखिम प्रबंधन और बीमा योजना।
- अतिहिमीकृत वीर्य उत्पादन केंद्रों के माध्यम से उच्च गुणवत्तायुक्त वीर्य स्ट्राज का उत्पादन।
- स्वदेशी गौवंशीय पशुओं हेतु सेक्स्ड सीमेन का उत्पादन।

उत्तर प्रदेश में मिशन मिलियन सेक्स्ड ए०आई० लागू :

स्वदेशी गौवंशीय पशुओं में सेक्स्ड सीमेन के माध्यम से कृत्रिम गर्भाधान कर 90 प्रतिशत तक मादा संतति की प्राप्ति के द्वारा 40 प्रतिशत अधिक उन्नत स्वदेशी बछिया की उत्पत्ति द्वारा दुग्ध उत्पादन तथा प्रति पशु उत्पादकता में वृद्धि द्वारा पशुपालकों की आय में गुणात्मक सुधार लाने के ध्येय से दिनांक 01 मई 2023 दिनांक 31 मार्च 2023 की अवधि में 1 मिलियन (10 लाख) कृत्रिम गर्भाधान का लक्ष्य उत्तर प्रदेश के 75 जनपदों हेतु निर्धारित किया गया है। उपयोग को बढ़ावा देने हेतु 01 अप्रैल 2023 से रू. 100/– की लेवी निर्धारित की गई है।

मिशन 75 कृत्रिम गर्भाधान अभियान सफलतापूर्वक पूर्ण

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में यूपीएलडीबी के निदेशक–मण्डल द्वारा दिये गये निर्देश के क्रम में दिनांक 15 नवम्बर, 2023 को बाराबंकी में एक भव्य कार्यक्रम के माध्यम से उत्तर प्रदेश में 100 दिवसीय मिशन 75 कृत्रिम गर्भाधान अभियान का शुभारम्भ किया गया, जिसे 25 मार्च 2023 तक की अवधि हेतु विस्तारित भी किया गया।

योजनान्तर्गत लक्षित 75 लाख कृत्रिम गर्भाधान के सापेक्ष दिनांक 25 मार्च 2023 तक कृत्रिम गर्भाधान की पूर्ति 63. 90 लाख है, लक्ष्य का 85.19 प्रतिशत है, 48.40 लाख कृत्रिम गर्भाधान, इनाफ पोर्टल पर अंकित है। जहाँ एनएआईपी 1 से लेकर एनएआईपी 3 तक इनाफ पोर्टल पर अपलोड के स्तर पर उत्तर प्रदेश की प्रगति लक्ष्य के सापेक्ष अत्यन्त न्यून थी, इस मिशन को लागू करने के फलस्वरूप उत्पन्न जागरूकता के चलते एनएआईपी 4 अन्तर्गत इनाफ पोर्टल पर अद्यतन लगभग 51.83 लाख पशुओं के आच्छादन के सापेक्ष 66.06 लाख कृत्रिम गर्भाधान का विवरण 03 जुलाई 2023 तक अंकित किया गया है।

डा. नीरज गुप्ता
मुख्य कार्यकारी अधिकारी
उ0प्र0 पशुधन विकास परिषद

डा. रजनीश दुबे
अध्यक्ष, यूपीएलडीबी एवं अपर मुख्य सचिव,
पशुधन, उ0प्र0 शासन

गोकरननाथ रोड, बादशाहबाग, लखनऊ–226007, ई–मेलः upldb@rediffmail.copm,
दूरभाषः 0522–297709, वेबसाइटः https://upldb.up.gov.in

लोक भारती, जिला प्रशासन का संयुक्त अभियान
मंदाकिनी नदी वर्षों बाद पुनः प्रवाहमान

कमलेश सिंह
लोक भारती

देश में प्राकृतिक संसाधनों की बिगड़ती दशा से सभी परिचित हैं। नदियां विशेशकर संकट का सामना कर रही हैं। बड़ी नदियां जहां सिकुड़ गई हैं, वही अनेक छोटी नदियों का तो अस्तित्व ही समाप्त हो गया है। जीवन का पर्याय कहलाने वाली नदियों को बचाने एवं पुनर्जीवित करने के लिए अनेक प्रकार से अनेक समूह विचार मंथन से छोटे-बड़े स्तर पर जमीनी प्रयास करते हैं। इसी प्रकार का एक प्रयास उत्तर प्रदेश के सीतापुर जनपद में नैमिषारण्य के पुण्य क्षेत्र में चल रहा है। यह बहने वाली मंदाकिनी नदी के पुनर्जीवन पर लोक भारती द्वारा जिला प्रशासन के सहयोग से विगत कई महीनों से चरणबद्ध अभियान आरंभ किया गया था। इस क्षेत्र में पूर्व के वर्षों में बहने वाली लगभग १६ किलोमीटर की यह मंदाकिनी नदी पूर्णतया सूख गई थी। इसके पुनर्जीवन प्रयासों में समाज को जोड़ने के साथ ही शासकीय सहयोग प्राप्त करने का कार्य लोक भारती द्वारा किया गया और पिछले दिनों एक साथ मंदाकिनी नदी जल प्रवाह क्षेत्र से संबंधित २६ तालाबों के जीर्णोद्धार पर कार्य शुरू हुआ। इस प्रकार वर्षा जल को तालाब की दिशा देकर संचित करने के प्रयास के साथ ही नदी के जलधार क्षेत्र को साफ किया गया।

इस अभियान का सुफल यह हुआ कि पिछले दिनों हुई उत्तम वर्षा के उपरांत अनेक वर्षों बाद मंदाकिनी नदी ने अपना प्रवाह पुनः पा लिया। अनुभव के आधार पर हम समझते हैं कि यह एक वर्षाजनित अस्थाई प्रवाह है और संगठन द्वारा ली गई इस त्रिवर्षीय योजना पर अनेक कार्य शेष हैं। तो भी जलधार को नदी की दिशा में प्रवाह मिलना कार्यकर्ताओं के लिए उत्साहजनक है। हमें विश्वास है कि इन कर्मयोगियों का श्रम अवश्य ही माँ मंदाकिनी को सदानीरा बनाएगा। लोक भारती सीतापुर की टोली सहित इस नदी पुनर्जीवन अभियान में लगे प्रत्येक सदस्य का अभिनंदन और जिला प्रशासन के विशेष सहयोग का आभार है। वर्तमान समय में भी मंदाकिनी एवं उसके तालाब पानी से भरे हैं। यह पुनर्जीवन अभियान की अद्भुत सफलता है।

पुनर्जीवन अभियान का परिणाम है कि मंदाकिनी प्रवाह क्षेत्र में वर्शाजल की बहुत अच्छी रिचार्जिंग हो रही है। इसी तरह सभी जगह पानी रोकने पर कार्य चल रहा है। कोशिश है कि एक बूंद भी पानी व्यर्थ न बहने दिया जाय। मंदाकिनी पुनर्जीवन से जुड़े सभी कर्मयोगी सराहना के पात्र हैं। इस अभियान में संपन्न कार्यों के उपरांत उत्तम वर्षा से निर्मित मंदाकिनी का जल प्रवाह सम्पूर्ण

अभियान के लिये उत्साह एवं संतोशजनक है। इससे पुनः स्थापित हुआ है कि यदि पूरी क्षमता और योजना से प्रयास किया जाना तो उसे सफलता अवश्य मिलती है। हालांकि ध्यान देना होगा कि यह अस्थाई जल प्रवाह है और मंदाकिनी सहित अन्य नदियों को सदानीरा बनाने को इसी प्रकार योजनाबध्द ढंग से अनेक वर्षों तक श्रम साधना करनी होगी। इस निमित्त तट क्षेत्र में प्राकृतिक कृषि एवं उपलब्ध स्थानों पर तथा इन तालाबों की परिधि पर हरित आच्छादन की योजना पर भी कार्य करना होगा। पावन नैमिषारण्य क्षेत्र लोक भारती के नदी पुनर्जीवन अभियान की प्रयोगशाला है और यह प्रयोगशाला अवश्य ही नदी संरक्षण के विषय पर देश को मार्गदर्शन देने वाली एक टोली का निर्माण करेगी। नैमिषारण्य क्षेत्र में मंदाकिनी नदी के पुनर्जीवन कार्य में तट क्षेत्र के तालाबों का पुनरुद्धार करने इस पावन कार्य में लोक भारती जिला संयोजक कमलेश सिंह की सक्रियता, लोक भारती अवध प्रान्त अध्यक्ष एवं विधान परिशद सदस्य पवन सिंह चौहान के सहयोग एवं समस्त लोक भारती

टोली सहित नदी क्षेत्र के ग्रामीणों के जागरूक प्रयासों से समस्त संबंधित विभाग इस कार्य में सक्रिय हुए। जिलाधिकारी सीतापुर तथा मुख्य विकास अधिकारी ने स्वयं इस कार्य में रुचि ली। नदियां जीवनदायिनी हैं, इसलिए इनका संरक्षण करना समाज का दायित्व है। मंदाकिनी अत्यंत प्राचीन नदी है। इसके पुनर्जीवित होने से सकारात्मक परिणाम आएंगे। भूजल का स्तर बेहतर होगा। नदी प्रवाह क्षेत्र के तटवर्ती गांवों व किसानों को भी इसका लाभ मिलेगा। ऐसी ही छोटी-छोटी नदियां मिलकर गोमती और गंगा को प्रवाहमान बनाती हैं।■

-लेखक लोक भारती सीतापुर के संयोजक हैं।

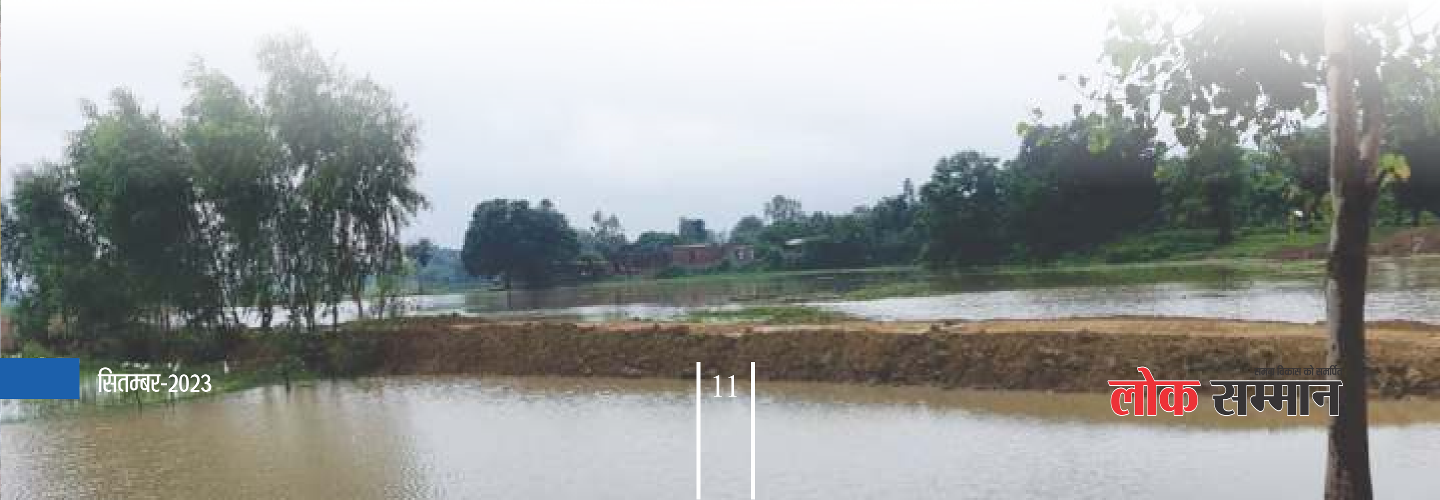

पंच तत्व का महत्व
इनके संतुलन में निहित सुखी जीवन का रहस्य

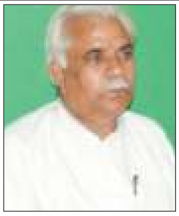

ब्रजेन्द्र पाल सिंह

संत तुलसी दास जी ने पंच तत्व को इस प्रकार व्यक्त किया है- क्षिति जल पावक गगन समीरा, पंच तत्व रचित यह परम शरीरा। सम्पूर्ण सृष्टि इन पांच तत्वों से बनी है। हमारे शरीर में उनका प्रतिशत इस प्रकार है- जल तत्व ७२ प्रतिशत, पृथ्वी तत्व- १२ प्रतिशत, वायु तत्व- ६ प्रतिशत, अग्नि तत्व- ४ प्रतिशत एवं आकाश तत्व- ६ प्रतिशत। इनके संतुलन में सुखी समृद्ध जीवन का रहस्य है। पंच तत्व में संतुलन के साथ ही उन्हें यदि प्रदूषण से मुक्त रखने और उनके उपयोग का संयम रखा तो हमारा समाज और हम सभी सुख, शांति और समृद्धि का जीवन जी सकेंगे।

आकाश तत्व- आकाश में ही हम स्थिर हैं। हमारे चारों ओर आकाश व्याप्त है। आकाश में ही सूरज, चंद्रमा, तारे, आकाश गंगा और अनंत निहारिकायें स्थित हैं। हम जो कुछ सोचते हैं, विचार करते हैं, वह सूक्ष्म तरंगों के रूप में आकाश में समाहित होकर सुरक्षित रहता है। हम जो भी स्वर निकालते हैं, बोलते हैं वह सब आकाश में सुरक्षित रहता है। आकाश स्वच्छ रहे, इस हेतु हमारे पूर्वजों ने ध्यान की साधना सिखाई जिससे हम अपने विचारों को संयमित रख सकें। हमें आराधना का मार्ग दिखाया जिसके माध्यम से हम सद् विचार और सद् वाणी से आकाश को सुन्दर बनाये रख सकें। आकाश अनंत है और उसमें नाद ब्रह्म का घोष निरन्तर होता रहता है जिसे हम 'प्रणव' या 'ओम' नाद के रूप में जानते हैं। उसके ध्यान से हम आकाश के साथ एकात्म हो सकते हैं।

वायु तत्व- कहते हैं कि वायु की उत्पत्ति आकाश से हुई है। अतः यदि आकाश स्वच्छ व स्वस्थ रहेगा तो उससे उत्पन्न होने वाली वायु भी सुखद होगी। शुद्ध वायु के लिए प्रकृति ने हमें वृक्षों का उपहार दिया, अतः वायु की शुद्धता और स्वच्छता के लिए अधिकाधिक पेड़ लगाएं। जैसे पृथ्वी और शरीर में प्रकृति ने ७२ प्रतिशत पानी होना सुनिश्चित किया है उसी प्रकार ६ प्रतिशत वायु तत्व के लिए पृथ्वी के ७२ प्रतिशत भूभाग पर पर हरियाली होना आवश्यक है।

> **रासायनिक उर्वरको और कीट नाशी रसायनों के अत्यधिक प्रयोग से भूमि की उर्वरता को हमने क्षीण किया है, साथ ही जैव विविधता को बहुत हानि पहुँचाई है। इसमें सुधार के लिए प्रकृति ने पहले से ही हमें गौ रूपी वरदान दिया हुआ है जिसे पिछले कुछ वर्षो से हम भूल गए हैं। यदि हम अपना और अपने समाज का भविष्य उज्जवल देखना चाहते हैं तो हमें गौ पालन, गौ वंश संवर्धन और गौ आधारित प्राकृतिक खेती के मार्ग पर चलना ही होगा**

अग्नि तत्व- अग्नि तत्व का प्रादुर्भाव वायु से हुआ है। वायु के स्वच्छ स्वस्थ्य होने से अग्नि भी संतुलित रहेगी। अग्नि से ताप है, प्रकाश है और ऊर्जा है, जिससे हमारी पृथ्वी की समस्त प्रकृति संचालित होती है, जिसका संतुलन हरियाली और स्वच्छ वायु से होता है। अतः हम अवश्य स्तर तक हरियाली सुरक्षित रखें और कोई ऐसी गतिविधि न करें जिससे वायु प्रदूषित होती हो। उसके संतुलन के लिए हमारे ऋषियों नें हमे यज्ञ का विधान दिया है।

जल तत्व- जल तत्व की उत्पत्ति अग्नि तत्व से हुई है। अतः समुचित जल हेतु अग्नि तत्व का संतुलन आवश्यक है, जिसका साधन यज्ञ के रूप में हमारे पूर्वजों ने हमें पहले से ही दिया है। हमारे शरीर में जहाँ ७२ प्रतिशत जल तत्व है तो पृथ्वी पर भी ७२ प्रतिशत जल है, जो निश्चित है, न कम होता है न अधिक। पंच तत्वों की उपस्थिति के अनुरूप उसके रूप में परिवर्तन आता है। कभी पानी, कभी बादल तो कभी बर्फ के रूप में वह उपलब्ध रहता है और उसका भी एक समुचित चक्र है। उसके चक्र में व्यवधानों से कभी अति वर्षा जो जल प्रलय का रूप लेती है, कभी सूखा

और कभी बर्फबारी जो पृथ्वी को हिम युग में ले जा सकती है। अतः हमें सुख और समृद्धि के लिए जल के संतुलित स्वरूप का बने रहना आवश्यक है। इस हेतु प्रदूषण मुक्त वातावरण, हरियाली युक्त धरती चाहिए, जो हमारा दायित्व है। इसके साथ ही जल का इष्टतम उपयोग और भूगर्भ जल भरण भी आवश्यक है जिसके लिए 'शोषण नहीं, दोहन का सिद्धांत' हमारे पूर्वजों ने हमें दिया है।

पृथ्वी तत्व- पृथ्वी तत्व का उद्भव जल से हुआ है इसलिए पृथ्वी के लिए जल ही जीवन है। पृथ्वी सगंधा है, पृथ्वी अन्नपूर्णा है, अतः पृथ्वी अपने गुणों से युक्त रखकर सम्पूर्ण प्रकृति का पोषण स्वस्थ विधि से निरन्तर करती रहे, जिसमें मानव जीवन भी सम्मिलित है। इसलिए पृथ्वी का स्वस्थ रहना अर्थात पोषकता से वह परिपूर्ण बनी रहे यह हमारा दायित्व है। पिछले वर्षों में मनुष्य ने उसे असंतुलित किया है। रासायनिक उर्वरको और कीट नाशी रसायनों के अत्यधिक प्रयोग से भूमि की उर्वरता को हमने क्षीण किया है, साथ ही जैव विविधता को बहुत हानि पहुँचाई है। इसमें सुधार के लिए प्रकृति ने पहले से ही हमें गौ रूपी वरदान दिया हुआ है जिसे पिछले कुछ वर्षों से हम भूल गए हैं। यदि हम अपना और अपने समाज का भविष्य उज्जवल देखना चाहते हैं तो हमें गौ पालन, गौ वंश संवर्धन और गौ आधारित प्राकृतिक खेती के मार्ग पर चलना ही होगा।

यदि हम केवल पंच तत्वों की बात करते हैं, तो वह अधूरी है। पंच तत्व की निर्मिति निर्जीव होती है। क्या पांचों तत्व एकत्रित करने मात्र से प्रकृति का निर्माण हो जाता है, अथवा उक्त पांचों तत्वों के अतिरिक्त भी कोई तत्व है जो प्रकृति निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ करता है। सनातन उसे ईश्वर या ब्रह्म के नाम से पुकारता है, जो सम्पूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त है। वास्तव में छठा तत्व ब्रह्म तत्व है उसके बिना सब कुछ निर्जीव है। वह छठा तत्व ही सम्पूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त 'प्रणव' ध्वनि है जिसकी साधना समस्त तत्वों को संतुलित रखने के लिए आवश्यक है। ब्रह्मांड में अनेक ग्रह और उपग्रह हैं, लेकिन जीवन केवल हमारी पृथ्वी पर ही है, जिसका उद्भव जल से हुआ। वृक्षों ने उन्हें प्राण वायु दी। वनस्पतियों से उसका पोषण हुआ और खनिजों नें उसे शक्ति प्रदान की। प्रकृति ने दो प्रकार के जीवों की संरचना की, जिसमें एक में 'जीव ही जीव का आहार' बना और दूसरे में उपरोक्त शाकाहारी जीव। इन दोनों से भिन्न

मनुष्य है जिसे प्रकृति ने बनाया तो शाकाहारी, लेकिन वह अपनी लिप्सा और कहीं-कहीं मजबूरी में मांसाहारी बन गया। अर्थात प्रकृति चक्र में कहीं न कहीं व्यवधान अवश्य बना, जिसके दुश्परिणाम की अभी बहुत अधिक हमें जानकारी नहीं है। हां, इतना आभास अवश्य हुआ है कि जैव विविधता के बिना हमारा जीवन सुरक्षित नहीं है, अतः लुप्तप्राय जीवों के संरक्षण के लिए अभयारण्य अवश्य बनाने लगे हैं।

पंच तत्व का संतुलन बने रहने से ही हमारे भूमंडल की प्रकृति सुरक्षित रहेगी, जो हमें उपहार के रूप में मिली है। उसके लिए हमें अपने जीवन क्रम और जीवन में विकास के पैमानों पर विचार करने की आवश्यकता है। जिसका विचार हमारे पूर्वजों ने हजारों वर्ष पूर्व ही कर लिया था, जिसे कालक्रम में हमने भुला दिया है। इसके लिए प्रकृति के कुछ नियम हैं। उन्हें जानना भी आवश्यक है।

पहला नियम प्रकृति से हम जितना लेते हैं, उतना उसे लौटाने का है। सभी पेड़-पौधे भूमि से जल एवं पोषक तत्व लेते हैं और वर्ष में एक बार पतझड़ के रूप में पृथ्वी को लौटा देते हैं। परन्तु कृषि क्षेत्र में हमने इस नियम को तोड़ दिया। परिणाम स्वरूप भूमि बंजर होने लगी। दूसरा नियम है प्रकृति को बिना हानि पहुंचाये आवश्यकता की पूर्ति करना। जिसमें पशुओं से दूध लेना, मधुमक्खियों से शहद लेना वृक्षों से औषधि या खाद्यान्न लेना, भूमि से जल प्रवाहों से जल लेना आता है। लेकिन हम उसका अतिक्रमण करते रहते हैं। परिणामतः अनेक संकट हमारे सामने खड़े हुए हैं। प्रकृति हमारी सभी आवश्यकताओ को पूरा कर सकती है लेकिन हमारे अति भोग को पूरा नहीं कर सकती। हमारे ऋषियों ने इसके लिए अपरिग्रह का सिद्धांत बनाया था, जिसे हमने भुला दिया है। प्रकृति के अनुरूप विकास के पैमाने हमारे पूर्वजों ने विकसित किए थे, जिसमें सह अस्तित्व का सिद्धांत, परस्पर पूरकता का सिद्धांत, पर्यावरण के अनुकूल विकास आदि प्रमुख हैं। वर्तमान के विकास के पैमाने बदलने की आवश्यकता है। आज जिसे हम जी डी पी कहते हैं, जिसका आधर अधिकतम उपभोग है। वस्तुएँ हमारे लिए नहीं, हम वस्तुओं के लिए हो गए हैं। उद्योग हमारी आवश्यकता की पूर्ति के लिए नहीं, हम उसके उत्पादों की खपत के लिए हैं, आदि आदि।

हमारे ऋषियों नें प्रकृति और पंच तत्वों का बहुत सूक्ष्म एवं गहराई तक अध्ययन एवं दर्शन किया था। जन सामान्य के जीवन में उस उतारने के लिए अनेक परंपराओं, त्योहारों, उत्सवों का विकास किया था जिनके होने मात्र से सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी पंच तत्व के संतुलन का वाहक

> **छठा तत्व ही सम्पूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त 'प्रणव' ध्वनि है जिसकी साधना समस्त तत्वों को संतुलित रखने के लिए आवश्यक है। ब्रह्मांड में अनेक ग्रह और उपग्रह हैं, लेकिन जीवन केवल हमारी पृथ्वी पर ही है, जिसका उद्भव जल से हुआ। वृक्षों ने उन्हें प्राण वायु दी। वनस्पतियों से उसका पोषण हुआ और खनिजों नें उसे शक्ति प्रदान की**

बन जाता था। उनमें से कुछ की जानकारी हम सभी को है, यहाँ मात्र स्मरण कराने हेतु संक्षिप्त विवरण देना आवश्यक है, जिससे हम उन्हें अब उनके मूल उद्देश्य के रूप में देख सकें और उनमें आयी विकृतियों को दूर कर राष्ट और समाजहित में बढ़ सकें। यहाँ पर हम उन्हें भारतीय महीनों और बढ़ते मौसम के अनुसार प्रस्तुत कर रहे हैं-

सावन माह- वर्षा काल

हरियाली तीज- यह पर्व हरियाली संरक्षण-संवर्धन और उसके सानिध्य का उत्सव है। पेड़ों पर झूले, हरियाली के गीत और सामाजिक सौहार्दपूर्ण आनन्द का मंगल काल रहता है। सामाजिक मान्यता और स्मृति के लिए मायके से इस दिन बेटी के लिए हरियाली के उपहार 'तिजिया' के रूप में भेजने की परंपरा रही है। इस अवसर को सामजिक स्वास्थ्य से भी जोड़ा गया था। गांव-गांव में अखाड़े खुल जाते थे जहाँ युवकों को अपनी मिट्टी पर कुश्ती प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर मिलता था।

नाग पंचमी- सावन मास का दूसरा महत्त्वपूर्ण लोक मंगल का पर्व नाग पंचमी है। यह जैवविविधता संरक्षण का पर्व है। वर्षा काल में जब सर्पों के बिल पानी से भर जाते हैं और वह अपने लिए सुरक्षित स्थान की खोज में चारों ओर घूमते हैं, तब स्वाभाविक रूप से मनुष्य से उनका सामना होता है। सामान्यतः मनुष्य साँपों को अपने लिए घातक मानता है और देखते ही उन्हें मारने की चेष्टा करता है। परन्तु नाग पंचमी के त्योहार द्वारा वही मानव उस सर्पों के पूजन के लिए तैयार होता है। कैसा अद्भुत है समाज के मन को बदलने का यह उत्सव। इसी दिन अपने परिवार के स्वास्थ्य रक्षण की दृष्टि से घर के चारों ओर दीवार पर गाय के गोबर से मोटी रेखा का सुरक्षा कवच बनाने की परंपरा रहीं है, क्योंकि गाय के गोबर में रोगाणु, विषाणु रोधी एवं रेडियो धर्मी हानिकारक तरंगों को रोकने की शक्ति है।

भादौ या भाद्रपद- वर्षा काल का अंतिम माह

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी- यह भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलायें, जो पंच तत्व केंद्रित हैं, का उत्सव है। यह उत्सव गांव-गांव में जन्माष्टमी से लेकर पूरे १५ दिन मानने की परंपरा रही है।

पित्र पक्ष- अपने पूर्वजों के स्मरण के बहाने 'कौवे' को भोजन कराने की परंपरा स्थापित की गई थी, जिससे कौवे जिनके उस काल खण्ड में अंडों से बच्चे निकलते हैं वे स्वस्थ रह सकें। यह अवसर प्राणी मात्र के संरक्षण का चिंतन है।

अश्विनी या क्वार माह- यह माह मौसम परिवर्तन का संधि काल है, वर्षा काल की समाप्ति और शरद ऋतु का आगमन काल।

नवरात्रि व्रत- इस कालखण्ड में मौसम परिवर्तन के कारण मनुष्य को अनेक बीमारियों के आने का खतरा रहता है जिसका सहज उपचार नौ दिन व्रत रखने से अपने आप हो जाता है। व्रत के साथ-साथ नौ दिन में क्रमश नौ देवियों का पूजन होता है जिनका संबंध इस काल के लिए उपयोगी नौ वनस्पतियों से है। स्वच्छता, हवन-यज्ञ, जल कलश स्थापना एवं नीम की पत्ती युक्त डाली का उपयोग, सभी सभी पंच तत्व के संतुलन और जीवन रक्षक प्रतीकों से जुड़े हैं।

शरद पूर्णिमा- पूर्णिमा की रात्रि में खीर बनाकर खुले आकाश के नीचे देर रात तक रखना और उस कालखण्ड में चंद्रमा की शीतल चांदनी में खेल-कूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजनों के बाद खीर का प्रसाद शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और प्राकृतिक समन्वय एवं संतुलन का अद्भुत उत्सव है।

दशहरा- भगवान श्रीराम की स्मृति को हृदयंगम करने हेतु दस दिन चलने वाला उत्सव और अंतिम दिन रावण के पुतले को सायं काल जलाने की परंपरा हानिकारक विषाणुओं को नष्ट करने का विधान भी रही है।

कार्तिक मास- यह कृषिजन्य कार्यों का विशेष माह है। जब एक ओर खरीफ की फसल कट कर घर आती है और दूसरी ओर रबी की फसल की बुवाई और तैयारी होती है। इसका सम्बन्ध हमारी खाद्यान्न व्यवस्था से है।

दीपावली - कई दिन चलने वाला यह त्योहार, जिसमें दूसरे दिन गोवर्धन पूजा (गाय के गोबर की पूजा) जो भूमि को उर्वरता प्रदान करने के लिए आवश्यक है। लक्ष्मी पूजन के साथ दीपावली को सायंकाल अलाय-बलाय भगाने हेतु मशाल (सनई

की सिरकी से बनी हुई) जलाकर गांव के सभी लोग अपने-अपने मोहल्लों से निकल कर गांव के एक छोर (धूरे) तक जाते हैं और मशाल को एक स्थान पर समर्पित कर अपने बडों को परंपरागत विधि से अभिवादन करते हैं, चरण स्पर्श कर बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं। इससे जलती मशाल में हानिकारक कीट-पतंगे जल कर नष्ट हो जाते हैं। यह सामाजिक सौहार्द के साथ परिवार भाव को जागृत करने का पर्व है जिसकी अगली कड़ी रात्रि में दीप मालिका और दो दिन बाद भाई-बहन के संस्कार का पर्व भैया-दूज तक चलता है।

देवोत्थानी एकादशी- यह देवताओं के जागरण का सूचक है। इस दिन से सामाजिक-पारिवारिक शुभ कार्य प्रारम्भ होते हैं। कृषिजन्य कार्यों में गन्ना की फसल अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पंचतत्व और लाइफविषय पर चर्चा

प्राकृतिक समृद्धि से ही संभव है विश्व कल्याण

✍ अजित कुशवाहा

लोक भारती

पृथ्वी, भू संपदा, मृदा की उर्वरता, उत्पादक गुणवत्ता बढ़ाने के लिए हम सबको मिलकर प्रयास करना होगा। डॉ. सुभाष पालेकर द्वारा विकसित प्राकृतिक कृषि पद्धति को सरकार द्वारा भी लागू किया जा रहा है। लोक भारती की प्रेरणा से गौ आधारित प्राकृतिक कृषि पद्धति के माध्यम से लाखों किसान खेती कर रहे हैं। विगत वर्ष गोमती लगभग 70 किलोमीटर तक सूख गई थी जिसके लिए गोमती को सदानीरा बनाने का निरंतर प्रयास चल रहा है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा भी वृक्षारोपण एवं अमृत सरोवर के माध्यम से इस क्षेत्र में कार्य किया जा रहा है। विश्व कल्याण प्राकृतिक समृद्धि से ही संभव है। हमें प्रकृति के मूल तत्व के बारे में सोचना होगा

लोक भारती एवं पर्यावरण प्रज्ञा के संयुक्त तत्वाधान में लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में १८ अगस्त को सी-२० कार्यक्रम के अंतर्गत पंचतत्व एवं लाइफ विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी देते हुए पर्यावरण प्रज्ञा संस्था के कार्यक्रम समन्वयक एवं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्व संगठन मंत्री अशोक कुमार ने पूर्व में किए गए सेमिनार के बारे में चर्चा करते हुए पंचतत्व के माध्यम से पर्यावरण जागरूकता के समस्त घटकों पर चर्चा की। आईआईटी कानपुर के प्रोफेसर विनोद तारे के द्वारा गंगा एवं जल संरक्षण के विषय में किए गए शोध पर विस्तृत जानकारी दी गई। उन्होंने कहा की वनस्पतियां लुप्त हो रही हैं जिससे जैव विविधता प्रभावित हो रही है। अखिल भारतीय विद्यार्थी राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. राजशरण शाही ने कहा कि हमें प्रकृति संरक्षण के लिए एकजुट होकर कार्य करना होगा। हमारी समरसता प्रकृति के साथ जीने में हैं। चिंतन पृथ्वी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने की है। ओजोन परत में क्षति हो रही है जिससे ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है। इन सबकी चर्चा एवं संरक्षण के बारे में हमारे ऋषियों-मुनियों ने वेदों के माध्यम से ही पूर्व में की हैं। देश जी-२० की अध्यक्षता कर रहा है जिसमें वैश्विक स्तर पर पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन पर बेहतर तरह से चर्चा हो रही है। इसलिए हम सब प्रकृति के साथ सहअस्तित्व की भावना रखते हुए आगे बढ़ना होगा। प्लान इंडिया के प्रतिनिधि अमित कुमार ने अपनी चर्चा में कहा कि हम सब स्वच्छ भारत और स्वस्थ भारत के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। 'बनेगा स्वस्थ इंडिया' अभियान उत्तर प्रदेश के १२५०० प्राथमिक विद्यालयों में चलाया जा रहा है। स्कूल के बच्चों को परिवर्तन दूत के रूप में तैयार कर रहे हैं जो भविष्य में पांच बिंदुओं पर कार्य करेंगे। इसमें व्यक्तिगत साफ सफाई, स्कूल में साफ सफाई, घर में साफ सफाई, आस पड़ोस में साफ सफाई एवं बीमारी के दौरान स्वच्छता मुख्य हैं। हम प्लास्टिक रहित विद्यालयों को बनाए जाने के लिए प्रयासरत हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनूप भारती ने इस अवसर पर कहा कि समाज कार्य एक व्यवसायिक विषय है, व्यक्ति इसके माध्यम से अपना जीवनयापन कर सकता है। प्राकृतिक आपदा या मानव जनित आपदा के समय प्रशिक्षित व्यक्ति मदद करता है जिसमें समाज कार्य के व्यक्ति अहम भूमिका निभाते है। हमें विचार करना चाहिए कि पर्यावरण के विघ्नकारी तत्वों को कैसे समाप्त किया जाए जिसके कारण प्रकृति आपदाएं बढ़ रही हैं। लोक भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री बृजेंद्र पाल सिंह ने कहा कि पंचतत्व में जो भी संगतिया आई हैं उसे सुदृढ़ करने के लिए लोक भारती विगत २० वर्षों से कार्य कर रही है। पृथ्वी, भू संपदा, मृदा की उर्वरता, उत्पादक गुणवत्ता बढ़ाने के लिए हम सबको मिलकर प्रयास करना होगा। डॉ. सुभाष पालेकर द्वारा विकसित प्राकृतिक कृषि पद्धति को सरकार द्वारा भी लागू किया जा रहा है। लोक भारती की प्रेरणा से गौ आधारित प्राकृतिक कृषि पद्धति के माध्यम से लाखों किसान खेती कर रहे हैं। विगत वर्ष गोमती लगभग ७० किलोमीटर तक सूख गई थी जिसके लिए गोमती को सदानीरा बनाने का निरंतर प्रयास चल रहा है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा भी वृक्षारोपण एवं अमृत सरोवर के माध्यम से इस क्षेत्र में कार्य किया जा रहा है। विश्व कल्याण प्राकृतिक समृद्धि से ही संभव है। हमें प्रकृति के मूल तत्व के बारे में सोचना होगा। मुख्य अतिथि उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने वीडियो संदेश के माध्यम से पंचतत्व पर चर्चा करते हुए कहा कि जलवायु परिवर्तन तेजी से हो रहा है। कहीं सूखा तो कहीं अधिक बारिश हो रही है। इस असंतुलन को हमें समझने की आवश्यकता है। हमें प्रकृति के साथ परस्पर मित्रता का भाव रखना होगा। सी-२० के माध्यम से आप सब प्रकृति एवं पंचतत्व के संरक्षण पर चर्चा कर रहे हैं, सरकार भी सदैव इसी क्षेत्र में बेहतर कार्य करने का प्रयास कर रही है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए लोक भारती के अध्यक्ष विजय बहादुर सिंह ने कहा कि क्षिति, जल और समीर इन क्षेत्र में लोक भारती के द्वारा निरंतर कार्य किया जा रहा है। आजकल के विद्यार्थियों को भी यह बताने की आवश्यकता है कि हमारा जीवन प्रकृति के बीच कैसे चलता हैं। हवा और जल के बिना जीवन संभव नहीं है इसलिए हमें प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित दोहन पर ध्यान देना होगा। कार्यक्रम का संचालन डह अलका सिंह द्वारा एवं धन्यवाद ज्ञापन लोक भारती के संपर्क प्रमुख श्रीकृष्ण चौधरी द्वारा किया गया। इस अवसर पर लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो महेंद्र अग्निहोत्री, प्रोफेसर मैत्री बाजपेई, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रांत संगठन मंत्री अंशुल, उमेश गुप्ता, हृदेश बिहारी, शिव शंकर, मुकेशानंद, अखिलेश मिश्रा, साईं सेवा संस्थान से गौरव त्रिपाठी, सौरभ सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।■

इसी दिन गन्ने का पूजन होता है और फिर गन्ने से गुड़, राब, शक्कर और चीनी आदि बनाने के उद्योग प्रारम्भ होते हैं।

कार्तिक पूर्णिमा/प्रकाश पर्व- इसे हम नदी स्नान पर्व भी कह सकते हैं। इस काल तक वर्षा के कारण नदियों में आयी हुई गाद बह जाती है और उनका जल निर्मल हो जाता है। अतः सभी नदियों के घाटों पर इस अवसर पर स्नान पूजन के मेले लगते हैं जो समाज को नदियों से अक्षुण रूप से जोड़े रखते हैं और उन्हें उनके संरक्षण-संवर्धन का भी संस्कार देते हैं।

अगहन और पूस माह- यह दोनों माह अति शीत के महीने होने के कारण बड़े उत्सव इस समय नहीं होते। माघ मास- यह महीना हल्की सर्दियों का होता है। इस अवधि में सूर्यदेव दक्षिणायन से उत्तरायण में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रांति- यह सूर्य पूजन का पर्व है। मकर संक्रांति के दिन ही सूर्य दक्षिण रेखा से उत्तर रेखा में प्रवेश करता है, जिससे फसलें बढ़ती हैं, पकती हैं। वृक्ष अपने पुराने पत्तों को पतझड़ के रूप में त्याग कर नए कलेवर में स्वागत हेतु आते हैं। वायु की गति तेज होती है, आंधियां आती हैं जो वर्षा लाती हैं। इस अवसर को हम मौसम के अनुरूप खाद्यान्न खिचड़ी के दान और खिचड़ी भोज के रूप में उत्सवपूर्वक मनाते हैं जो अब सामाजिक समरसता पर्व के रूप में भी विकसित हो रहा है।

फाल्गुन मास- बसंत अपने चरम की ओर अग्रसर होता है, फसलें पकने की ओर होती हैं। इस समय किसान संसाधन और समय की सुविधा में होता है। होलिकोत्सव- यह पर्व वर्ष में दूसरी बार घर-गांव की सफाई एवं साज-सज्जा का सुअवसर लेकर आता है। होलिका दहन जहाँ भक्त प्रह्लाद से जुड़ा है, वहीं वास्तव में पंद्रह दिन कन्याओं द्वारा प्रकृति पूजन के बाद (पंद्रह दिन कन्याएं प्रकृति से फूलों को चुनकर होलिका का पूजन करती हैं) पूर्णिमा को गाय के गोबर से तैयार कंडे (बल्ले) होलिका में समर्पित कर रबी

पंच तत्व का संतुलन बने रहने से ही हमारे भूमंडल की प्रकृति सुरक्षित रहेगी, जो हमें उपहार के रूप में मिली है। उसके लिए हमें अपने जीवन क्रम और जीवन में विकास के पैमानों पर विचार करने की आवश्यकता है। जिसका विचार हमारे पूर्वजों ने हजारों वर्ष पूर्व ही कर लिया था, जिसे कालक्रम में हमने भुला दिया है। इसके लिए प्रकृति के कुछ नियम हैं। उन्हें जानना भी आवश्यक है

की फसलों से सामूहिक यज्ञ का विधान है। उसके बाद रंगोत्सव, होली मिलन, सामाजिक सद्भाव और व्यवहार का पर्व है।

चैत्र मास- यह फसल तैयार होने का महीना है। बागों में आम के पेड़ बौर से भर जाते हैं और जंगल टेसू के फूल से लाल हो जाते हैं। इस समय न बहुत ठंडक और न बहुत गर्मी। ऐसे सुहाना अवसर महत्वपूर्ण त्यौहार से प्रारम्भ होता है। चैत्र नवरात्रि- इस पर्व का प्रारम्भ वर्ष प्रतिपदा अर्थात वर्ष के प्रथम दिवस अर्थात पृथ्वी उत्पत्ति दिवस के रूप में होता है और समापन राम नवमी अर्थात भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव के रूप में होता है। इस पर्व के अवसर पर नौ दिन तक नौ देवियों के नाम से व्रत-उपवास तथा नवमी के दिन कन्याओं का पूजन कर समाज में कन्याओं के प्रति देवत्व भाव जगाने का कार्य किया जाता है।

जल उत्सव माह- लोक भारती ने वर्ष प्रतिपदा से अक्षय तृतीया तक पूरे माह को जल संरक्षण माह के रूप में मनाने के लिए सुनिश्चित किया है। इस अवसर पर जल जागरुकता के अंतर्गत नदियों, तालाबों, झीलों, कुओं और घाटों की सफाई के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। प्रतिपदा जहां हमारी पृथ्वी का उत्पत्ति दिवस है (पृथ्वी की उत्पत्ति जल से हुई है), वहीं जल देवता के अवतार झूले लाल का जन्मदिन भी है। वहीं अक्षय तृतीया (वैशाख मास) वर्ष का वह शुभ दिन है, जब कोई भी शुभ कार्य बिना किसी मुहूर्त का विचार किए सम्पन्न किया जा सकता है।

वैसाख माह- यह महीना फसल कटने और तैयार फसल को घर लाने का होता है। इस मास में अक्षय तृतीया, वैशाखी और बुद्ध पूर्णिमा आदि प्रमुख त्योहार मनाए जाते हैं।

जेठ माह- यह महीना तेज धूप, तेज गर्मी और गर्म पछुआ हवाओं (लू चलने) का महीना है। फसल वर्ष भर सुरक्षित रखने योग्य सूखने का महीना है।

वट सावित्री का व्रत- महिलाएं अपने पति की दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की कामना से निर्जला व्रत (बिना पानी पीए) रहती हैं और अक्षय वट का पूजन करती हैं। वास्तव में समाज को यह स्मरण कराने का त्योहार है कि यदि दीर्घकालिक स्वस्थ जीवन चाहिए तो जल संधारक, पर्यावरण और जैव विविधता को सुरक्षित रखने बाले अक्षय गुण बाले वट (बरगद) को सुरक्षित रखना आवश्यक है। अर्थात यह पर्यावरण संरक्षण का पर्व है। आषाढ मास- यह महीना वर्षा आगमन एवं खरीफ फसल बोने का अवसर होता है।

आषाढ/गुरु पूर्णिमा (व्यास पूर्णिमा)- इस दिन को शिक्षा प्रारम्भ के दिन के रूप में मनाते है। बच्चों का पाटी पूजन का कार्यक्रम इसी दिन होता है।

हरियाली माह- लोक भारती ने गुरु पूर्णिमा (आषाढ माह का अंतिम दिन) से रक्षाबन्धन (सावन माह की पूर्णिमा) तक हरियाली अर्थात वृक्षारोपण माह के रूप में प्रारम्भ किया गया है। अच्छी बात यह हुई है उत्तर प्रदेश सरकार भी अब इसी कालखण्ड में वृक्षारोपण का कार्य करती है।■

-लेखक लोक भारती के राष्टीय संगठन मंत्री हैं।

लोक भारती का राष्ट्रीय समागम शाहजहांपुर में होगा आयोजन

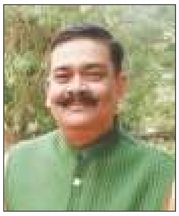

✍ नीरज सिंह

सह सम्पर्क प्रमुख, लोक भारती

उत्तर प्रदेश के शाहजहापुर जनपद स्थित श्री रामचंद्र मिशन में दिनांक २३-२५ सितम्बर को लोक भारती का राष्ट्रीय समागम आयोजित होगा। इसे 'राष्ट्रीय कर्मयोगी सम्मेलन' का नाम दिया गया है। शाहजहांपुर में आयोजित कार्यक्रम में लोक भारती द्वारा चयनित अनेक विषयों पर विशेष कार्य करने वाले अनेक प्रेरणा पुरुषों एवं भगीरथ प्रयास में संलग्न कर्मयोगियों के सानिध्य, परिचर्चा, कार्ययोजना, संकल्प एवं सिद्धि का मार्ग प्रशस्त हो, इस आयोजन के पीछे यही प्रयत्न है। महत्वपूर्ण विषय संबंधी विचार विमर्श, प्रस्तुतीकरण एवं योजना हेतु अनेक प्रदेशों से प्रतिनिधियों का आगमन हो रहा है।

आपको विदित है कि लोकभारती मुख्यतः निम्नलिखित विषयों पर कार्य करती है -

१. समाज हित में श्रेष्ठ एवं प्रेरक कार्य करने बाले कर्म योगियों को खोजना, जोड़ना और एक दूसरे से मिलने के साथ ही उनके कार्य को विस्तार देने में सहयोगी भूमिका का निर्वहन।

२. गौ आधारित प्राकृतिक खेती, पंच स्तरीय वागवानी, परंपरागत बीजों का संरक्षण-संवर्धन एवं श्री अन्न (मोटे अनाज) सम्बन्धी कार्यों का संयोजन, समन्वय एवं सशक्तिकरण।

३. पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न आयामों में स्वच्छता (घरेलू हरित अपशिष्ट से तरल खाद एवं गृहवाटिका), हरियाली अभियान, जल-जलस्रोत एवं नदी संरक्षण तथा पुनर्जीवन के कार्य तथा अभियान में संलग्न भगीरथों के मध्य समन्वय।

४. गौ संवर्धन के विविध आयाम।

५. मंगल परिवार, मंगल परिसर, मंगल क्षेत्र हेतु कार्य।

६. मेरा गांव-मेरा तीर्थ एवं ग्राम संस्कृति उत्सव।

७. उत्तम नगर अभियान।

८. पर्यटन के अंतर्गत- कृषि, गौ, ग्राम एवं प्राकृतिक आधरित पर्यटन।

९. बुन्देली प्रकृति पर्यटन अभियान।

१०. गौ एवं गौवंश पालक प्रतियोगिता तथा सम्मान कार्यक्रम।

११. तीर्थ क्षेत्र विकास- विशेषतः नैमिषारण्य क्षेत्र उ.प्र.।

१२. बंगो लोक भारती- बंगाल के विस्थापित समूहों के मध्य समन्वय।

१३. क्षेत्र विशेष के परिवारों का संयोजन तथा उनमे अपने क्षेत्र के प्रति कर्तव्य भाव का जागरण एवं प्रोत्साहन, यथा लखनऊ में बुन्देली परिवार।

१४. अन्नदाता सम्मान कार्यक्रम के माध्यम से उत्पादक एवं उपभोक्ता के मध्य पारिवारिक एवं परस्पर सहयोगी भाव का विकास।

१५. आओ नदी को जानें अभियान के अंतर्गत विद्यालय, महाविद्यालयों के छात्रों को जल, नदी, हरियाली, गौ आधारित प्राकृतिक कृषि एवं पर्यावरण से जोड़ने का प्रयत्न आदि।

हम उपरोक्त विषयों को लेकर विभिन्न माध्यमों से समाज के समक्ष प्रस्तुत होने का प्रयास करते हैं। लोक भारती समाज में व्याप्त सकारात्मकता और समाधान के प्रयासों की सहयात्री है। शाहजहांपुर में प्रस्तावित सम्मेलन इसी भाव का एक संगम होगा, जिसमें अनेक ऐसे कार्यकर्ता उपस्थित हो रहे हैं जिन्होंने नदियों को पुनर्जीवित करने के सफल प्रयासों के जरिए समाज को संदेश दिया है कि यदि हम नदियों की चिंता करें तो उनकी दशा से सुधार संभव है। इस आयोजन में कई ऐसे किसान भी उपस्थित होंगे जिन्होंने अपने खेतों में रासायनिक जहर उड़ेले बगैर गाय आधारित प्राकृतिक कृषि के माध्यम से सफलता और समृद्धि की गाथा लिखी है। कई ऐसे किसान भी रहेंगे जिन्होंने अपने खेतों को ग्राम्य पर्यटन के मॉडल के रूप में स्थापित किया है। इस अवसर पर लोक भारती की कई ऐसी जिला इकाइयां उत्तम नगर अभियान को लेकर अपने अनुभव साझा करेंगी कि किस प्रकार समाज को साथ लेकर अपने नगर को उत्तम बनाने की दिशा में प्रयास करते हुए सार्थक परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं।

इस सुफल में संपूर्ण लोक भारती परिवार की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है। अतः आप से निवेदन है कि आप अपने सहभाग को सुनिश्चित कर जिला संयोजक के माध्यम से तत्काल आने-जाने सम्बन्धी सूचना देने की कृपा करें, जिससे समुचित व्यवस्थाएं पूर्ण की जा सकें। हमारा विश्वास है कि यह आयोजन लोक भारती द्वारा अंगीकृत समस्त विषयों पर हमारी यात्रा को अधिक गतिमान करेगा।■

-लेखक लोक भारती के सह संपर्क प्रमुख हैं।

मोटे अनाज की खेती देश के छोटे और गरीब किसानों के लिए किसी वरदान से कम नहीं, जिन पर जलवायु परिवर्तन और सूखा-बाढ़ का सर्वाधिक विपरीत प्रभाव पड़ता है। मोटे अनाज की खेती में महंगे एवं जहरीले रासायनिक खाद और कीटनाशकों की जरूरत नहीं पड़ती जिससे खेती की लागत घटाने में प्रभावी रूप से सहायता मिलती है। इस तरह मोटे अनाज देश के पर्यावरण के लिए भी अनुकूल हैं

जलवायु परिवर्तन से खतरे में वैश्विक खाद्य सुरक्षा

मोटे अनाज से होगी प्राण और पोषण की रक्षा

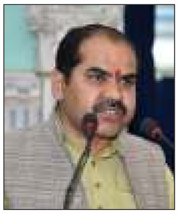

✍ श्रीकृष्ण चौधरी

कार्यकारी संपादक

कोरोना के बाद से वैश्विक खाद्य सुरक्षा गंभीर संकट का सामना कर रही है। इस वर्ष जलवायु परिवर्तन एवं मानसून पर अलनीनो प्रभाव के दुश्प्रभाव ने स्थितियों को और अधिक विशम बना दिया है। परिणाम है कि खाने-पीने की वस्तुओं की कीमतें अनेक देशों में जनता की पहुंच से पार जाती दिख रही हैं। भारत में फिलहाल संकट उतना गंभीर नहीं है लेकिन खाद्य महंगाई आर्थिक प्रबंधकों के लिए परेशानी का कारण बनी हुई है। कीमतों पर नियंत्रण के लिए सरकार द्वारा कई निर्णय लिये गये हैं। इसी क्रम में पिछले महीने भारत ने गैर-बासमती सफेद चावल के निर्यात पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा की। भारत दुनिया का सबसे बड़ा चावल निर्यातक है। लेकिन कहीं बाढ़ तो कहीं सूखे कारण धान का उत्पादन प्रभावित होने की आशंका है। ऐसे में यह कदम घरेलू स्तर पर बढ़ती कीमतों को नियंत्रित करने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उठाया गया है।

दुनिया भर में तीन अरब से ज्यादा लोग चावल को एक मुख्य भोजन के रूप में मानते हैं। भारत वैश्विक चावल के निर्यात में करीब ४० प्रतिशत का योगदान देता है। धान की गर्मी की फसल की बुवाई आमतौर पर जून में शुरू होती है। उस समय मानसून की बारिश शुरू होने की उम्मीद होती है। इस साल देर से मानसून के आगमन से मध्य जून तक पानी का संकट हो गया। जब बारिश आखिरकार हुई, तो इसने देश के बड़े हिस्से को भिगो दिया, जिससे पंजाब और बिहार जैसे धान उत्पादक प्रदेशों में बाढ़ आ गई जिससे फसलों को काफी नुकसान हुआ। वहीं मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में सूखे की स्थितियों ने कृषि को प्रभावित किया है।

विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने पिछले महीने चेतावनी दी कि सरकारों को अधिक चरम

मौसम की घटनाओं और रिकॉर्ड तापमान के लिए तैयार रहना चाहिए। संगठन की तरफ से जलवायु परिवर्तन की घटना अल नीनो की शुरुआत का भी ऐलान किया गया था। अल नीनो एक प्राकृतिक जलवायु पैटर्न है जो उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर में होता है। इसकी वजह से औसत से अधिक समुद्र-सतह का तापमान पैदा होता है और वैश्विक स्तर पर मौसम पर एक बड़ा प्रभाव पड़ता है, जिससे अरबों लोग प्रभावित होते हैं। भारत में हजारों किसानों को इसका असर महसूस हुआ है, जिनमें से कुछ अब चावल के अलावा अन्य फसलें उगाएंगे। विकल्प के रूप में ऐसी फसलों को उपजाने की आवश्यकता है जो जलवायु परिवर्तन के दुश्प्रभावों को बेहतर ढंग से झेलते हुए खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में सहायक बन सकें। ऐसे में मोटे अनाजों की खेती सर्वोत्तम विकल्प है।

मोटे अनाज की खेती देश के छोटे और गरीब किसानों के लिए किसी वरदान से कम नहीं, जिन पर जलवायु परिवर्तन और सूखा-बाढ़ का सर्वाधिक विपरीत प्रभाव पड़ता है। मोटे अनाज

बाजरा, ज्वार, जौ, रागी जैसे मोटे अनाज गेंहूं के आटे में मिलाकर या दूसरे अवतारों में पहले खूब खाए जाते थे लेकिन धीरे धीरे इनकी जगह गेहूं चावल और मैदे ने ले ली। इसकी कई वजहें रहीं। गेहूं और चावल स्वाद में मोटे अनाज से बेहतर माने गए। व्यस्त जीवनचर्या में आसानी से पकने वाले चावल और गेहूं के पिसे हुए पैकेटबंद आटे ने अपनी जगह बना ली। लेकिन कार्बोहाइड्रेट और स्टार्च से भरपूर गेहूं और चावल ने हमें कई जरूरी पोषक तत्वों से दूर कर दिया। खानपान में बदलाव का नतीजा ये हुआ है कि मोटापे, डायबिटीज और दिल की बीमारियों के मामले में देश पहले नंबर पर पहुंच गया

की खेती में महंगे एवं जहरीले रासायनिक खाद और कीटनाशकों की जरूरत नहीं पड़ती जिससे खेती की लागत घटाने में प्रभावी रूप से सहायता मिलती है। इस तरह मोटे अनाज देश के पर्यावरण के लिए भी अनुकूल हैं। मोटे अनाज वाली फसलों की खेती वर्षा आधारित क्षेत्रों के साथ कम उपजाऊ जमीन में भी होती है। विपरीत मौसम को झेलने में इनकी क्षमता बेहतर है।

खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से देखें तो मोटा अनाज कभी भारतीय खाने का अटूट हिस्सा रहा है। बाजरा, ज्वार, जौ, रागी जैसे मोटे अनाज गेंहूं के आटे में मिलाकर या दूसरे अवतारों में पहले खूब खाए जाते थे लेकिन धीरे धीरे इनकी जगह गेहूं चावल और मैदे ने ले ली। इसकी कई वजहें रहीं। गेहूं और चावल स्वाद में मोटे अनाज से बेहतर माने गए। व्यस्त जीवनचर्या में आसानी से पकने वाले चावल और गेहूं के पिसे हुए पैकेटबंद आटे ने अपनी जगह बना ली। लेकिन कार्बोहाइड्रेट और स्टार्च से भरपूर गेहूं और चावल ने हमें कई जरूरी पोषक तत्वों से दूर कर दिया। खानपान में बदलाव का नतीजा ये हुआ है कि मोटापे, डायबिटीज और दिल की बीमारियों के मामले में देश पहले नंबर पर पहुंच गया। इस स्थिति में एक बार फिर स्वास्थ्य विशेषज्ञों को मोटे अनाज की खूबियां याद आईं। फिटनेस को लेकर जागरूक होने वाले भारतीयों को बाजरा, आटे का चोकर, रागी और ज्वार प्रिस्क्रिप्शन में लिखकर दिए जाने लगे।

फिर से देश में मोटे अनाज की मांग बढ़ी है और इसकी एक बड़ी वजह उसका स्वास्थ्यकर होना है। इसके कई लाभ हैं। जानकार मानते हैं

कि बाजरा खाने से ताकत मिलती है। बाजरा कॉलेस्ट्रॉल लेवल को कंट्रोल करता है जिससे हृदय स्वस्थ रहता है। डायबिटीज से बचाव में भी बाजरा काम आता है। बाजरे में फाइबर भरपूर मात्रा में होता है जो पाचन क्रिया को भी ठीक करता है। जौ का पानी पीने से वजन नियंत्रित रहता है। किडनी की सेहत के लिए जौ को अच्छा माना गया है। ज्वार को वैसे तो पशुओं के चारे में बहुत इस्तेमाल किया जाता है लेकिन इसकी एक किस्म में भरपूर मात्रा में पोटैशियम, फॉस्फोरस, कैल्शियम और आयरन पाया जाता है। खून बढ़ाना हो या बीमारियों से दूर रहने के लिए इम्यून सिस्टम मजबूत करना हो, ज्वार बहुत काम आता है। गेहूं और धान यानी चावल के मुकाबले मोटे अनाजों की खेती में पानी की खपत बहुत कम होती है। इसके अलावा इसकी खेती के लिए यूरिया और दूसरे रसायनों की जरूरत भी नहीं पड़ती. ऐसे में ये पर्यावरण के लिए भी बेहतर हैं।

वह मोटा और सस्ता अनाज जिसे पशुओं के चारे के लायक समझकर बेरुखी से थाली से गायब कर दिया गया, आज अपनी अहमियत रागी बिस्किट, ओटमील दलिया और मिलेट म्यूसली के स्मार्ट अवतार धर कर बता रहा है। खान-पान को लेकर दादी-नानी के नुस्खों और सीख को पुराना और आउटडेटेड समझने वालों को अब जिम ट्रेनर और न्यूट्रीशनिस्ट वही बातें नए तरीके से समझा रहे हैं। मोटे अनाज को प्रोत्साहन मिलना खेती को जहरीले उर्वरक और कीटनाशक से मुक्ति दिलाने में सहायक होने वाला है। इससे जहां एक ओर नागरिक एवं पर्यावरण स्वास्थ्य में सुधार होगा, वहीं दूसरी तरफ रासायनिक उर्वरक के आयात और सब्सिडी पर हो रहे भारी खर्च से मुक्ति मिलेगी जिससे देश की आर्थिक सेहत में व्यापक सुधार हो सकता है। मोदी सरकार ने मोटे अनाजों को मुख्यधारा में लाने के लिए तमाम प्रयास किए हैं। विशेषकर अप्रैल २०१८ से सरकार मोटे अनाजों का उत्पादन बढ़ाने के लिए मिशन मोड में काम कर रही है। उनके न्यूनतम समर्थन मूल्य में अच्छी-खासी वृद्धि की है। कई राज्यों में भी मोटे अनाज की खेती को बढ़ावा देने के लिये अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। मौसम के बिगड़ते मूड का सामना करते हुए खाद्य और पोशण सुरक्षा को सुनिश्चित करना मोटे अनाज की उपज और उपयोग बढ़ाकर ही संभव है।■

-लेखक लोक भारती के राष्ट्रीय संपर्क प्रमुख हैं।

मोटे अनाज, मक्का, बाजरा एवं ज्वार की खरीद के लिए पंजीकरण शुरू

एक अक्टूबर से होगी खरीद

किसानों से पंजीकरण कराकर न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना का लाभ उठाने की अपील की गई है। आगामी एक अक्टूबर, 2023 से 31 दिसम्बर, 2023 तक खरीद की जाएगी। मक्का, बाजरा एवं ज्वार की बिक्री के लिए एप आधारित पंजीकरण की व्यवस्था है। न्यूनतम समर्थन मूल्य पर किसानों से मोटे अनाज, मिलेट्स (श्री अन्न) मक्का, बाजरा एवं ज्वार की खरीद के लिए पंजीकरण शुरू हो गया है। मक्का, बाजरा एवं ज्वार की बिक्री के लिए किसानों को खाद्य एवं रसद विभाग की वेबसाइट अथवा विभाग के मोबाइल एप पर पंजीकरण कराना अनिवार्य है। पंजीकृत किसानों से ही मक्का, बाजरा एवं ज्वार क्रय किया जाएगा। खाद्य आयुक्त सौरभ बाबू ने किसानों से पंजीकरण कराकर न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना का लाभ उठाने की अपील की है। उन्होंने बताया कि आगामी एक अक्टूबर, 2023 से 31 दिसम्बर, 2023 तक खरीद की जाएगी। मक्का, बाजरा एवं ज्वार की बिक्री के लिए एप आधारित पंजीकरण की व्यवस्था है। इसका भुगतान पीएफएमएस के माध्यम से सीधे किसानों के आधार लिंक बैंक खाते में करने की व्यवस्था की गयी है। किसानों की सुविधा के लिए नॉमिनी की व्यवस्था भी की गयी है।

ये मिलेगा न्यूनतम समर्थन मूल्य

मक्का - 2090 रुपये प्रति कुंतल,बाजरा - 2500 रुपये प्रति कुंतल,ज्वार (हाइब्रिड) - 3180 रुपये प्रति कुंतल,ज्वार (मालदाण्डी) - 3225 रुपये प्रति कुंतल मक्का खरीद बुलंदशहर, हापुड़, सहारनपुर, बदायूं, अलीगढ़, एटा, कासगंज, फिरोजाबाद, मैनपुरी, हरदोई, उन्नाव, सीतापुर, कानपुर नगर, कानपुर देहात, कन्नौज, इटावा, फर्रूखाबाद, औरैया, गोंडा, बहराइच, श्रावस्ती, बलिया, जौनपुर, देवरिया, मिर्जापुर, सोनभद, लखीमपुर खीरी, आजमगढ़ एवं ललितपुर में की जाएगी। इसी तरह बाजरा की खरीद बुलंदशहर, गौतमबुद्धनगर, बरेली, बदायूं, शाहजहांपुर, मुरादाबाद, रामपुर, संभल, अमरोहा, अलीगढ़, कासगंज, एटा, हाथरस, आगरा, मथुरा, मैनपुरी, फिरोजाबाद, सीतापुर, हरदोई, उन्नाव, कानपुर नगर, कानपुर देहात, इटावा, औरैया, कन्नौज, फर्रुखाबाद, वाराणसी, जौनपुर, गाजीपुर, चन्दौली, बलिया, मिर्जापुर, संतरविदास नगर, जालौन, चित्रकूट, बांदा, प्रयागराज, कौशाम्बी, फतेहपुर एवं प्रतापगढ़ में होगी। ज्वार खरीद बांदा, चित्रकूट, हमीरपुर, महोबा, कानपुर नगर, कानपुर देहात, प्रयागराज, फतेहपुर, कौशाम्बी, प्रतापगढ़, जौनपुर, गाजीपुर, रायबरेली, सीतापुर, उन्नाव, हरदोई, सुलतानपुर, अमेठी, मिर्जापुर, जालौन, अयोध्या एवं वाराणसी में की जाएगी। किसान किसी भी सहायता के लिए टोल फ्री नंबर 1800-1800-150 या संबंधित जनपद के जिला खाद्य विपणन अधिकारी, तहसील के क्षेत्रीय विपणन अधिकारी या ब्लॉक के विपणन निरीक्षक से संपर्क कर सकते हैं।■

हरियाली तीज एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम

घैला घाट गोमती नदी पर लोक भारती का आयोजन

विजय बहादुर सिंह
अध्यक्ष, लोक भारती

गोमती नदी के लखनऊ मे प्रवेश द्वार पर आईआईएम रोड स्थित घैला घाट पर दिनांक १६ अगस्त को लोक भारती की ओर से हरियाली तीज कार्यक्रम तथा वृक्षारोपण किया गया। रंग-बिरंगे पोशाक मे महिलाओ ने सावन में पारंपरिक कजरी गीत गाया जिसका आनंद वहां पर उपस्थित लोक भारती के कार्यकर्ताओं तथा घाट पर उपस्थित अन्य लोगों ने लिया। इस अवसर पर अपने-अपने घरों से महिलाओं द्वारा बनाकर लाये गये पकवान का रसास्वादन उपस्थित सभी लोगों को कराया गया। भोजपुरी गायक कृष्णानंद राय के कजरी तथा पर्यावरण गीतों ने सभी को आनंदविभोर कर दिया।

इस अवसर पर घैला घाट पर आयी हुई बहन तथा भाइयो ने संकल्प लिया कि जनसहयोग से गोमती नदी के घैला घाट को स्वच्छ सुन्दर और स्नान योग्य बनायेंगे। घाट पर हरिशंकरी (पीपल, बरगद और पाकड) के पेड लगायें। घाट पर प्रत्येक रविवार को एकत्रीकरण का संकल्प लिया गया तथा घाट के सौन्दर्यीकरण हेतु महापौर नगर निगम लखनऊ से मिलकर ज्ञापन देने का निर्णय लिया गया। उपरोक्त कार्यक्रम का नेतृत्व श्रीमती शिखा सिंह, संयोजक लोक भारती, लखनऊ उत्तर द्वारा किया गया। शिखा सिंह के साथ सुषमा अवस्थी, अर्चना, रेखा, दीपा, किरन सिंह, नीरा गर्ग, मालती सिंह, सुषमा दीक्षित, शकुन्तला और मंजू मिश्रा ने पूरे उत्साह के साथ सहभाग किया। उक्त कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित महिलाओं के अलावा अनिल सिंह, दिलीप सिंह, के बी सिंह, उमेश कुमार गुप्ता, प्रदीप दीक्षित, गोपाल शर्मा सहित अनेक महानुभावों की उपस्थित रही। पर्यावरण, जल संरक्षण तथा गोमती नदी के महत्व पर लोक भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री बृजेन्द्र पाल सिंह ने प्रकाश डाला। इस अवसर पर लोक भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय बहादुर सिंह, राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री गोपाल उपाध्याय सहित अनेक पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। इस अवसर पर निर्णय लिया गया कि प्रत्येक रविवार को शिखा सिंह के नेतृत्व में लोक भारती द्वारा घैला घाट के

निर्मलीकरण का अभियान चलाया जाएगा। इसके उपरांत प्रत्येक रविवार को उपरोक्त घाट पर लोक भारती के कार्यकर्ता जुट कर स्वच्छता अभियान चला रहे हैं। यह अभियान अभी आरंभ ही हुआ है लेकिन इसके सकारात्मक परिणाम घैला घाट पर परिलक्षित होने लगे हैं। यह सार्थक परिवर्तन देख कर स्थानीय समाज भी निरंतर इस अभियान से जुड़ता जा रहा है। इसके पूर्व लखनउ में गोमती के गौ घाट को लोक भारती द्वारा साप्ताहिक सामूहिक श्रमदान के माध्यम से 'स्वच्छ घाट' के मॉडल के रूप विकसित किया गया है। घैला घाट भी अब उसी ओर अग्रसर है।■

लोक भारती का मार्गदर्शन, सरकार का सहयोग
'मां तमसा गौशाला' गौ संरक्षण का अनुपम प्रयोग

राकेश कुमार पांडेय

ऐसे समय में जब आए दिन मानव और निराश्रित गौवंश में टकराव की खबर चर्चा में रहती हैं, क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसी जगह का दौरा करना कैसा होगा जहां गायें, पर्यावरण-पर्यटन और गांव का विकास सामंजस्यपूर्ण रूप से मिलते हैं ? ऐसा स्थान आजमगढ़ में लोक भारती के संयोजन में जिला प्रशासन, विशेषकर वन विभाग आजमगढ़ ने विकसित किया है। मां तमसा गौशाला नाम से संचालित इस प्रयास ने सफलतापूर्वक गौशाला को एक ऐसे इको-पर्यटन स्थल में बदल दिया है जो पर्यावरण और जानवरों दोनों को लाभ पहुंचाता है। मां तमसा गौशाला गाँव उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ के पल्हनी के तमौली ब्लॉक में स्थित है। हरियाली, ताजी हवा और प्राकृतिक सुंदरता के सही मिश्रण वाला यह गाँव हमेशा से एक शांत जगह रहा है जो देखने वालों को मंत्रमुग्ध कर देता है। हालाँकि, वन विभाग आजमगढ़ द्वारा वृक्षारोपण परियोजना के लिए रखे गए दूरदर्शी प्रस्ताव के कारण, पिछले साल तक इस गाँव में अभूतपूर्व सकारात्मक बदलाव नहीं हुए थे। वन विभाग ने इस परियोजना को परिश्रमपूर्वक क्रियान्वित किया है, जिससे क्षेत्र की वनस्पति की सतत वृद्धि सुनिश्चित हुई है और सभी जीवित प्राणियों के लिए जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। सावधानीपूर्वक योजना और रणनीतिक वृक्षारोपण के माध्यम से, उन्होंने आजमगढ़ को पहली गाय सेंचुरी बना दिया है- एक ऐसी जगह जहां गायें हरे-भरे परिदृश्य में स्वतंत्रता और शांति से घूम सकती हैं।

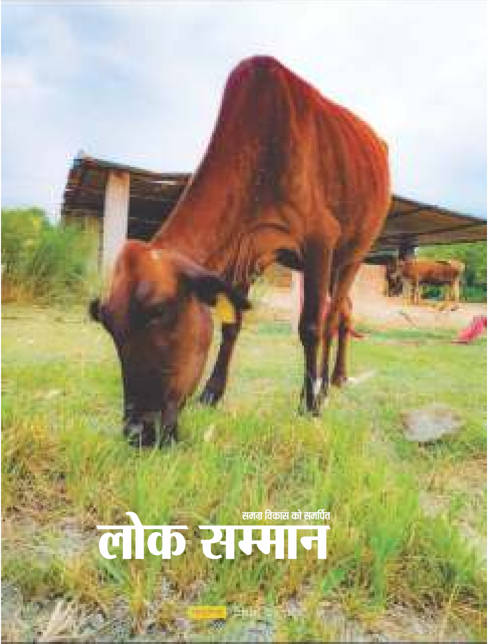

गाय सेंचुरी परियोजना ने अनेक उल्लेखनीय परिणाम प्राप्त किए हैं। मात्र एक वर्ष में गायों की संख्या 70 से बढ़ाकर 500 हो गई है। गायों के लिए पर्याप्त भोजन, पानी, चिकित्सा देखभाल और सुरक्षा की व्यवस्था है। संपूर्ण गौशाला एवं समीपवर्ती क्षेत्र की जैव विविधता और पारिस्थितिक संतुलन को बढ़ावा देने के लिये 20 हजार से अधिक पौधे रोपित गए हैं जिनकी सुरक्षा और संरक्षा की व्यवस्था की गई है

गाय सेंचुरी एक अनूठी अवधारणा है जिसका उद्देश्य बूढ़ी, बीमार और निराश्रित गायों, बैलों और बछड़ों को आश्रय और देखभाल प्रदान करना है। जिला प्रशासन एवं वन विभाग ने इस अवधारणा को वास्तविक बनाने के लिए लोक भारती के कार्यकर्ता इंजीनियर राकेश कुमार पांडेय द्वारा स्थापित अनिका एजुकेशनल एंड हेल्थ वेलफेयर ट्रस्ट के साथ सहयोग किया है। गाय सेंचुरी परियोजना ने अनेक उल्लेखनीय परिणाम प्राप्त किए हैं। मात्र एक वर्ष में गायों की संख्या ७० से बढ़ाकर ५०० हो गई है। गायों के लिए पर्याप्त भोजन, पानी, चिकित्सा देखभाल और सुरक्षा की व्यवस्था है। संपूर्ण

गौशाला एवं समीपवर्ती क्षेत्र की जैव विविधता और पारिस्थितिक संतुलन को बढ़ावा देने के लिये २० हजार से अधिक पौधे रोपित गए हैं जिनकी सुरक्षा और संरक्षा की व्यवस्था की गई है। गाय सेंचुरी स्थानीय ग्रामीणों, विशेषकर महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर और आय के स्रोत पैदा करने के प्रयास भी कर रही है जिसमें उत्साहजनक सफलता मिल रही है। गौ संरक्षण और पशु कल्याण के लिए जागरूकता के प्रसार का प्रयास भी किया जा रहा है। गाय सेंचुरी परियोजना ने न केवल प्रकृति के संरक्षण को बढ़ावा दिया है बल्कि मनुष्यों और जानवरों के बीच संबंध को भी मजबूत किया है। ग्रामीणों में गायों के प्रति सम्मान और स्नेह की भावना विकसित हुई है और वे उनकी देखभाल और प्रबंधन में अधिक शामिल हो गए हैं। गायें भी मनुष्यों के प्रति अधिक मित्रवत और भरोसेमंद हो गई हैं और उन्होंने खुशी और कल्याण के लक्षण दिखाए हैं।

गाय सेंचुरी परियोजना ने क्षेत्र में पर्यटन विकास की नई संभावनाएं भी खोली हैं। हरे-भरे परिदृश्य, शांत वातावरण के साथ, एक प्रामाणिक ग्रामीण अनुभव चाहने वाले पर्यटकों को आकर्षित करने की अपार संभावनाएं हैं। लोग यहां पर्यटक का आनंद लेने के साथ ही जड़ों से जुड़ने का अनुभव करते हैं। मां तमसा गौशाला क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता और विविधता की खोज का केंद्र बनती जा रही है। यहा आकर आप ग्रामीणों की सरल और शांतिपूर्ण जीवनशैली का अनुभव कर सकते हैं। खेती, बागवानी, खाना बनाना आदि जैसी विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने का अवसर होता है। मां तमसा गौशाला स्थानीय अर्थव्यवस्था और सामुदायिक विकास बढ़ावा देने के लिये प्रयासरत रही है।

वर्तमान में निराश्रित जानवरों को एक समस्या के रूप में देखा जा रहा है। ऐसे में मां तमसा गौशाला किसानों और निराश्रित जानवरों के मध्य संवेदना और सहजीवन का एक मॉडल प्रस्तुत करती है

अनिका एजुकेशनल एंड हेल्थ वेलफेयर ट्रस्ट के संस्थापक के रूप में मुझे माँ तमसा गौशाला के विकास में अमूल्य योगदान के लिए लोक भारती, जिला प्रशासन, विशेषकर सीडीओ प्रकाश गुप्ता एवं वन विभाग आजमगढ़ के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए बहुत गर्व हो रहा है। उनके अटूट समर्थन ने हमें जरूरतमंद गायों को आश्रय और देखभाल प्रदान करने के हमारे मिशन के करीब ला दिया है। हालांकि, मां तमसा गौशाला के बुनियादी ढांचे और सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए अभी भी बहुत काम किया जाना बाकी है। इस परियोजना को अधिक टिकाऊ और सफल बनाने के लिए हमें अधिक धन, संसाधनों और स्वयंसेवकों की आवश्यकता है। इसलिए स्थानीय समाज से इस नेक प्रयास में सक्रिय रूप से भाग लेने की अपेक्षा है। गौशाला के लिए शेड, बाड़, पानी की टंकियों आदि के निर्माण और रखरखाव में सहायता के लिए धन या सामग्री दान कर सकते हैं। गाय या बछड़े को भोजन, दवा आदि उपलब्ध कराने के लिए गोद ले सकते हैं। भोजन, सफाई आदि जैसे दैनिक कार्यों में मदद करने के लिए मां तमाशा गौशाला में जाकर गौसेवा और सहयोग किया जा सकता है। सोशल मीडिया या मौखिक माध्यम से मां तमसा गौशाला के लिए जागरूकता और प्रशंसा फैलाना भी हमें प्रोत्साहित करेगा।

वन विभाग आजमगढ़ ने माँ तमसा गौशाला गाँव को सफलतापूर्वक एक उल्लेखनीय इको-पर्यटन स्थल में बदल दिया है, जिससे पर्यावरण और जानवरों दोनों को लाभ होता है। यह परियोजना न केवल प्रकृति के संरक्षण को बढ़ावा देती है बल्कि मनुष्यों और जानवरों के बीच के बंधन को भी मजबूत करती है। वर्तमान में निराश्रित जानवरों को एक समस्या के रूप में देखा जा रहा है। ऐसे में मां तमसा गौशाला किसानों और निराश्रित जानवरों के मध्य संवेदना और सहजीवन का एक मॉडल प्रस्तुत करती है। आइए हम हाथ मिलाएं और एक हरित, अधिक दयालु भविष्य के लिए इस पहल को आगे बढ़ाना जारी रखें।■

विकास के नाम पर प्रकृति से छेड़छाड़

हिमालय बना आपदा का घर

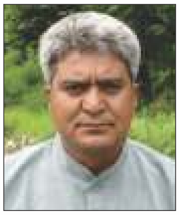

सुरेश भाई

हिमालय आपदा का घर बन गया है। पहाड़ तेजी से दरक रहे हैं। हाहाकार मचा हुआ है। हिमाचल और उत्तराखंड में २४ जून से २१ अगस्त २०२३ के दौरान भारी बारिश में भूस्खलन से सैकड़ों लोग मारे गए हैं। हिमाचल में ८०० से अधिक स्थानों पर सड़के बंद रही हैं जिसमें ११३ स्थान ऐसे हैं, जहां जानलेवा लैंड स्लाइड के कारण लगभग ३३० लोगों की जान चली गई। इसमें से ३८ लोग अभी लापता हैं। उत्तराखंड में ३६० से अधिक डेंजर जोन बन गए हैं जिसके चलते ४४६ स्थानों पर सड़कें बंद रही है। यहां लगभग ७८ लोग मारे गए हैं जिसमें से १८ लोग लापता हैं। हिमालय के निचले राज्यों में भी नजर डालें तो १६ जुलाई २०२३ तक गुजरात, कर्नाटक, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, असम, मणिपुर, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र आदि राज्यों में ६२४ लोगों की मरने की खबर आई थी, जिसकी संख्या लगभग १००० तक पहुंच सकती है।

हिमाचल में व्यास, रावी और सतलुज नदी के तटों की आबादी पर अधिक मार पड़ी है। भारी जल सैलाब के खतरे को देखकर नदियों की अविरल धारा को रोकने वाले बांधो के गेट खोलने पड़े हैं जिसके कारण लुधियाना, पटियाला जैसे अनेक इलाके लंबे समय तक पानी में डूबे रहे हैं। इसी तरह यमुना पर हथिनी कुंड के पास गेट खोलने से यमुनानगर, करनाल से लेकर दिल्ली तक पानी में डूबे रहे हैं। आंकड़े बताते हैं कि इतनी भारी तबाही के बावजूद भारत के कई हिस्सों में २०२२ की तुलना में कम बारिश हुई है। तेलंगाना, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र सहित १२ राज्यों में कम बारिश हुई है।

> **पहाड़ों में लगातार चल रहे वन कटान और पर्यटकों की अधिक चाह में जितने भी निर्माण कार्य हो रहे हैं, अधिकांश इसी के द्वारा जिंदगियों पर आपदाओं की लकीरें खींच दी गयी है। दोष यह भी है कि नेता एवं योजनाकार पहाड़ और मैदान के अंतर को नहीं समझना चाहते हैं, जबकि भविष्य में इसके और अधिक दुष्परिणाम भुगतने पड़ेंगे**

हिमाचल प्रदेश में सिरमौर में ७६२.३ मिमी बारिश हुई है। इसी तरह सोलन, कांगड़ा, बिलासपुर, शिमला, मंडी, कुल्लू , किन्नौर में भी बारिश हुई है जिसके कारण भाखड़ा नांगल बांध के गेट ३५ वर्ष बाद खोले गये हैं। इसके प्रभाव से होशियारपुर, रोपड़, गुरदासपुर, कपूरथला, फिरोजपुर, फाजिल्का, अमृतसर और तरनतारन में बाढ़ जैसी हालत पैदा हुई है। उत्तराखंड में चारधाम की तरफ जाने वाली सड़कों पर ही सबसे अधिक भूस्खलन हुआ है।

हिमालय के विषय पर कहा जा रहा है कि पिछले एक दशक की आपदाओं से कोई सबक न लेते हुए, जहां-जहां पर चौड़ी सड़कें बनायी जा रही हैं उन्ही जगहों से सबसे अधिक भूस्खलन हो रहा है। दूसरा यह कि बाढ़ के

शिमला का 25 प्रतिशत हिस्सा डेंजर जोन बन रहा है। यहां इसी वर्षाकाल में शिव मंदिर और एक बड़ी इमारत के ढहने से दर्जनभर लोगों ने जान गंवाई है। यहां के बारे में वैज्ञानिकों का कहना था कि शिमला अधिक से अधिक 25 हजार लोगों के रहने के लिए ही उपयुक्त है लेकिन सैलानियों के लिए अधिक से अधिक होटल बनाने की होड़ में हजारों पेड़ काटे गए हैं। यहां की ढालदार पहाड़ियों को खोदकर मलबा निकाला गया

दौरान नदियों के बहाव को अवरुद्ध करने वाली बांध परियोजनाओं के गेट खोलने से भी नदी तटों के निकटवर्ती स्थानों पर रहने वाले लोग भीषण आपदा की चपेट में आए हैं। पहाड़ों में लगातार चल रहे वन कटान और पर्यटकों की अधिक चाह में जितने भी निर्माण कार्य हो रहे हैं, अधिकांश इसी के द्वारा जिंदगियों पर आपदाओं की लकीरें खींच दी गयी है। दोष यह भी है कि नेता एवं योजनाकार पहाड़ और मैदान के अंतर को नहीं समझना चाहते हैं, जबकि भविष्य में इसके और अधिक दुष्परिणाम भुगतने पड़ेंगे।

इसका उदाहरण है कि दुनिया के पर्यटकों, सैलानियों को आकर्षित करने वाले 'जोशीमठ' में पिछले एक वर्ष से हो रहे भारी भू-धंसाव के बाद कर्ण प्रयाग, शिमला, चंबा, उत्तरकाशी के मस्ताडी, कुंजन गांव से भी भारी नुकसान की तस्वीरें सामने आ रही है। मसूरी की खूबसूरती पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। चमोली में ९० परिवारों के ३६६ लोग राहत शिविरों में शरण लिए हुए हैं।

शिमला का २५ प्रतिशत हिस्सा डेंजर जोन बन रहा है। यहां इसी वर्षाकाल में शिव मंदिर और एक बड़ी इमारत के ढहने से दर्जनभर लोगों ने जान गंवाई है। यहां के बारे में वैज्ञानिकों का कहना था कि शिमला अधिक से अधिक २५ हजार लोगों के रहने के लिए ही उपयुक्त है लेकिन सैलानियों के लिए अधिक से अधिक होटल बनाने की होड़ में हजारों पेड़ काटे गए हैं। यहां की ढालदार पहाड़ियों को खोदकर मलबा निकाला गया। बहुमंजिली इमारतें ७० डिग्री पर बनी है जो भारी बारिश में नीचे की ओर कभी भी फिसल सकती है। इसे देखकर २०१५ में उच्च न्यायालय ने यहां २ लाख से अधिक आबादी बढ़ने पर चिंता जाहिर की थी। अतिक्रमण का भी संज्ञान लिया गया था। कहा जाता है कि १९८०-९० के बीच में बिना नक्शे, बिना प्लान पास किये ऊंची-ऊंची बिल्डिंग बनाने का सिलसिला शुरू हो गया था। जबकि वहां पर ढाई मंजिला से अधिक ऊंचे मकान बनाने की स्वीकृति नहीं थी। इसका दुष्परिणाम है कि आज शिमला के चारों ओर आपदा के जख्म बढ़ते जा रहे हैं।

अलकनंदा और पिंडर नदी के संगम पर बसे कर्णप्रयाग में भी भू-धंसाव, दरारें बढ़ती जा

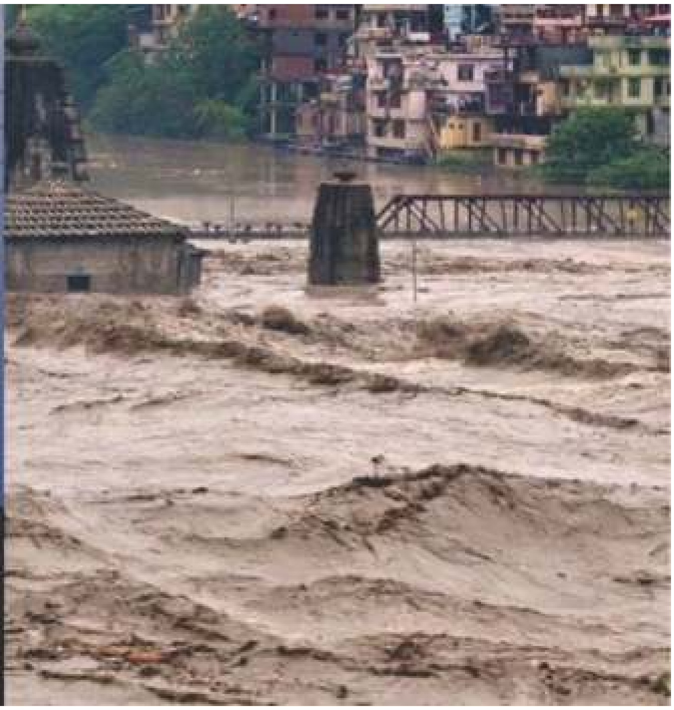

रही है। बरसात के दिनों में रात गुजारना किसी मौत के इंतजार से कम नहीं है। देहरादून से मसूरी के पहाड़ को खोदकर केंपटी फॉल तक पर्यटकों को आसानी से पहुंचने के लिए टनल प्रस्तावित है। यहां के जन सरोकारों से जुड़े जयप्रकाश उत्तराखंडी का कहना है कि मसूरी चूने के पहाड़ पर बसा है। इस पर बने बहुमंजिली इमारतें और अनियंत्रित पर्यटकों को सहन करने की शक्ति घट रही है। इस संभावित खतरे से निपटने के बजाय हर दिन लाखों पर्यटकों के सैरगाह के लिए जितनी भी सुविधाएं पर्यावरण की बर्बादी करके की जा सकती है, उसमें कोई कोर कसर नहीं छोड़ी जा रही है।

पहाड़ की चोटी पर बसे हुए टिहरी गढ़वाल जिले के चंबा में सड़क चौड़ीकरण का काम तो हुआ ही, इसके साथ यहां की धरती के नीचे टनल बनायी गई है जिसके ऊपर हजारों लोग निवास करते हैं। अभी २१ अगस्त को पहाड़ दरकने से अनेकों लोग मलबे के नीचे आकर मर गये। आम लोगों के घर भी दब गए हैं। इसी तरह केदारनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग एक दशक से जानलेवा बना हुआ है। २०१३ की आपदा में यहां पर हजारों लोगों ने जान गंवाई थी। इसके बाद भी गौरीकुंड जो केदारनाथ से पहले १५ किमी पर है, यहां पिछले दिनों २२ लोग भूस्खलन में मारे गए जिसमें से १८ लोगों का अभी तक लापता है। केदारनाथ राष्ट्रीय मार्ग पर सड़क चौड़ीकरण के बाद जो मकान किनारों पर बने हुए हैं वे भी ताश के पत्तों की तरह गिरे हैं। यहां अनेक तीर्थयात्रियों ने अपनी जान गंवा दी है। यमुनोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग में औजरी डाबर कोट के पास डेंजर बना हुआ हैं। बद्रीनाथ जाने वाले राजमार्ग पर भी पीपलकोटी में १२ परिवारों ने अपना घर छोड़ा है। उनकी सैकड़ों नाली जमीन भी भूस्खलन की चपेट में समाप्त हो गई है। गंगोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक दर्जन डेंजर जोन हैं। यहां स्थित गंगनानी में गुजरात के तीर्थयात्रियों की एक बस अनियंत्रित हुयी जिसमें से ७ लोग मारे गए है।

केदारनाथ के बाद बद्रीनाथ में भी पुनर्निर्माण एवं सौंदर्यीकरण के नाम पर पंच धाराओं में से दो धाराएं 'कुर्मधारा' एवं 'प्रहलाद धारा' का पानी छीज रहा है। मंदिर के नीचे बुलडोजर चलाने से यहां की धरती पर बहुत गहरे घाव पड़ रहे हैं। मशहूर पर्यावरणविद् चंडी प्रसाद भट्ट ने बद्रीनाथ धाम के भू-गर्भीय, भू-प्राकृतिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र की याद दिलाते हुए राज्य सरकार को १८०३, १६३०, १६४६, १६५४, १६७६, २००७, २०१३, २०१४ में आयी आपदाओं के दुष्प्रभाव का जिक्र करते हुए पत्र लिखा है कि १६७४ में बिरला ग्रुप के जय श्री ट्रस्ट द्वारा बद्रीनाथ धाम के स्वरूप को बदलने के इसी तरह के प्रयास का विरोध हुआ था। तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार के वित्त मंत्री नारायण दत्त तिवारी की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई थी जिसने इस कार्य को रोक दिया था। इस प्रकार बद्रीनाथ के सौंदर्यीकरण के नाम पर करोड़ों रुपए खर्च करने के बाद यदि कोई संभावित नुकसान को नजरअंदाज किया जा रहा है तो इसकी जिम्मेदारी बाद में कोई लेने को तैयार नहीं होगा। इसी तरह भाजपा के नेता रविंद्र जुगरान का कहना है कि जब ५० वर्ष पहले बद्रीनाथ में पुनर्निर्माण को नकारा गया था तो आज की स्थिति में यह कैसे संभव हो सकता है?

केदारनाथ का पुनर्निर्माण तो भीषण आपदा के कारण हुआ है। बद्रीनाथ में अभी बहुत कुछ बचा हुआ है। यथावत स्थिति को रखते हुए यहां के संवेदनशील पर्यावरण को बचाना आवश्यक है। अतः उच्च हिमालयी क्षेत्रों में कम से कम छेड़छाड़ हो। इस प्रकार हिमालय क्षेत्र में एक तरफ भीषण आपदाएं आ रही है तो दूसरी तरफ आपदा प्रभावित क्षेत्रों में ही विकास के नाम पर छेड़छाड़ के प्रति जो सावधानी रखनी चाहिए थी, वह कहीं दिखाई नहीं देती है। ऐसी स्थिति में हिमालय को आपदा का घर बनने में कोई नहीं रोक सकता है।

-लेखक सामाजिक कार्यकर्ता व रक्षा सूत्र आंदोलन के प्रेरक है।

हर घर बिजली आई
घर-घर खुशियां छाईं
पॉवर फॉर ऑल के तहत
1.58 करोड़ घरों में
नि:शुल्क बिजली
कनेक्शन
1,21,324 मजरों का विद्युतीकरण
शत-प्रतिशत घरों तक विद्युत आपूर्ति
ग्रामीण क्षेत्रों में 18 से 20 घंटे, तहसील मुख्यालय पर
21 से 22 घंटे एवं जनपद मुख्यालय पर 24 घंटे विद्युत आपूर्ति
33/11 केवी के 736 नए विद्युत उपकेंद्र स्थापित एवं
1,528 विद्युत उपकेंद्रों की क्षमता वृद्धि
1,000 से अधिक आबादी वाले
12,137 ग्रामों / मजरों में 26,805 किमी एबी केबल स्थापना
8.60 लाख अनमीटर्ड विद्युत उपभोक्ताओं के परिसरों में मीटर संयोजन
30,462 मेगावाट से अधिक विद्युत उत्पादन क्षमता
स्मार्ट मीटरिंग एवं विद्युत तंत्र के आधुनिकीकरण
के लिए रिवैम्पड डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर स्कीम
निजी नलकूप कनेक्शन देने में डार्क जोन में लगा
प्रतिबंध समाप्त, 1 लाख से अधिक किसान लाभान्वित
निजी नलकूप के बिजली बिलों में 100 फीसदी की छूट का निर्णय,
खराब ट्रांसफार्मर 24 घंटे में बदलने की व्यवस्था
₹8,608.50 करोड़ के निजी पूंजी निवेश से
1,913 मेगावाट क्षमता की परियोजनाएं स्थापित
सोलर रूफटॉप प्लांट कार्यक्रम के तहत
290 मेगावाट क्षमता की परियोजनाओं की स्थापना
सार्वजनिक पथ प्रकाश हेतु 21,197 सोलर स्ट्रीट लाइट संयंत्रों की स्थापना
कम्प्रेस्ड बायोगैस प्लांट, बायो कोल, बायो डीजल/बायो एथेनॉल को प्रोत्साहन
सौभाग्य योजना के अंतर्गत 53,354 सोलर पावर पैक संयंत्रों की स्थापना
गोरखपुर में कम्प्रेस्ड बायोगैस प्लांट की स्थापना
बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे का 'सोलर एक्सप्रेस-वे' के रूप में होगा विकास
निर्बाध बिजली का उपहार - डबल इंजन की सरकार

लोग सोचे-समझे प्राकृतिक संसाधनों का दोहन तेजी से करने लगे हैं और उनके लिए प्रकृति प्रदत्त वस्तुएं केवल व्यापार की उत्पाद वस्तु हो गई हैं। यह विचार करना अति आवश्यक है कि प्राण वायु प्रदान करने वाले इन पेड़ों का मनुष्य जीवन, पर्यावरण संतुलन एवं वर्तमान एवं भविष्य से क्या संबंध है और इनके समाप्त होने का दूरगामी परिणाम कितना भयंकर हो सकता है। क्या इन पेड़ों की मौजूदगी के बगैर धरती पर जीवन संभव है ? कदापि नहीं !

बढ़ रही उमस और तापमान

संकट में प्राणवायु के ही प्राण

✍ अभिषेक कुमार

शहर में गर्मी बहुत भीषण हो रही थी। चिपचिपी गर्मी तन-बदन को पसीने से तरबतर कर रही थी। पंखे और कूलर की हवावों में ठंडक का एहसास नहीं हो रहा था। बस घुटन ही घुटन चारो तरफ व्याप्त थी। भीषण गर्मी दैनिक जीविकोपार्जन के कार्यो में दखल दे रही थी। शहर के लोग गर्मी से परेशान थे और वह बार-बार यही जानना चाह रहे थे कि मानसून कब दस्तक देने वाला है! भारत में छह प्रकार की ऋतुओं होने का वर्णन है, पर गर्मी की समय सीमा तो बढ़ती ही चली जा रही है। यहाँ मार्च माह आखिर से सितंबर माह तक कमोबेश गर्मी रहती है एवं इस अवधि में पंखे, कूलर की आवश्यकता होती है। मुझे लगा कि इन शहरों में कंक्रीट के जंगल होने के कारण गर्मी अत्यधिक हो सकती है। इधर कुछ दिनों से माँ की याद बहुत आ रही थी, तो मुझे लगा कि चलो चलें ग्राम दर्शन की ओर। मां के हाथों के प्यार की ठंडक मिलेगी और खुले वातावरण होने के कारण गर्मी से निजात भी मिलेगी। मैंने झट-पट बैग पैक किया और निकल पड़ा अपने गाँव की सोंधी मिट्टी की ओर।

वहां पहुंचने पर पता चला कि ग्रामीण इलाके में भी गर्मी का वही मंजर था, जैसे शहर में था। ग्रामीण समुदाय भी गर्मी से बड़ा परेशान था और वे मुझे देख कर पूछने लगे कि तुम शहर से आये हो तो हम सबको बताओ कि गर्मी से कब निजात मिलेगी ? कब से बरसात होने वाली है ? धरती जल रही है, जल के कोई उचित सार्वजनिक स्रोत न होने के कारण भारी संख्या में पक्षी एवं जीव-जंतु मर रहे हैं। धरती का जलस्तर भी पहले की अपेक्षा नीचे चला गया है। ग्रामीण इलाके के अधिकांश चापाकल सूख चुके हैं। जिनका समरसेबल का बोर है, पानी की उपलब्धता फिलहाल उनके घर ही उपलब्ध है। तभी हमने कुछ ट्रैक्टरों पर पीपल-बरगद के कटे पेड़ जाते देखा। हमने ग्रामीणों से पूछा कि इन पीपल-बरगद को असमय में काट कर इसकी क्या उपयोगिता है ? ग्रामीणों ने बताया कि घर की ढलाई हेतु शटरिंग उद्योग में इसका बड़े पैमाने में उपयोग किया जा रहा है तथा यह सस्ता भी पड़ता है और काट-छांट में सहूलियत होती है। पड़ताल करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि दादा-परदादा के जमाने के लगाए हुए पीपल-बरगद के पेड़ आज बड़े धड़ल्ले से ग्रामीण इलाकों में काट व्यापारीकरण हो रहा है। आज के पंद्रह-बीस साल पहले इन पेड़ों को कोई छेड़ता नहीं था तथा ग्राम के आसपास चौक-चौराहे, पगडंडियों पर ये पेड़ देखने को मिलते थे और उस पेड़ के नीचे ग्रामीण समुदाय गर्मियों में बड़े राहत की सांस लेते थे तथा यह पक्षियों का भी आशियाना होता था। सब कुछ अच्छा चल रहा था पर जनसंख्या में आशातीत बढ़ोतरी एवं घटते स्थानीय जीविकोपार्जन के साधन, स्थानीय औद्योगिक क्रियाकलापो में नगण्यता, रोजगार के अभाव में लोग स्वरोजगार की चाहत में बिना लोग सोचे-समझे प्राकृतिक संसाधनों का दोहन तेजी से करने लगे हैं और उनके लिए प्रकृति प्रदत्त वस्तुएं केवल व्यापार की उत्पाद वस्तु हो गई हैं। यह विचार करना अति आवश्यक है कि प्राण वायु प्रदान करने वाले इन पेड़ों का मनुष्य जीवन, पर्यावरण संतुलन एवं वर्तमान एवं भविष्य से क्या संबंध है और इनके समाप्त होने का दूरगामी परिणाम कितना भयंकर हो सकता है। क्या इन पेड़ों की मौजूदगी के बगैर धरती पर जीवन संभव है ? कदापि नहीं !

प्रकृति की कितनी सुंदर व्यवस्था है। पीपल-बरगद के पेड़ों पर निवास करने वाले पक्षी एवं आगंतुक पक्षी इनके फलों को खाते हैं और जहां-जहां उड़कर पुराने भवनों, दीवारों, कुओं, तालाबों, किसी अन्य वृक्षों के खोडर आदि पर बैठकर जब बीट करते हैं तो वहां बरगद-पीपल के पेड़ निकल जाते हैं। चूंकि भूमि पर सीधे

प्राथमिक अवस्था में पीपल के पेड़ नहीं उगते, बाद में जब वे थोड़ा बड़ा होते है तो दूसरे स्थान पर लगा देने से वे तेजी से विकास करने लगते हैं। प्रकृति ने तो इन पेड़ों को स्वतः पनपा दिया। यदि मनुष्य उसे किसी स्थान पर ले जाकर लगा दे तो उसमें उसी का भला है। कारण कि इन पीपल-बरगद के पेड़ों से भारी मात्रा में ऑक्सीजन का चौबीसों घंटे उत्सर्जन होता है तथा स्थानीय वातावरण में इनकी प्रचुर मात्रा में उपलब्धता से वहां शुद्ध प्राणवायु का प्रसार होता है। बरगद को राष्ट्रीय वृक्ष होने का गौरव प्राप्त है, वहीं पीपल को बिहार के राजकीय वृक्ष का सम्मान प्राप्त है। पीपल के पेड़ के नीचे ही गौतम बुद्ध को बुद्धत्व की प्राप्ति हुई थी। पीपल-बरगद के पेड़ों को भारतीय सभ्यता-संस्कृति एवं आध्यात्मिकता का अविभाज्य अंग माना जाता हैं एवं लोक साधना पूजा का एक महत्वपूर्ण केंद्र बिंदु भी। भगवान श्री कृष्ण ने गीता के १०वें अध्याय में कहा है... मैं वृक्षों में पीपल हूँ। महिलाएं बड़ी श्रद्धा भाव से इन पीपल, बरगद को देवता समझ पूजा-अर्चना कर मन्नत के धागे बांधती हैं। ये वृक्ष इसलिए पूज्यनीय है कि इनकी महिमा अपरम्पार है। पक्षियों का आश्रय, मनुष्यों के लिए तृप्तिदायक छाया, प्राण वायु ऑक्सीजन के साथ-साथ इनके जड़, फल, फूल, तने पत्तियां कई असाध्य बीमारियों के इलाज में काम आते है। भारतीय सनातन सभ्यता संस्कृति तो वैसे भी प्रकृति की पूजक है।

आधुनिक युग में देश की पौराणिक मानवीय संस्कृति, परंपरा से बेखबर लोग पश्चिमी सभ्यता के बहाव में बह कर बिना सोचे-समझे प्राकृतिक संपदा का दोहन कर रहे हैं। मैदानी भागों में पेड़

प्रत्येक मानव यदि प्रति वर्ष मात्र दो-दो फलदार, इमारती लकड़ी या जनकल्याणकारी वृक्ष जैसे पीपल, बरगद, नीम, पाकड़ आदि को लगाए और पुत्र की भांति उनकी देखभाल करके बड़ा करे तो निःसंदेह प्राणवायु के प्राण बच सकते हैं और इससे मनुष्य लंबे समय तक पृथ्वी पर स्वच्छ सांस लेता रहेगा। वहीं दूसरी ओर फलदार वृक्षो से फल खाकर शरीर पोषण के दृष्टिकोण से स्वस्थ रहेगा। इमारती लकड़ी के पेड़ जब अपनी आयु पूरी कर सूख जाएं तो उनकी लकड़ियों से धनार्जन किया जा सकता हैं

की जितनी कटाई हो रही है, उसके अनुपात में उतने पेड़ लगाये नहीं जा रहे हैं। एकांत जंगलों में पाए जाने वाले वृक्ष भी सुरक्षित नहीं हैं। दिन-प्रतिदिन उनकी अंधाधुंध कटाइ हो रही है। पशु-पक्षियों को भी पकड़ कर उनकी खरीद-बिक्री कर व्यापारिक धनार्जन हो रहा है जिससे प्रकृति कुपित है।

प्रत्येक मानव यदि प्रति वर्ष मात्र दो-दो फलदार, इमारती लकड़ी या जनकल्याणकारी वृक्ष जैसे पीपल, बरगद, नीम, पाकड़ आदि को लगाए और पुत्र की भांति उनकी देखभाल करके बड़ा करे तो निःसंदेह प्राणवायु के प्राण बच सकते हैं और इससे मनुष्य लंबे समय तक पृथ्वी पर स्वच्छ सांस लेता रहेगा। वहीं दूसरी ओर फलदार वृक्षो से फल खाकर शरीर पोषण के दृष्टिकोण से स्वस्थ रहेगा। इमारती लकड़ी के पेड़ जब अपनी आयु पूरी कर सूख जाएं तो उनकी लकड़ियों से धनार्जन किया जा सकता हैं। कई पेड़-पौधो में औषधीय गुण पाया जाता है। इनके प्रयोग एवं बढ़ावा देकर एक नए रोजगारपरक जीविकोपार्जन उद्योग की स्थापना की जा सकती है।

अपने दो साल के वनवासी जीवन व्यतीत के अनुभवों को यदि साझा करूं तो हमने यह महसूस किया कि जंगली पहाड़ी इलाको में मैदानी भागों के अपेक्षाकृत पेड़ अधिक होने के कारण मौसम में बड़ा संतुलन रहता है। बहुत अधिक न चिलचिलाती धूप होती है और न ही हाड़ कपा देने वाली ठंड! मौसम हर समय सुहाना एवं स्वास्थ्यवर्धक होता है। वर्तमान में हमने, ग्रामीण इलाकों में शहर की तरह ही गर्मी व्याप्त देखी। पिछले कई दशक में मई-जून के माह में इस प्रकार के चिपचिपी तपन वाली गर्मी नहीं देखी थी। इस प्रकार की गर्मी का एकमात्र कारण है पीपल, बरगद, नीम जैसे ठंडक, तृप्तिदायक एवं प्राणवायु को भारी मात्रा में उत्सर्जन करने वाले पेड़ों को काटकर धनार्जन की लालच। पिछले कुछ सालों से इसके कारण ही शरीर को दुर्गंध युक्त पसीना से तर-बदर कर देने वाली भीषण गर्मी का सामना करना पड़ रहा है।

अब भी समय है। यदि वक्त रहते मानव सभ्यता सचेत नहीं हुई तो अंजाम बड़ा ही भयानक होगा। प्रकृति अपनी नाराजगी कोरोना काल में व्यक्त कर चुकी है। उस समय सबने देखा कि कैसे लोग प्राणवायु ऑक्सीजन के सिलेंडरों के लिए तरस रहे थे और तड़प-तड़प कर मर रहे थे। यदि प्रत्येक मनुष्य वृक्ष को लगाए और उसे प्रारंभिक अवस्था तक देख-रेख कर जिलाये तो यह नौबत नहीं आएगी। प्राण है तभी तो इस वसुंधरा का आनंद है तथा प्राण का रक्षण, प्राणवायु उत्सर्जक वृक्षों से होगा। वर्तमान में हम बिना सोचे-समझे वृक्षों की अंधाधुंध कटाई कर रहे हैं। यह तो जिस पेड पर बैठे हैं, वही पेड़ काटने वाली बात हुई। इसलिए हम सभी देश के जिम्मेदार नागरिकों को पेड़ लगाने है, पेड़ बचाने हैं। यह प्रकृति की उच्चतम सेवा होगी।■

-लेखक साहित्यकार एवं प्रकृति संरक्षण कार्यकर्ता हैं।

अपरिहार्य है 'एक देश-एक चुनाव'
सरपट दौड़ेगी देश के विकास की नाव

निधिता राय
समाचार समन्वयक

केंद्र सरकार ने एक देश-एक चुनाव की व्यवस्था लागू करने की दिशा में पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द की अध्यक्षता में एक समिति का गठन कर स्पष्ट कर दिया है कि वह लंबे समय से विचाराधीन और प्रतीक्षित विचार को मूर्तरूप देने को लेकर गंभीर है। मोदी सरकार ने १८ से २२ सितंबर तक ५ दिनों के लिए संसद का विशेष सत्र बुलाया है। यह खबर आते ही इसका अजेंडा क्या होगा, इसे लेकर कयास लगने लगे। आमतौर पर नवंबर में शीतकालीन सत्र भी आ ही जाता है। ऐसे में सितंबर में संसद का विशेष सत्र बुलाया जाना बताता है कि सरकार कुछ बड़ा करना चाहती है। इसके राजनीतिक निहितार्थ निकालने की कोशिशें हो रही हैं। तमाम तरह की अटकलें लग रही हैं। कहीं सरकार समय से पहले चुनाव के लिए तो नहीं जा रही? कहीं समान नागरिक संहिता पर बिल तो नहीं लाया जाएगा? महिला आरक्षण बिल लाया जा सकता है! जैसी तमाम अटकलें लग रही हैं। लेकिन इन सबके बीच सबसे ज्यादा चर्चा 'एक देश-एक चुनाव' को लेकर है। वैसे 'एक देश-एक चुनाव' का विचार कोई नया नहीं है। अतीत में भी सरकारों और चुनाव आयोग के स्तर पर इस दिशा में विचार-विनिमय हो चुका है। २०१८-१६ में तो बात बनते-बनते रह गई थी। समझने की बात यह भी है कि 'एक देश एक चुनाव' का मतलब यह कतई नहीं है कि इस व्यवस्था के लागू होने के बाद पंचायत चुनाव, नगर निकाय चुनाव, लोकसभा चुनाव, विधानसभा चुनाव के स्थान पर देश में सिर्फ एक चुनाव होगा। बल्कि 'एक देश एक चुनाव' की कवायद लोकसभा और राज्यों के विधानसभा चुनावों को एक साथ कराने के लिए है। अभी लोकसभा चुनाव और राज्यों के विधानसभा चुनाव अलग-अलग वक्त पर होते हैं। सरकार ने ५ साल का कार्यकाल पूरा कर लिया तो समय पर चुनाव और अगर किसी राज्य में सरकार कार्यकाल पूरा न कर पाए तो मध्यावधि चुनाव। देश में सालभर कहीं न कहीं, चुनाव का मौसम चलता ही रहता है। अगर एक साथ चुनाव हो तो इन्हें अलग-अलग कराने पर जो खर्च होता है, वह बच सकेगा। साथ ही चुनाव के समय बार-बार आचार संहिता लागू होने से विकास कार्यों में जो अवरोध आता है, उससे बचा जा सकेगा।

देश जब आजाद हुआ तो १६५२ में पहली बार चुनाव हुए। तब लोकसभा के साथ-साथ सभी राज्यों की विधानसभाओं के लिए एक ही साथ चुनाव हुए। १६५७ में भी लगभग यही हुआ। तब राज्यों के पुनर्गठन यानी नए राज्यों के बनने की वजह से ७६ प्रतिशत विधानसभा चुनाव, लोकसभा चुनाव के ही साथ हुए। लेकिन एक चुनाव का ये चक्र पहली बार तब गड़बड़ हुआ जब १६५६ में केंद्र की तत्कालीन जवाहर लाल नेहरू सरकार ने पहली बार अनुच्छेद ३५६ का इस्तेमाल करते हुए केरल की कम्यूनिस्ट सरकार को बर्खास्त कर दिया। १६५७ में लेफ्ट ने केरल में जीत दर्ज की थी और ई.एम.एस. नंबूरदरीपाद मुख्यमंत्री बने। लेकिन जुलाई १६५६ में उनकी सरकार बर्खास्त होने के बाद फरवरी १६६० में केरल में फिर विधानसभा चुनाव हुए। देश में किसी भी राज्य में मध्यावधि चुनाव का ये पहला मामला था। इसके बाद ही एक साथ चुनाव का क्रम टूट गया लेकिन मोटे तौर पर १६६७ तक 'वन नेशन वन इलेक्शन' का सिलसिला चलता रहा। १६६२ में और १६६७ में ६७ प्रतिशत राज्यों के विधानसभा चुनाव लोकसभा चुनाव के साथ हुए। लेकिन ये सिलसिला १६७० आते-आते लगभग पूरी तरह टूट गया। दरअसल, १६६७ के चुनाव में कांग्रेस को यूपी, बिहार, राजस्थान, पंजाब, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और मद्रास जैसे राज्यों में झटका लगा। कई जगहों पर कांग्रेस के बागियों ने अन्य पार्टियों के साथ मिलकर सरकार बनाई। ऐसी कई गठबंधन सरकारें ५ साल का कार्यकाल पूरा करने के पहले ही गिर गईं या गिरा दी गईं। जिस वजह से 'एक देश एक चुनाव' का क्रम बिगड़ गया।

करीब ४ दशक पहले एक साथ चुनाव के मुद्दे ने फिर जोर पकड़ा। १६८३ में चुनाव आयोग ने सुझाव दिया कि लोकसभा के साथ-साथ राज्यों के भी विधानसभा चुनाव कराए जाने चाहिए। हालांकि, तत्कालीन सरकार ने चुनाव आयोग के सुझाव को कोई खास महत्व नहीं दिया जिससे मामला ठंडे बस्ते में चला गया। १६६६ में ये मुद्दा

फिर उभरा जब लॉ कमिशन ने एक साथ चुनाव कराने पर जोर दिया। लॉ कमिशन ने मई १९९९ में अपनी १७०वीं रिपोर्ट में एक साथ चुनाव कराए जाने की सिफारिश की। लॉ कमिशन ने इसके लिए फॉर्मूला भी सुझाया कि अगर किसी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया जाता है तो उसके साथ ही वैकल्पिक सरकार के लिए विश्वास प्रस्ताव भी लाया जाना चाहिए। यानी एक तरह से लोकसभा और विधानसभाओं के लिए निर्धारित कार्यकाल की बात थी।

लॉ कमिशन की सिफारिशों को लेकर २००३ में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कांग्रेस की तत्कालीन अध्यक्ष सोनिया गांधी से चर्चा भी की। शुरुआत में कांग्रेस ने इसे लेकर उत्साह भी दिखाया। लगा कि एक साथ चुनाव कराने पर राजनीतिक आम सहमति बन सकती है लेकिन ऐसा नहीं हुआ और ये मुद्दा फिर आया-गया हो गया। २००४ में मनमोहन सिंह की अगुआई में यूपीए सरकार सत्ता में आ गई। उनके पहले कार्यकाल के दौरान इस मुद्दे की कहीं कोई चर्चा नहीं हुई। हालांकि, २०१० में भाजपा के वरिष्ठ नेता लाल कृष्ण आडवाणी ने एक बार फिर एक साथ चुनाव का मुद्दा उठाया। उन्होंने इसे लेकर तब के पीएम मनमोहन सिंह और वित्त मंत्री प्रणब मुखर्जी से चर्चा भी। आडवाणी ने लोकसभा और विधानसभाओं के लिए ५ साल के तय कार्यकाल की वकालत की। लेकिन बात नहीं बनी।

२०१४ में मोदी सरकार आने के बाद 'एक देश-एक चुनाव' की चर्चा पुनः आरंभ हुई। २०१५ में एक संसदीय समिति ने अपनी रिपोर्ट में एक साथ चुनाव कराए जाने की बात कही। संसदीय समिति ने लोकसभा और विधानसभा चुनावों को एक साथ कराने की संभावना को लेकर अपनी रिपोर्ट पेश की। रिपोर्ट में 'एक देश एक चुनाव' की भावना का समर्थन करते हुए कहा गया कि इससे बार-बार चुनावों पर होने वाले खर्च में कमी आएगी, बार-बार चुनाव आचार संहिता लागू होने की वजह से कुछ समय के लिए एक तरह की जो नीतिगत पंगुता वाली स्थिति पैदा होती है, वह खत्म होगी। चुनाव के दौरान सुरक्षाबलों एवं अन्य कर्मचारियों की तैनाती का बोझ भी कम होगा। लेकिन कांग्रेस ने इसे अव्यावहारिक बताते हुए खारिज कर दिया।

२०१७ में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए बार-बार होने वाले चुनावों के नकारात्मक प्रभावों का जिक्र किया। जनवरी २०१७ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इशारा किया कि एक साथ चुनाव कराने की संभावना टटोलने के लिए अध्ययन होना चाहिए। ३ महीने बाद अप्रैल २०१७ में मोदी ने मुख्यमंत्रियों के साथ नीति आयोग की बैठक में फिर इस बात कर जोर दिया। उसी साल नीति आयोग ने एक पेपर जारी कर एक साथ चुनाव कराने पर जोर दिया। नीति आयोग ने अपने पेपर में विस्तार से बताया कि क्यों एक साथ चुनाव जरूरी है और कैसे ये संभव हो सकता है।

२०१८ में एक बार फिर लॉ कमिशन ने एक साथ चुनाव कराए जाने की पैरवी की। जस्टिस बी. एस. चौहान की अध्यक्षता वाले लॉ कमिशन ने ३० अगस्त २०१८ को अपनी ड्राफ्ट रिपोर्ट में सिफारिश की कि एक वर्ष में जितने भी राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हों, उन्हें एक साथ कराया जाना चाहिए। लॉ कमिशन ने बताया कि लोकसभा और सभी राज्यों के चुनाव एक साथ कराने के लिए संविधान में कई तरह के बदलाव करने पड़ेंगे। लोकप्रतिनिधित्व कानून १९५१ में बदलाव करने पड़ेंगे, लोकसभा और राज्य विधानसभाओं से जुड़े नियमों, प्रक्रियाओं में जरूरी बदलाव करने पड़ेंगे। लॉ कमिशन ने ये भी सिफारिश की कि अविश्वास प्रस्ताव से सरकार तभी गिरनी चाहिए जब वैकल्पिक सरकार के लिए विश्वास प्रस्ताव पास हो जाए।

२०१९ के लोकसभा चुनाव से पहले एक समय तो ऐसा लग रहा था कि 'एक देश एक चुनाव' की अवधारणा लागू ही हो जाएगी। २०१८ में लह कमिशन की सिफारिशों के बाद माहौल बना। मोदी सरकार ने 'एक देश एक कानून' को संभव बनाने के लिए आम सहमति तैयार करने की कोशिश की। लॉ कमिशन ने सुझाव दिया था कि १७वीं लोकसभा के चुनाव के साथ १२ राज्यों के विधानसभा चुनाव भी कराए जाने चाहिए। २०१८ और २०१९ में कुल १२ राज्यों- आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, ओडिशा, सिक्किम, तेलंगाना, हरियाणा, झारखंड, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, मिजोरम और राजस्थान में चुनाव होने थे। इन सभी राज्यों की विधानसभाओं के लिए लोकसभा के साथ ही चुनाव कराने की बात चली। तब ऐसी खूब खबरें चलीं कि ये संभव हो सकता है लेकिन बात नहीं बन सकी। मोदी सरकार एक बार फिर 'एक देश एक चुनाव' के लिए कवायद तेज की है। अब तो इसकी संभावना टटोलने के लिए पूर्व राष्ट्रपति कोविंद की अध्यक्षता में समिति भी बन गई है।

आने वाले दिनों में देखना दिलचस्प रहेगा कि 'एक देश-एक चुनाव' के विचार को लागू करने के प्रयास किस तरह आगे बढ़ते हैं। इस राह में रोड़े बहुत हैं। सरकार के लिए इस व्यवस्था को लागू कराने के लिए आवश्यक संवैधानिक प्रक्रियाओं को अंजाम तक पहुंचा पाना आसान नहीं लगता, क्योंकि विशेषकर राज्यसभा में सरकार के लिए दो तिहाई बहुमत जुटा पाना वर्तमान अंकगणित के हिसाब से दुष्कर है। लेकिन यह भी सच है कि पीएम मोदी की पहचान असंभव को संभव बनाने वाले राजनेता की है। यह भी सच है कि बारहो महीने बना रहने वाला चुनावी माहौल देश के विकास की राह में अड़ंगा लगाता है। हमें ध्यान रखना होगा कि चुनाव देश के लिए होते हैं, देश चुनाव के लिए नहीं होता। ■

सहकार के नए युग का सूत्रपात

विश्व की सबसे बड़ी अन्न भंडारण योजना

रमेश कुमार दुबे

आज देश में ६१ प्रतिशत गांव ऐसे हैं, जहां कोई न कोई सहकारी संस्था काम करती है। मोदी सरकार सहकारिता के इस विशाल ढांचे से हर परिवार को जोड़ने में जुटी है, ताकि परिवार की समृद्धि से देश समृद्ध बने। प्रधानमंत्री मोदी ने 'सहकार से समृद्धि' का मूल मंत्र दिया है। इसी के तहत जुलाई २०२१ में अलग सहकारिता मंत्रालय के गठन के बाद सरकार नई सहकारी नीति तैयार कर रही है। नई राष्ट्रीय सहकारी नीति का मसौदा तैयार करने के लिए पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश प्रभु की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था। आशा है कि समिति द्वारा सौंपी रिपोर्ट पर विचार-विमर्श के बाद जुलाई तक नई सहकारी नीति घोषित हो जाएगी।

सहकारिता को जन-जन तक पहुंचाने के क्रम में मोदी सरकार प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पैक्स) को २,००० जन औषधि केंद्र खोलने की अनुमति देने के साथ-साथ सहकारिता क्षेत्र में विश्व की सबसे बड़ी अन्न भंडारण योजना शुरू कर रही है। पैक्स के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में जन औषधि केंद्र खुलने से न केवल पैक्स से जुड़े लोगों की आय बढ़ेगी, बल्कि ग्रामीण क्षेत्र में रहने वालों को कम कीमत पर दवाइयां मिल पाएंगी। इनमें से १,००० जन औषधि केंद्र इस साल अगस्त तक और १,००० दिसंबर तक खोले जाएंगे। अभी तक ६,४०० से अधिक जन औषधि केंद्र खोले जा चुके हैं। इनमें १,८०० प्रकार की दवाइयां और २८५ अन्य चिकित्सा उपकरण उपलब्ध हैं। ब्रांडेड दवाइयों की तुलना में जन औषधि केंद्रों पर दवाइयां ५०-६० प्रतिशत तक सस्ती हैं।

भारत में खेती-किसानी की एक विडंबना यह रही कि यहां जितना जोर उत्पादन पर दिया गया, उतना उपज के भंडारण-विपणन-प्रसंस्करण पर नहीं। यही कारण है कि न केवल बड़े पैमाने पर अनाज की बर्बादी होती है, बल्कि किसानों को उनकी उपज की वाजिब कीमत भी नहीं मिल पाती है। इस कमी को दूर करने के लिए मोदी सरकार सहकारिता क्षेत्र में विश्व की सबसे बड़ी अन्न भंडारण योजना शुरू कर रही है। एक लाख

> यह सहकारी क्षेत्र में दुनिया की सबसे बड़ी अनाज भंडारण योजना है। इस योजना के तहत प्रत्येक ब्लाक में 2,000 टन क्षमता का गोदाम स्थापित किया जाएगा और इसके लिए प्रत्येक पैक्स को वित्तीय सहायता दी जाएगी

करोड़ रुपये की इस योजना का मुख्य उद्देश्य देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना, फसलों के नुकसान को कम करने के साथ-साथ फसलों की खरीद-बिक्री का विकेंद्रित तंत्र स्थापित करना है।

अब तक देश की अनाज भंडारण व्यवस्था चुनिंदा फसलों और क्षेत्रों तक ही सिमटी रही है। उदाहरण के लिए पंजाब में भारतीय खाद्य निगम द्वारा संचालित गोदामों की संख्या ६११ है तो ओडिशा में इनकी संख्या ४६ और बंगाल में मात्र ३० है। इसी तरह भंडारण व्यवस्था भी गेहूं-धान तक सिमटी है।

नई भंडारण योजना के जरिये पांच वर्षों में सात करोड़ टन अतिरिक्त भंडारण क्षमता विकसित होगी। अभी देश की अन्न भंडारण क्षमता १४.५ करोड़ टन है। इस योजना के क्रियान्वयन के बाद कुल भंडारण क्षमता २१.५ करोड़ टन हो जाएगी। यह सहकारी क्षेत्र में दुनिया की सबसे बड़ी

अनाज भंडारण योजना है। इस योजना के तहत प्रत्येक ब्लाक में २,००० टन क्षमता का गोदाम स्थापित किया जाएगा और इसके लिए प्रत्येक पैक्स को वित्तीय सहायता दी जाएगी। इन गोदामों में केवल गेहूं-धान ही नहीं मोटे अनाज और दलहनी-तिलहनी उपज भी भंडारित की जाएंगी। पैक्स केवल गोदाम निर्माण नहीं करेगी, बल्कि भारतीय खाद्य निगम और राज्य एजेंसियों के लिए खरीद का काम भी करेंगी। वास्तव में मोदी सरकार पैक्स को बहुउद्देशीय बना रही है, ताकि वह न केवल उचित दर की दुकान के रूप में कार्य करे, बल्कि प्रसंस्करण इकाइयां स्थापित करे, जिसमें कृषि उपज की जांच, छंटाई और ग्रेडिंग आदि का कार्य शामिल है।

सरकार खेती को गेहूं-धान जैसी चुनिंदा फसलों से बाहर निकालकर बहुफसली बनाना चाहती है। स्थानीय स्तर पर विकेंद्रित खरीद से खाद्यान्न की बर्बादी रुकेगी और खाद्य सुरक्षा को मजबूती मिलेगी। किसान बहुत कम मूल्य पर उपज की आकस्मिक बिक्री नहीं करेगा। किसान अपनी उपज का भंडारण पैक्स द्वारा प्रबंधित गोदाम में कर सकेंगे और अपनी सुविधा से बेच सकेंगे। इस योजना का सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि खरीद केंद्रों से गोदाम तक और उसके बाद गोदाम से उचित दर की दुकानों तक खाद्यान्न ले जाने वाले भारी-भरकम खर्च में काफी कमी आएगी। मौजूदा व्यवस्था में धान खरीदकर पंजाब ले जाया जाता है और फिर धान से चावल निकालकर उसकी आपूर्ति बिहार को की जाती है। इससे न केवल ढुलाई लागत बढ़ती है, बल्कि अनाज की बर्बादी भी होती है।

मोदी सरकार सहकारिता क्षेत्र में विश्व की सबसे बड़ी अन्न भंडारण योजना शुरू कर रही है। एक लाख करोड़ रुपये की इस योजना का मुख्य उद्देश्य देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना, फसलों के नुकसान को कम करने के साथ-साथ फसलों की खरीद-बिक्री का विकेंद्रित तंत्र स्थापित करना है। अब तक देश की अनाज भंडारण व्यवस्था चुनिंदा फसलों और क्षेत्रों तक ही सिमटी रही है। उदाहरण के लिए पंजाब में भारतीय खाद्य निगम द्वारा संचालित गोदामों की संख्या 611 है तो ओडिशा में इनकी संख्या 46 और बंगाल में मात्र 30 है। इसी तरह भंडारण व्यवस्था भी गेहूं-धान तक सिमटी है

सहकारी संस्थाओं को पारदर्शी बनाने और हर स्तर पर जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए सरकार ६३,००० प्राथमिक कृषि ऋण समितियों का कंप्यूटरीकरण कर रही है। इन समितियों से १३ करोड़ किसान जुड़े हैं, जिनमें अधिकांश लघु एवं सीमांत किसान हैं। पांच वर्षों में इन समितियों की संख्या बढ़ाकर तीन लाख करने का लक्ष्य है। इससे हर दूसरे गांव में प्राथमिक कृषि ऋण समितियों की पहुंच हो जाएगी। अमूल की भाति स्वयं सहायता समूह अपनी सोसायटी बनाकर काम कर सकें, इसके लिए मोदी सरकार कानूनी ढांचा बना रही है।

सहकारिता मंत्रालय पैक्स से संबंधित उप-नियम तैयार कर रहा है, ताकि पैक्स की उपयोगिता बढ़े। इसके तहत २५ से अधिक व्यावसायिक गतिविधियां चिह्नित की गई हैं। इनमें ऋण, डेरी, मत्स्य के साथ-साथ गोदामों की स्थापना, खाद्यान्न, उर्वरक, कीटनाशकों की खरीद, पीएनजी-सीएनजी-पेट्रोल-डीजल वितरण, कामन सर्विस सेंटर, उचित दर की दुकान, सामूहिक सिंचाई योजना और सामूहिक ड्रोन जैसी गतिविधियां शामिल हैं। सरकार सभी पैक्स को प्रधानमंत्री किसान समृद्धि केंद्र में बदलेगी। इसके साथ-साथ जैव उर्वरकों के विपणन में पैक्स को भागीदार बनाया जाएगा, ताकि रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता में कमी आए। जैव उर्वरकों का विपणन भी पैक्स के माध्यम से किया जाएगा।■

विकास के मामले में राज्यों की आपसी प्रतिस्पर्धा
विकसित होगा भारत और अग्रणी होगी अर्थव्यवस्था

प्रेम प्रकाश
वरिष्ठ पत्रकार

मौजूदा लोकतंत्र में नैरेटिव के महत्व को जो लोग मानते हैं, उन्हें यह साफ लग रहा है कि २०२४ का लोकसभा चुनाव किसी राष्ट्रवादी बयार से ज्यादा राज्यों के विकास मॉडल पर लड़ा जाएगा। भाजपा के खिलाफ विपक्ष के एक के मुकाबले एक प्रत्याशी उतारने के जवाब में विकास का यह नया जोर और तकाजा बहुत कुछ कहता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले पर दसवीं बार तिरंगा फहराते हुए विजन २०४७ के साथ अगले २५ वर्षों के लिए विकसित भारत का जो रोडमैप सामने रखा है, उसमें गरीब कल्याण और अर्थव्यवस्था का मुद्दा सर्वोपरि है। बात आर्थिक धरातल पर तय होती देश की भावी राजनीतिक दिशा की करें तो इसमें कहीं दो राय नहीं कि निश्चित रूप से भाजपा और उसके नेतृत्व वाले एनडीए के लिए यह चुनाव बीते दो चुनावों से नितांत भिन्न परिस्थितियों में होने जा रहे हैं। अच्छी बात यह है कि यह भिन्नता उस कॉपरेटिव फेडरलिज्म के

> **पांच साल के अंतराल में 13.5 करोड़ से ज्यादा लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं और गरीबों की संख्या में 14.96 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले पर दसवीं बार तिरंगा फहराते हुए राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में इस तथ्य को रेखांकित भी किया है। उन्होंने कहा है कि उनके अब तक के कार्यकाल की यह सबसे चमकदार उपलब्धि है, जिससे आम भारतीय की जिंदगी बदली है, देश में खुशहाली आई है**

विकासवादी चरित्र को उभार रहा है, जिसकी चर्चा बीते एक दशक में प्रधानमंत्री ने बार-बार की है। यह अलग बात है कि विपक्ष इस मुद्दे को भाजपा की राजनीति और उस आधार पर राज्यों को विकास के मामले में सहयोग-असहयोग के नजरिए से आंकती रही है। नीति आयोग की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक दो नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (एनएफएचएस) के पांच साल के अंतराल में १३.५ करोड़ से ज्यादा लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं और गरीबों की संख्या में १४.९६ प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले पर दसवीं बार तिरंगा फहराते हुए राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में इस तथ्य को रेखांकित भी किया है। उन्होंने कहा है कि उनके अब तक के कार्यकाल की यह सबसे चमकदार उपलब्धि है, जिससे आम भारतीय की जिंदगी बदली है, देश में खुशहाली आई है। राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई) के रूप में सामने आई इस रिपोर्ट के

राज्यों की आकांक्षा और विकास के दौड़ में उनकी हैसियत से लोगों की खुशहाली का नया चित्र तो उभर रहा ही है, सत्ता का नया व्याकरण भी तय हो रहा है। भारतीय लोकतंत्र के लिए यह संकेत निश्चित रूप से सुखद है

मुताबिक उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, ओडिशा और राजस्थान में गरीबी दर में सबसे तेज कमी देखी गई। यह तथ्य चुनावी दृष्टि से अहम है क्योंकि विपक्ष इनमें से कई प्रदेशों में अपनी मजबूती का दावा कर रहा है।

बहरहाल, बात निवेश और विकास परियोजनाओं के बूते प्रदेशों के बीच तय हो रही नई वरीयता और स्पर्धा की। दिलचस्प है कि विभिन्न परियोजनाओं को बैंक से मिलने वाली फंडिंग में कुछ साल पहले तक देश के सबसे बड़े सूबे उत्तर प्रदेश की हिस्सेदारी बेहद मामूली थी। अब इस मामले में यूपी बाकी राज्यों को पछाड़ पहले पायदान पर है। गौरतलब है कि यह वही सूबा है जिसके ८० लोकसभा सीटों में अधिकतम अपने हिस्से में करके भाजपा ने भारत की राजनीति के सूर्य को बीते एक दशक में दक्षिणायन कर दिया है। ऐसा लगता है कि दक्षिण में चमकता यह सूर्य अब केसरिया के साथ विकास की दूधिया आभा भी बिखेरेगा। आरबीआई के अगस्त बुलेटिन में 'प्राइवेट कॉरपोरेटिव इन्वेस्टमेंट : परफार्मेंस एंड नियर टर्म आउटलुक' नाम से प्रकाशित स्टडी के अनुसार, अभी से कुछ साल पहले २०१३-१४ में बैंकों से कुल प्रोजेक्ट फंडिंग में उत्तर प्रदेश की हिस्सेदारी मामूली १.१ प्रतिशत थी। यह हिस्सेदारी २०२२-२३ में बढ़कर १६.२ प्रतिशत पर पहुंच गई है। इस तरह अब यूपी परियोजनाओं के लिए बैंकों से सबसे ज्यादा फंडिंग आकर्षित कर रहा है। लिहाजा यह अकारण नहीं कि विकास और राजनीति दोनों ही क्षेत्र में मोदी के साथ योगी मॉडल की चर्चा जोर पकड़ रही है।

हाल के राजनीतिक घटनाक्रम को सामने रखकर देखें तो साल भर पहले महाराष्ट्र इस मामले में टॉप पर था। महाराष्ट्र लंबे समय तक बैंकों से फंड पाने में सबसे आगे रहता आया है। वर्ष २०१३-१४ के दौरान पूरे देश में विभिन्न परियोजनाओं को बैंकों से जो कुल फंडिंग मिली थी, उसमें अकेले महाराष्ट्र की हिस्सेदारी १६.७ फीसदी थी। पिछले वित्त वर्ष के दौरान यानी २०२२-२३ में यह हिस्सेदारी कम होकर ७.९ फीसदी पर आ गई। महाराष्ट्र विधानसभा में पाला बदल के खेल के बीच राज्य का विकास किस तरह प्रभावित हुआ है, इसकी गवाही अब वित्तीय तथ्य भी दे रहे हैं। आरबीआई स्टडी में बताया गया कि वित्त वर्ष २०२२-२३ के दौरान परियोजनाओं की बैंक फंडिंग के मामले में उत्तर प्रदेश के बाद गुजरात, ओडिशा, महाराष्ट्र और कर्नाटक का स्थान रहा। फंडिंग के इस आंकड़े में बैंकों व अन्य वित्तीय संस्थानों के द्वारा विभिन्न परियोजनाओं के लिए सैंक्शन किए गए लोन शामिल हैं। राजनीतिक लिहाज से देखें तो शीर्ष के दोनों प्रदेशों में भाजपा के आगे विपक्ष की चुनौती सबसे कमजोर है। इन दो प्रदेशों में कुल १०६ लोकसभा सीटें हैं। २०१९ के जीत के आंकड़े को उठाकर देखें तो अकेले इन दो प्रदेशों से भाजपा-एनडीए के खाते में ९० सीटें गई थीं। रही बात ओडिशा और कर्नाटक की तो यह जरूर है कि यहां से भाजपा को ज्यादा उम्मीद नहीं है। पर नवीन पटनायक ने जिस तरह संसद में सरकार की हिमायत का रणनीतिक निर्णय लिया, वह एक बड़ी सियासी भविष्यवाणी है। साफ है कि ओडिशा में २१ लोकसभा सीट है और इन पर हार-जीत का पलड़ा चाहे जिधर झुके, वह भाजपा के सत्ता के गणित के पक्ष में ही जाएगा। इन सारी अनुकूलताओं-प्रतिकूलताओं के तार्किक अध्ययन में यह बात भी सामने आ रही है कि राज्यों की आकांक्षा और विकास के दौड़ में उनकी हैसियत से लोगों की खुशहाली का नया चित्र तो उभर रहा ही है, सत्ता का नया व्याकरण भी तय हो रहा है। भारतीय लोकतंत्र के लिए यह संकेत निश्चित रूप से सुखद है। इस बीच पूरी दुनिया महंगाई की चपेट में है और विकसित देशों की अर्थव्यवस्था में वृद्धि की रफ्तार भारत की तुलना में कम है। ऐसे में भारतीय बाजार लगातार निवेशकों का पसंदीदा स्थान बना रहेगा। अनुमान है कि मार्च, २०२४ तक निफ्टी २०,००० के आंकड़े को पार कर सकता है। भारतीय शेयर बाजार की आर्थिक बेहतरी के इन संकेतों के बीच इस बात पर अलग से ध्यान देने की जरूरत है कि इसमें राज्यों का विनियोग क्या है। इस लिहाज से केंद्र सरकार के विकास रथ को जो राज्य डबल इंजन के जोर पर आगे खींचने में लगे हैं, उनमें सबसे ज्यादा दारोमदार उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात सरकार पर है। ऐसे में अर्थ पंडितों को भी यही लगता है कि गुजरात और महाराष्ट्र से उभरे विकास मॉडल का नया और अपडेटेड वर्जन देश के सामने आने का समय आ गया है। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) के मुताबिक अप्रैल महीने में शेयर बाजार से जुड़ने वाले नए निवेशकों की संख्या के मामले में उत्तर प्रदेश ने देश की आर्थिक राजधानी कहे जाने वाले महाराष्ट्र को भी पीछे छोड़ दिया है। यूपी के १.२६ लाख नए निवेशकों ने शेयर बाजार में कारोबार किया तो वहीं महाराष्ट्र १.१८ लाख के साथ दूसरे नंबर पर रहा। साफ है कि गरीब कल्याण से लेकर विकास और आर्थिक उभार के ये लक्षण और राज्यों के नए विकास मॉडल २०२४ में दिल्ली की राजगद्दी का कुंडली तय करेंगे। ■

कुछ साल पहले 2013-14 में बैंकों से कुल प्रोजेक्ट फंडिंग में उत्तर प्रदेश की हिस्सेदारी मामूली 1.1 प्रतिशत थी। यह हिस्सेदारी 2022-23 में बढ़कर 16.2 प्रतिशत पर पहुंच गई है। इस तरह अब यूपी परियोजनाओं के लिए बैंकों से सबसे ज्यादा फंडिंग आकर्षित कर रहा है। लिहाजा यह अकारण नहीं कि विकास और राजनीति दोनों ही क्षेत्र में मोदी के साथ योगी मॉडल की चर्चा जोर पकड़ रही है

चीन को देना होगा मुंहतोड़ जवाब
तिब्बत और ताइवान को मानें अलग राष्ट्र

के. विक्रम राव
वरिष्ठ पत्रकार

कम्युनिस्ट चीन भी अब भली-भांति समझ गया है कि भारत आज १९६२ वाला नहीं है, जो वह धमकियों से खौफ और संत्रास में पड़ जाए। चीन ने नए मानचित्रों में भारत के भूभाग- लद्दाख, कश्मीर, अरुणाचल को अपना हिस्सा बताया। बड़ा सटीक, साहसभरा जवाब दिया विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने एक टीवी प्रोग्राम में। उन्होंने कहा- 'चीन की ये पुरानी आदत है। वो दूसरे देशों के इलाकों पर अपना दावा करते रहे हैं। वे १९५० के आसपास से ही इसके दावे कर रहे हैं। हमारी सरकार अपने देश की रक्षा को लेकर स्थिति साफ कर चुकी है। किसी भी तरह के बेतुके दावे से दूसरों के क्षेत्र आपके नहीं हो जाएंगे।'

अतः मोदी सरकार अब क्या कदम उठाए ? बड़ा सरल है। पूर्वोत्तर भारत पर अपना मानचित्र जारी कर दें। इसमें तिब्बत को अरुणाचल का दक्षिणी भाग बता दें। चीन ने अरुणाचल को तिब्बत का उत्तरी भाग बताया है। यूं भी तिब्बत स्वतंत्र राष्ट्र था। अतः फिर बने। दलाई लामा मुखिया होंगे। उनकी मदद और रक्षा करना भारत का दायित्व है। बौद्ध तिब्बत भी, बौद्ध लद्दाख की भांति, भारत से रक्षा पाने का हकदार है। गौतम बुद्ध के नाम पर। ये धर्म प्रवर्तक भारत के थे। मोदी सरकार को 'जैसे को तैसा' वाले कूटनीतिक सिद्धांत के आधार पर ताइवान को पूर्ण गणराज्य वाली मान्यता दे देनी चाहिए। इसके सर्वमान्य नेता जनरल च्यांग काई शेक तो जवाहरलाल नेहरू के परम मित्र रहे। चीन द्वारा ऐसी बेतुके और फूहड़ दावों से हर राष्ट्रभक्त भारतीय का आक्रोशित होना स्वाभाविक है। राहुल गांधी को खासकर। आज वे श्रेष्ठतम भारतीय देशभक्त होने का दावा पेश करते हैं। चीन के नए नक्शे जारी होने के बाद राहुल गांधी ने पिछले दिनों कहा- मैं लद्दाख से आया हूं। पीएम मोदी ने कहा था कि लद्दाख में एक इंच जमीन नहीं गई। ये सरासर झूठ है।' इसी उद्गार को राहुल गांधी ने

> **"याद करना होगा कि राम की शक्ति पूजा से ही लंका दहली थी। मोदी के पुलवामा एक्शन से ही इस्लामी पाकिस्तान खौफजदा हुआ था। कश्मीर में आतंक कमतर हुआ था। युगो बाद लाल चौक में तिरंगा लहराया। पहले यहां सूर्यास्त के बाद भारतीय जाने से डरते थे**

फिर मुंबई में आई.एन.डी.आई.ए. गठबंधन की सभा में दुहराया। राहुल गांधी ने कहा- 'पूरा लद्दाख जानता है कि चीन ने हमारी जमीन हड़प ली। ये मानचित्र की बात तो बड़ी गंभीर है।'

अब जरूरत है इस ५३ वर्षीय अधेड़ कांग्रेसी को याद दिलाने की कि उनकी दादी के पिता जवाहरलाल नेहरू प्रथम भारतीय थे, जो इस चीन-भारत सीमा विवाद के सृजनकर्ता हैं। उन्हीं की नजरों के सामने ही अक्टूबर १९६२ को ४३,१८० वर्ग किलोमीटर पूर्वोत्तर भारतीय भूभाग को कम्युनिस्ट चीन ने हथिया लिया था। अगले वर्षों में राहुल गांधी की दादी इंदिरा गांधी, पिताश्री राजीव गांधी और कांग्रेसी प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव तथा फिर सरदार मनमोहन सिंह आदि प्रधानमंत्री पद पर सवार रहकर चार दशकों तक देश की सुरक्षा का वादा करते रहे। वे सब क्यों इस पूर्वोत्तर भूभाग को चीन के चंगुल से आज तक आजाद नहीं करा पाये ? हालांकि कांग्रसे अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सही बताया कि अरुणाचल प्रदेश और अक्साई चीन सहित सारे क्षेत्र भारत का अविभाज्य हिस्सा हैं। मनमाने ढंग से तैयार कोई भी चीनी नक्शा इसे बदल नहीं सकता।

मगर मुद्दा यह है कि क्यों पहले उसे मुक्त नहीं कराया गया ? जबकि राहुल के इन पुरखों को तो लोकसभा में अपार बहुमत हासिल था। क्या राहुल गारंटी देंगे कि अगर भारत के मतदाता

उन्हें सत्ता दे दें तो वे पूर्वोत्तर को आजाद करा लेंगे ? अर्थात तब फिर राजकोष की लूट, बोफोर्स-मार्का, कोयला खदान (२०१३), २-जी स्पेक्ट्रम (२००८), सत्यम (२००९), करीब चौदह हजार करोड़वाला इत्यादि नहीं होंगे। इन आशांकित लूट का स्मरण इसलिए है कि सोनिया-कांग्रेस गत दस सालों से सत्ता से बाहर रहीं। पार्टी फंड खाली हो गया होगा। लाजमी है कि उगाही की अब तात्कालिक जरूरत भी है। छत्तीसगढ़ और राजस्थान राज्य सरकारें कितना चंदा दे पायेंगी। अर्थात सीमा विवाद जो नेहरू-इंदिरा सरकार की देन है, पर से ध्यान-हटाने का प्रहसन मात्र राहुल की नौटंकी है। वर्ना वे पवित्र कैलाश मानसरोवर की यात्रा हमलावर चीन के आतिथ्य में क्यों करते ?

अब कुछ भाजपा की अंदरुनी बात भी। वयस्क भाजपायी सांसद रहे डा. सुब्रमण्यम स्वामी ने लिखा- 'मोदी से कहिए कि अगर वो भारतमाता की किसी मजबूरी की वजह से रक्षा नहीं कर सकते, तो कम से कम पद छोड़िए और मार्गदर्शक मंडल में जाइए। झूठ से हिन्दुस्तान की रक्षा नहीं की जा सकती। भारत एक और नेहरू अब झेल नहीं पाएगा।'

इस समस्त परिवेश में इस ऐतिहासिक तथ्य को पुनः याद करना होगा कि राम की शक्ति पूजा से ही लंका दहली थी। मोदी के पुलवामा एक्शन से ही इस्लामी पाकिस्तान खौफजदा हुआ था। कश्मीर में आतंक कमतर हुआ था। युगो बाद लाल चौक में तिरंगा लहराया। पहले यहां सूर्यास्त के बाद भारतीय जाने से डरते थे। हालांकि अक्तूबर १९८७ में इंडियन फेडरेशन ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट के सात सौ पत्रकारों ने चश्मेशाही से लाल चौक तक जुलूस निकाला था। इनका नारा था- 'कश्मीर हो या गौहाटी, अपना देश अपनी माटी।' हालांकि ३७० खत्म करते ही लाल चौक पूर्णतया भारतीय हो गया। राहुल को इसका निजी सुखी अनुभव हुआ होगा जब वे वहां 'भारत जोड़ो' मुहिम में गए थे। कश्मीर को तो उनके पुरखों ने काट ही दिया था। मोदी ने जोड़ दिया। ■

-आलेख में व्यक्त विचार लेखक के निजी हैं।

लिव-इन के चलन को 'आउट' करने की दरकार

छद्म आधुनिकता ऐसे संबंधों का आधार

डा. ऋतु सारस्वत
समाजशास्त्री

> यह सोचना मूर्खता होगी कि चूंकि विवाह में दंपती की कुछ प्रतिबद्धताएं होती हैं, इसलिए इस बंधन से मुक्ति का सहज एवं सरल मार्ग सहजीवन है। क्या सहजीवन में रहने वाले युगल भावहीन, दायित्वहीन और पूर्णतः स्वच्छंद प्रवृत्ति के होते हैं? यह प्रश्न इसलिए कि अगर यह सत्य होता तो सहजीवन में रहने वाले युगल ठीक उसी तरह तमाम अदालतों के चक्कर नहीं लगा रहे होते, जैसे वैधानिक रूप से संबंध में बंधे दंपती

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अपने एक महत्वपूर्ण फैसले में कहा है कि हम लिव - इन - रिलेशनशिप के खिलाफ नहीं है, लेकिन अवैध रिलेशनशिप के खिलाफ है। हाईकोर्ट ने शादीशुदा महिला और उसके प्रेमी की ओर से दाखिल याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि सामाजिक ताने-बाने की कीमत पर अवैध संबंधों को पुलिस सुरक्षा नहीं दी जा सकती है। हाल में केरल हाई कोर्ट ने एक मामले में कहा कि कानून लिव-इन रिलेशनशिप यानी सहजीवन को शादी के रूप में मान्यता नहीं देता। लिव इन - रिलेशनशिप का मतलब शादी नहीं होता। न ही इसमें तलाक की मांग की जा सकती है। यह टिप्पणी कोर्ट ने सहजीवन में रहने वाले याचिकाकर्ता युगल के तलाक के आवेदन पर दी। जस्टिस ए. मोहम्मद मुस्ताक और सोफी थामस की खंडपीठ ने यह भी कहा कि 'विवाह एक सामाजिक संस्था है, जिसे कानून से मान्यता प्राप्त है। यह समाज में सामाजिक और नैतिक आदर्शों को दर्शाता है।' न्यायालय की यह टिप्पणी स्पष्ट करती है कि तथाकथित आधुनिकता के तमाम दावों के बीच इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता कि विवाह आज भी सामाजिक एवं नैतिक आदर्शों को स्थापित करने वाली संस्था के रूप में जीवंत है। उल्लेखनीय है कि देश के शीर्ष न्यायालय ने आठ अप्रैल, २०१५ को धन्नू लाल और अन्य बनाम गणेश राय और अन्य के मामले में कहा था कि कानून लिव-इन रिलेशनशिप को स्वीकारता तो है, परंतु उचित नहीं मानता। उचित-अनुचित के अंतर को त्याग चुकी वर्तमान युवा पीढ़ी के शब्दकोश में यकीनन 'सामाजिक संस्था', 'सामाजिक एवं नैतिक आदर्श' जैसे शब्द ढूंढ़ने से भी नहीं मिलेंगे। क्षणभर को इसे स्वीकार कर भी लिया जाए तो स्वायत्तता के तर्क के आधार पर समाज को परोसी जाने वाली लिव इन-रिलेशनशिप स्वयं उनके गले की हड्डी बनती दिखाई देती है। अमूमन युवा पीढ़ी विवाह को एक बंधन के रूप में देखती है, जहां आपसी मतभेद की स्थिति में जोड़ों को विवाह विच्छेद के लिए न्यायालय के चक्कर लगाने पड़ते हैं और एक जटिल प्रक्रिया से गुजरना होता है। इन्हीं झंझावातों से मुक्ति पाने का उनके लिए सहज मार्ग 'सहजीवन' है, जहां अलग होने के जब चाहे मुक्ति के द्वार खोले जा सकते हैं, परंतु क्या वाकई ऐसा होता है? चाहे इस सत्य को कितना भी अस्वीकार किया जाए, परंतु वास्तविकता यह है कि सहजीवन में साथ रहने वाले युगल भी

एक-दूसरे के साथ तभी रह पाते हैं जब उनमें प्रेम हो। प्रेम से उपजा रिश्ता जब एक छत के नीचे साथ रहकर संबंधों का निर्वहन करता है तो उसके साथ दायित्व, अपेक्षाएं और अंतर्विरोध भी जन्म लेते हैं।

कई बार ये अंतर्विरोध उस सीमा तक बढ़ जाते हैं कि अलग होने की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। तब एक-दूसरे के ऊपर आरोप-प्रत्यारोप मर्यादा की हर सीमा को भंग कर देते हैं। अदालतों में ऐसे भी कई मामले हैं जहां सहजीवन रिश्तों की समाप्ति के बाद पुरुष साथी पर दुष्कर्म के आरोप लगाए गए हैं, जो कि 'व्यक्तिगत स्वयत्तता' का ढिंढोरा पीटने वाले युवाओं को कहीं का नहीं छोड़ते। यह सोचना मूर्खता होगी कि चूंकि विवाह में दंपती की कुछ प्रतिबद्धताएं होती हैं, इसलिए इस बंधन से मुक्ति का सहज एवं सरल मार्ग सहजीवन है। क्या सहजीवन में रहने वाले युगल भावहीन, दायित्वहीन और पूर्णतः स्वच्छंद प्रवृत्ति के होते हैं? यह प्रश्न इसलिए कि अगर यह सत्य होता तो सहजीवन में रहने वाले युगल ठीक उसी तरह तमाम अदालतों के चक्कर नहीं लगा रहे होते, जैसे वैधानिक रूप से संबंध में बंधे दंपती।

यह समझना जरूरी है कि चाहे वैवाहिक संबंध हों अथवा सहजीवन, इसमें रहने वाले युगल सामान्य मनुष्य ही होते हैं। ऐसा नहीं है कि सहजीवन में प्रवेश करते ही युगल मशीनी मानव के रूप में परिवर्तित हो जाते हों। उनमें भी वही तनाव, अपेक्षाएं और मनमुटाव उत्पन्न होते हैं जैसा कि विवाहित दंपती में। फिर ऐसा क्या है कि सहजीवन में रहने वाले युवाओं की बाढ़ सी आ गई है। इसका स्पष्ट उत्तर है स्वयं को तथाकथित रूप से आधुनिक सिद्ध करने का प्रयास। छद्म आधुनिकता आरंभ में स्वयं को मुक्त एवं भीड़ से अलग सिद्ध करने का प्रथम पायदान दिखाई देती है, परंतु अंततोगत्वा यह सहजीवन में रहने वाले जोड़ों को इस तरह फंसा लेती है, जहां से बाहर निकलने का कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। अगर ऐसा नहीं होता तो अदालतों में सहजीवन में रहने वाले जोड़ों के मामलों की एक लंबी फेहरिस्त नहीं होती।

ऐसा क्या है कि सहजीवन में रहने वाले युवाओं की बाढ़ सी आ गई है। इसका स्पष्ट उत्तर है स्वयं को तथाकथित रूप से आधुनिक सिद्ध करने का प्रयास। छद्म आधुनिकता आरंभ में स्वयं को मुक्त एवं भीड़ से अलग सिद्ध करने का प्रथम पायदान दिखाई देती है, परंतु अंततोगत्वा यह सहजीवन में रहने वाले जोड़ों को इस तरह फंसा लेती है, जहां से बाहर निकलने का कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। अगर ऐसा नहीं होता तो अदालतों में सहजीवन में रहने वाले जोड़ों के मामलों की एक लंबी श्रृंखला नहीं होती

नवंबर २०२१ में मद्रास हाई कोर्ट में आर कलैसेल्वी बनाम वी जोसेफ बेबी का मामला सामने आया था। तब जस्टिस एस. वैद्यनाथन और विजय कुमार की खंडपीठ ने कहा था कि 'लंबे समय तक साथ रहने से पक्षकारों को पारिवारिक न्यायालय के समक्ष वैवाहिक विवाद उठाने का कोई कानूनी अधिकार तब तक नहीं मिल सकता, जब तक कि उनका विवाह कानून के अनुसार न हुआ हो।'

सहजीवन में रहते हुए न्यायालय से विवाह संबंधी अधिकारों की अपील करना हास्यास्पद अवश्य प्रतीत होता है, परंतु गंभीरता से विचार किया जाए तो ऐसे युगल स्वयं अपनी ही स्थिति को लेकर भ्रमित हैं। एक ओर वे विवाह की परंपरागत पद्धति को इसलिए नकार रहे हैं कि उनके लिए विवाह पुरातन और घिसी-पिटी परंपरा है, वहीं दूसरी ओर वे पश्चिम से आयातित सहजीवन की परंपरा में उन्हीं अपेक्षाओं और दायित्व की दुहाई देते दिखाई देते हैं, जो कि विवाह का आधार हैं।

सहजीवन की ओर प्रवृत्त होने वाले युवाओं में से कुछ ऐसे भी हैं, जिन्होंने अपनी किशोरावस्था में अपने अभिभावकों के अलगाव का दंश झेला है, परंतु यह समझना आवश्यक हो जाता है कि कुछ वैवाहिक संबंधों की असफलता विवाह संस्था की असफलता नहीं है और न ही सहजीवन की स्वायत्तता उसकी सफलता का आश्वासन। एक महत्वपूर्ण तथ्य, जो सर्वाधिक विचारणीय है वह यह कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा स्वायत्तता की पैरवी तब तक उचित है, जब तक प्रश्न स्वयं का हो। इस सत्य को कदापि भुलाया नहीं जा सकता कि सहजीवन से उत्पन्न संतानें असुरक्षित भविष्य के साथ ही साथ समाज में असामान्य चुनौतियों का सामना करने के लिए भी विवश होती हैं।■

(लेखिका समाज शास्त्र की प्रोफेसर हैं)

पिता का आशीर्वाद

✍ डॉ. विजय पाठक

लोक भारती

कर्नाटक में बेंगलुरु के एक व्यापारी से संबंधित यह सत्य घटना है। जब मृत्यु का समय सन्निकट आया तो पिता ने अपने एकमात्र पुत्र धर्मपाल को बुलाकर कहा कि बेटा, मेरे पास धन-संपत्ति नहीं है कि मैं तुम्हें विरासत में दूं। पर मैंने जीवनभर सच्चाई और प्रामाणिकता से काम किया है। तो मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं कि तुम जीवन में बहुत सुखी रहोगे और धूल को भी हाथ लगाओगे तो वह सोना बन जायेगी।

बेटे ने सिर झुकाकर पिताजी के पैर छुए। पिता ने सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और संतोष से अपने प्राण त्याग कर दिए। अब घर का खर्च बेटे धनपाल को संभालना था। उसने एक छोटी सी ठेला गाड़ी पर अपना व्यापार शुरू किया। धीरे-धीरे व्यापार बढ़ने लगा। उसने एक छोटी-सी दुकान ले ली। व्यापार और बढ़ा।

अब नगर के संपन्न लोगों में उसकी गिनती होने लगी। उसको विश्वास था कि यह सब मेरे पिता के आशीर्वाद का ही फल है, क्योंकि उन्होंने जीवन में दुख उठाया, पर कभी धैर्य नहीं छोड़ा, श्रद्धा नहीं छोड़ी, प्रामाणिकता नहीं छोड़ी इसलिए उनकी वाणी में बल था। और उनके आशीर्वाद फलीभूत हुए। और मैं सुखी हुआ। उसके मुंह से बार-बार यह बात निकलती थी।

एक दिन एक मित्र ने पूछा- तुम्हारे पिता में इतना बल था, तो वह स्वयं संपन्न क्यों नहीं हुए? सुखी क्यों नहीं हुए? धर्मपाल ने कहा- मैं पिता की ताकत की बात नहीं कर रहा हूं। मैं उनके आशीर्वाद की ताकत की बात कर रहा हूं। इस प्रकार वह बार-बार अपने पिता के आशीर्वाद की बात करता, तो लोगों ने उसका नाम ही रख दिया बाप का आशीर्वाद!

धर्मपाल को इससे बुरा नहीं लगता, वह कहता कि मैं अपने पिता के आशीर्वाद के काबिल निकलूं, यही चाहता हूं। ऐसा करते हुए कई साल बीत गए। वह विदेशों में व्यापार करने लगा। जहां भी व्यापार करता, उससे बहुत लाभ होता। एक बार उसके मन में आया कि मुझे लाभ ही लाभ होता है, तो मैं एक बार नुकसान का अनुभव करूं। तो उसने अपने एक मित्र से पूछा- ऐसा व्यापार बताओ कि जिसमें मुझे नुकसान हो। मित्र को लगा कि इसको अपनी सफलता का और पैसों का घमंड आ गया है। इसका घमंड दूर करने के लिए इसको ऐसा धंधा बताऊं कि इसको नुकसान ही नुकसान हो। तो उसने धर्मपाल को बताया कि तुम भारत में लौंग खरीदो और जहाज में भरकर अफ्रीका के जंजीबार में जाकर बेचो। धर्मपाल को यह बात ठीक लगी।

लेकिन जंजीबार तो लौंग का देश है। वहां से लौंग भारत में लाते हैं और यहां १०-१२ गुना भाव पर बेचते हैं। ऐसे में यदि भारत में लौंग खरीद करके जंजीबार में बेचें, तो साफ नुकसान सामने दिख रहा है। परंतु धर्मपाल ने तय किया कि मैं भारत में लौंग खरीद कर, जंजीबार खुद लेकर जाऊंगा। देखूं कि पिता के आशीर्वाद कितना साथ देते हैं। नुकसान का अनुभव लेने के लिए उसने भारत में लौंग खरीदे और जहाज में भरकर खुद उनके साथ जंजीबार द्वीप पहुंचा। जंजीबार में सुल्तान का राज्य था। धर्मपाल जहाज से उतरकर के और लंबे रेतीले रास्ते पर जा रहा था। वहां के व्यापारियों से मिलने के लिए। तभी उसे सामने से सुल्तान जैसा व्यक्ति पैदल सिपाहियों के साथ आता हुआ दिखाई दिया। उसने किसी से पूछा कि यह कौन है? उन्होंने कहा- यह सुल्तान हैं। सुल्तान ने धर्मपाल को सामने देखकर उसका परिचय पूछा। उसने कहा- मैं भारत के गुजरात के खंभात का व्यापारी हूं और यहां पर व्यापार करने आया हूं।

सुल्तान ने उसको व्यापारी समझ कर उसका

आदर किया और उससे बात करने लगा। धर्मपाल ने देखा कि सुल्तान के साथ सैकड़ों सिपाही हैं। परंतु उनके हाथ में तलवार, बंदूक आदि कुछ भी न होकर बड़ी-बड़ी छलनियां है। उसको आश्चर्य हुआ। उसने विनम्रतापूर्वक सुल्तान से पूछा- आपके सैनिक इतनी छलनी लेकर के क्यों जा रहे है ? सुल्तान ने हंसकर कहा- बात यह है कि आज सवेरे मैं समुद्र तट पर घूमने आया था, तब मेरी उंगली में से एक अंगूठी यहां कहीं निकल कर गिर गई। अब रेत में अंगूठी कहां गिरी, पता नहीं। तो इसलिए मैं इन सैनिकों को साथ लेकर आया हूं। यह रेत छानकर मेरी अंगूठी उसमें से तलाश करेंगे।

धर्मपाल ने कहा- अंगूठी बहुत महंगी होगी। सुल्तान ने कहा- नहीं! उससे बहुत अधिक कीमत वाली अनगिनत अंगूठी मेरे पास हैं। पर वह अंगूठी एक फकीर का आशीर्वाद है। मैं मानता हूं कि मेरी सल्तनत इतनी मजबूत और सुखी उस फकीर के आशीर्वाद से है। इसलिए मेरे मन में उस अंगूठी का मूल्य सल्तनत से भी ज्यादा है। इतना कह कर सुल्तान ने फिर पूछा- बोलो सेठ, इस बार आप क्या माल ले कर आये हो। धर्मपाल ने उत्तर दिया- लौंग! सुल्तान के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। यह तो लौंग का ही देश है सेठ। यहां लौंग बेचने आये हो? किसने आपको ऐसी सलाह दी। जरूर वह कोई आपका दुश्मन होगा। यहां तो एक पैसे में मुट्ठी भर लौंग मिलते हैं। यहां लौंग को कौन खरीदेगा? और तुम क्या कमाओगे? धर्मपाल ने कहा- मुझे यही देखना है कि यहां भी मुनाफा होता है या नहीं। मेरे पिता के आशीर्वाद से आज तक मैंने जो धंधा किया, उसमें मुनाफा ही मुनाफा हुआ। तो अब मैं देखना चाहता हूं कि उनके आशीर्वाद यहां भी फलते हैं या नहीं। सुल्तान ने पूछा- पिता का आशीर्वाद? इसका क्या मतलब? धर्मपाल ने कहा- मेरे पिता सारे जीवन ईमानदारी और प्रामाणिकता से काम करते रहे। परंतु धन नहीं कमा सके। उन्होंने मरते समय मुझे भगवान का नाम लेकर मेरे सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिए थे कि तेरे हाथ में धूल भी सोना बन जाएगी। ऐसा बोलते-बोलते धर्मपाल नीचे झुका और जमीन की रेत से एक मुट्ठी भरी और सम्राट सुल्तान के सामने मुट्ठी खोलकर उंगलियों के बीच में से रेत नीचे गिराई। ऐसा करते ही धर्मपाल और सुल्तान दोनों के आश्चर्य का पार नहीं रहा। उसके हाथ में एक हीरेजड़ित अंगूठी थी। यह सुल्तान की गुम हुई वही अंगूठी थी। अंगूठी देखकर सुल्तान बहुत प्रसन्न हो गया। बोला- वाह, खुदा आप की करामात का पार नहीं। आप पिता के आशीर्वाद को सच्चा करते हो। धर्मपाल ने कहा- फकीर के आशीर्वाद को भी वही परमात्मा सच्चा करता है। सुल्तान और खुश हुआ। धर्मपाल को गले लगाया और कहा- मांग सेठ। आज तू जो मांगेगा, मैं दूंगा। धर्मपाल ने कहा- आप १०० वर्ष तक जीवित रहो और प्रजा का अच्छी तरह से पालन करो। प्रजा सुखी रहे। इसके अलावा मुझे कुछ नहीं चाहिए। सुल्तान और अधिक प्रसन्न हो गया। उसने कहा- सेठ, तुम्हारा सारा माल में आज खरीदता हूं और तुम्हें मुंहमांगी कीमत दूंगा। इस कहानी से शिक्षा मिलती है कि पिता का आशीर्वाद हों, तो दुनिया की कोई ताकत कहीं भी तुम्हें पराजित नहीं होने देगी। पिता और माता की सेवा का फल निश्चित रूप से मिलता है। आशीर्वाद जैसी और कोई संपत्ति नहीं। बालक के मन को जानने वाली मां और भविष्य को संवारने वाले पिता, यही दुनिया के दो महान ज्योतिषी है। अपने बुजुर्गों का सम्मान करें। यही भगवान की सबसे बड़ी सेवा है।■

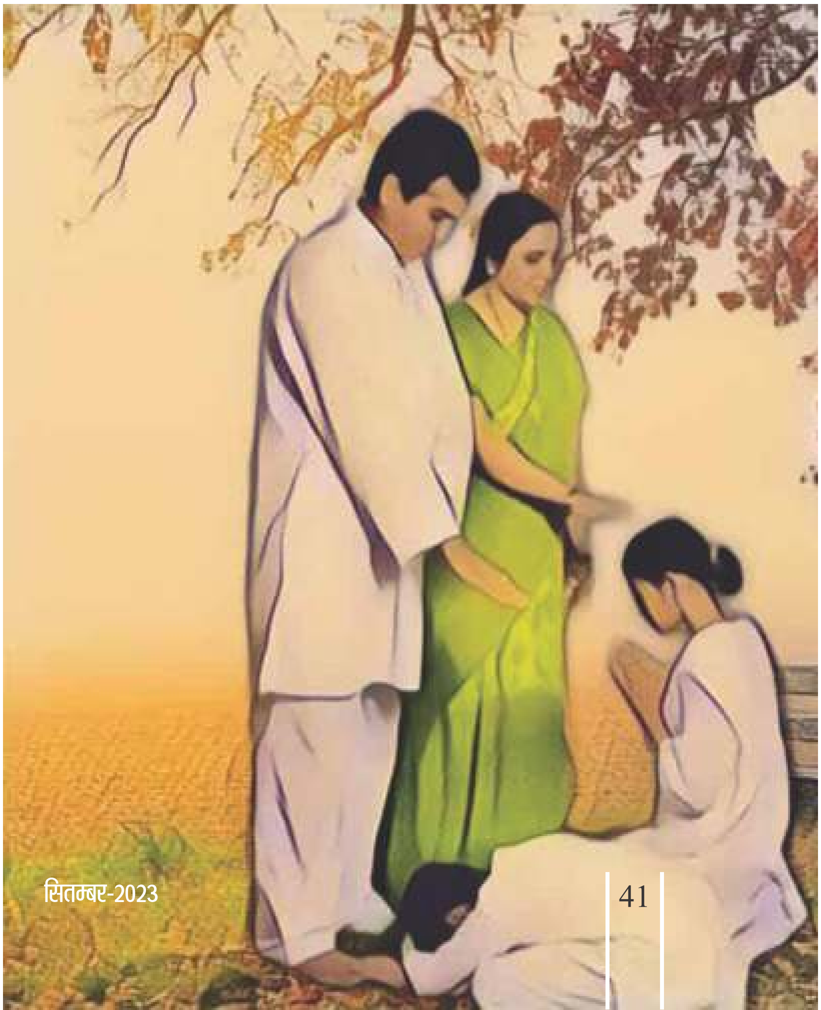

लिवर में समस्या के संकेत, ऐसे रहिए सचेत

✍ लोक सम्मान डेस्क

वर्ल्ड हेपेटाइटिस डे मनाया जा रहा है, यह लिवर की सूजन से जुड़ी बीमारी है, डॉक्टर ने कुछ लक्षण बताए हैं, जो इशारा करते हैं कि आपके लिवर में फैट भर गया है, समझें और बचाव करें 28 जुलाई को वर्ल्ड हेपेटाइटिस डे (World Hepatitis Day) मनाया है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य लिवर की इस बीमारी के बारे में लोगों को को जागरूक करना है। हेपेटाइटिस लिवर के सूजन की बीमारी है, जोकि हेपेटाइटिस वायरस के कारण होती है। यह वायरस सीधे रूप से लिवर को डैमेज करने का काम करता है।

फैटी लिवर की समस्या जिसे स्टीटोसिस भी कहा जाता है, एक ऐसी स्थिति है जो लिवर कोशिकाओं में अतिरिक्त फैट के जमा होने के कारण होती है। शरीर में कुछ फैट्स सामान्य होते हैं, लेकिन अगर वो बढ़ जाए तो नुक्सान पंहुचा सकते है और कई स्वास्थ्य जटिलताएं पैदा कर सकती है। फैटी लिवर के कारण शरीर को छोटी मात्रा में नुकसान नहीं होता, लेकिन अगर यह हमारे लिवर के वजन के 5% या 10% तक पहुंच जाए तो चिंता का विषय बन जाता है।

पटियाला स्थित मणिपाल अस्पताल के मेडिकल गॅस्ट्रोएन्टेरोलॉजी विभाग के सीनियर कंसलटेंट डॉक्टर गुरबख्शीश सिंह सिद्धू के अनुसार, चूंकि लिवर की पाचन में एक अहम भूमिका होती है, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि पाचन संबंधी समस्याएं गंभीर फैटी लिवर बीमारी के शुरुआती संकेत हो सकती हैं। चलिए जानते हैं कि फैटी लिवर होने पर आपको क्या-क्या लक्षण महसूस हो सकते हैं।

पेट में ऊपर की तरह दर्द होना

गंभीर फैटी लिवर बीमारी से जुड़े शुरूआती लक्षणों में से एक है लगातार पेट में दर्द रहना है। लिवर में बहुत ज्यादा फैट जमा होने से इसमें सूजन और लिवर बड़ा हो जाता है। इससे आसपास के अंगों और पेट की गुहा पर दबाव पड़ता है। इससे असहजता हो सकती है और पेट का दाहिना ऊपरी हिस्सा हमेशा भरा हुआ महसूस होता है। अगर आपको अक्सर पेट में दर्द महसूस होता है, तो तुरंत अपने डॉक्टर से मिलें।

अपच की समस्या

लिवर शरीर में विभिन्न पदार्थों को प्रोसेस और डीटोक्सीफ़ाई करने में अहम भूमिका निभाता है,

जिसमें पाचन तंत्र के माध्यम से अवशोषित पदार्थ भी शामिल हैं। जब लिवर पर वसा की मात्रा अधिक हो जाती है तो उसकी कार्य क्षमता में कमी आ जाती है, जिससे शरीर में विषाक्त पदार्थ जमा होने लगते हैं। इस जमाव के कारण मतली और उल्टी होती है क्योंकि शरीर हानिकारक पदार्थों से छुटकारा पाने का प्रयास करता है। लगातार उल्टी और मतली को नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि ये गंभीर फैटी लिवर बीमारी का संकेत हो सकते हैं।

हमेशा आलस आना

अगर आपको हमेशा आलस या थकान रहती है, तो इसका मतलब है कि आपका लिवर सही तरह काम नहीं कर रहा है। यह फैटी लिवर डिजीज का लक्षण हो सकता है। फैटी लिवर रोग इंसुलिन रेसिस्टेंट और अन्य चयापचय गड़बड़ी से जुड़ा हो सकता है, जिससे आपको थकान और सुस्ती महसूस हो सकती है। ऐसा होने पर डॉक्टर से सही लेना जरूरी है।

लिवर एंजाइमों का बढ़ना

लिवर एंजाइमों का अचानक से बढ़ना, जैसे कि एलानिन एमिनोट्रांसफेरेज़ (एएलटी) और एस्पार्टेट एमिनोट्रांसफेरेज़ (एएसटी), फैटी लिवर डिजीज वाले व्यक्तियों में एक आम समस्या है। फैटी लिवर रोगों का जल्द पता लगाना और इलाज करवाना जरूरी है। इससे लिवर को डैमेज होने से बचाया जा सकता है। इन लक्षणों या अन्य पाचन संबंधी समस्याओं के लिए किसी विशेषज्ञ की सलाह जरूरी होती है। इसीलिए यह महत्वपूर्ण है कि आप डॉक्टर से सलाह लें और पूरी तरह से अपनी जांच करवाएं। ■

यह लेख केवल सामान्य जानकारी के लिए है।

सशक्त नारी
समृद्ध प्रदेश

1.50 लाख से अधिक महिलाओं को सरकारी नौकरी

- बालिकाओं को स्नातक स्तर तक **निःशुल्क शिक्षा**
- स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत **2.61 करोड़ शौचालयों (इज्जतघर) का निर्माण** 10 करोड़ लोग लाभान्वित
- बदायूं, लखनऊ एवं गोरखपुर में **महिला पीएसी बटालियन की स्थापना**
- महिलाओं के विरुद्ध अपराधों में **487 अभियुक्तों को आजीवन कारावास, 4,092 अभियुक्तों को कारावास**
- पॉक्सो अधिनियम एवं महिला अपराधों के मामलों में सजा दिलाने में **उत्तर प्रदेश देश में प्रथम**
- प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के अंतर्गत **54.44 लाख से अधिक माताएं लाभान्वित**
- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के अंतर्गत **1.75 करोड़ परिवार लाभान्वित**
- **22,500** महिला पुलिसकर्मियों की नियुक्ति
- मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना के अंतर्गत **16 लाख से अधिक बेटियां लाभान्वित**
- **58,000** महिलाओं की बीसी सखी के रूप में नियुक्ति
- **98.28 लाख** से अधिक निराश्रित महिला, वृद्धजन तथा दिव्यांगजन को 1,000 रुपये मासिक पेंशन
- मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना में **3.10 लाख से अधिक जोड़ों का विवाह,** अनुदान राशि ₹35,000 से बढ़कर ₹51,000 हुई
- **2 लाख** से अधिक महिलाएं पीएम स्वनिधि योजना से लाभान्वित

महिलाएं बनीं विकास में भागीदार - डबल इंजन की सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

डाक प्रेषण तिथि–10 प्रतिमाह
पोस्ट पंजीकरण संख्या – जी.पी.ओ.लख./एन.पी.–39/2023–25 पंजीयन संख्या – RNI No. UPHIN/2007/22341

लोक भारती के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक श्री प्रेमशंकर शुक्ल ने नूतन ऑफसेट मुद्रक केन्द्र, 'संस्कृति केन्द्र, 'संस्कृति भवन' 58, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से छपवाकर लोक भारती, 1–चोपड़ अस्पताल परिसर, नवल किशोर रोड, हजरतगंज, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक -शशि प्रकाश राय